उत्थान

सामाजिक परिवर्तन का सार्थक प्रयास

अंक : द्वितीय

वर्ष : 2019

प्रधान संपादक

डॉ. सत्यपालसिंह मीना

संपादक

दिनेश मीना

देवेन्द्र सिंह

सम्पादन सहयोग

हरिमोहनजी

अजय रावत

मनीराम मीना

SBGBT

सोच बदलो गाँव बदलो टीम

एवं इको नीड्स फाउंडेशन

विषय-सूची

प्रस्तावना
संपादकीय
संदेश

1. सोच बदलो गांव बदलो अभियान–एक नज़र 11
2. गाँव में बदलाव की शुरुआत कैसे करें ? 20
3. उत्थान की कहानी 22
4. मेरे सपनों की मातृभूमि 25
5. गहराता जल संकट, संभावित उपाय व हमारी भूमिका 31
6. वर्तमान में जारी महत्वपूर्ण सरकारी योजनाओं की संक्षिप्त जानकारी 38
7. ग्रामीण समस्याओं के निराकरण की आशा की कुंजी–"ग्राम विकास समिति" 50
8. बदलाव की कहानी – लोगों की जुबानी
    1. गुढ़ा गाँव, धौलपुर 54
    2. कांकरेट गाँव, धौलपुर 56
    3. लीलोठी–कुरिगमा गाँव, धौलपुर 58
    4. कसारा गाँव, करौली 60
    5. परीता गाँव, करौली 62
    6. मीना दाँत का पुरा गाँव, करौली 66
    7. पद्मपुरा (हरियापुरा) गाँव, धौलपुर 68
    8. दाँतासूती गाँव, सवाई माधोपुर 70
    9. हुलासपुरा गाँव, धौलपुर 72
    10. टोड़ा जयसिंह पुरा गाँव, अलवर 74
    11. मासलपुर क्षेत्र, करौली 76
    12. भुढ़ा गाँव, करौली 78
    13. चांदेरा गाँव, दौसा 80
    14. रतियापुरा गाँव, करौली 81
    15. हरसाना गाँव, अलवर 83
    16. कीलपुर खेड़ा गाँव, अलवर 84
    17. मुरलीपुरा गाँव, करौली 85
    18. सिकरौदा गाँव, करौली 86
    19. भाड़ोती गाँव, सवाई माधोपुर 87
    20. खुर्द गाँव, अलवर 89
    21. पवैनी गाँव, धौलपुर 91
    22. मई गाँव, धौलपुर 92

प्रस्तावना

प्रिय पाठकों,

"उत्थान" वार्षिक पत्रिका का यह दूसरा अंक आपके समक्ष प्रस्तुत करते हुए सुखद आत्मानुभूति हो रही है। पहले अंक के प्रकाशन के बाद आप सभी पाठकों से मिली सकारात्मक प्रतिक्रियाओं और अपार स्नेह ने हमें अभिभूत कर दिया है। जैसा कि आप सभी जानते हैं कि यह पत्रिका ग्रामीण भारत के विकास को समर्पित है। अतः हमारा सदैव यह प्रयास रहेगा कि इस पत्रिका के माध्यम से भारत सरकार और राज्य सरकारों की तमाम महत्वपूर्ण योजनाओं और सोच बदलो गांव बदलो अभियान से जुड़ी हर एक खबर आप तक पहुंचाई जा सके। साथ ही साथ गांव–गांव में युवाओं द्वारा गाँव के विकास के लिए की जा रही सकारात्मक व रचनात्मक पहलों को भी आप तक पहुंचाया जा सके ताकि दूसरे गांव के युवाओं को इससे प्रेरणा मिल सके।

भारत की आत्मा गांवों में बसती है लेकिन, आज भी हमारे ग्रामीण भारत में विकास की गति अत्यन्त धीमी है। आज भी हमारे गांव बुनियादी सुविधाओं से कोसों दूर हैं। केंद्र व राज्य सरकारें हर वर्ष ग्रामीण विकास के लिए करोड़ों के बजट प्रस्ताव पास करती हैं और विभिन्न योजनाएं लेकर आती हैं। लेकिन, ग्रामीण क्षेत्रों में जागरूकता के अभाव के चलते इसका समुचित लाभ उन तक नहीं पहुंच पाता है।

अतः अपेक्षित परिणाम हासिल करने के लिए आज हम सबको मिलकर प्रयास करने की जरूरत है, तभी सच्चे अर्थों में हम ग्रामीण भारत के विकास का सपना हासिल कर सकते हैं। आज जरूरत है, ग्रामीणों में विकास की जन चेतना पैदा करने की, उनमें उनके अधिकारों के प्रति जागरुकता लाने की, विभिन्न सरकारी योजनाओं को उनके असली हकदारों तक पहुंचाने की और सरकारी तंत्र के प्रयासों को ताकत देने की। तभी धरातल पर अपेक्षित बदलाव देखने को मिल सकते हैं, हमारे गांव भी विकास की मुख्यधारा से जुड़ सकते हैं और हमारा भारत भी सही मायनों में विकसित राष्ट्र के सपने को साकार कर सकता है।

"सोच बदलो – गांव बदलो" अभियान के अंतर्गत सोच बदलो गांव बदलो यात्रा के माध्यम से पिछले 2 वर्षों में लोगों में विकास की जन चेतना पैदा करने व बदलाव के लिए युवा पीढ़ी को प्रेरित करने की सफल कोशिश की गयी है । लोगों तक विभिन्न सरकारी योजनाओं की जानकारी सरल व आम भाषा में पहुंचाई गई है। जनसहभागिता से विकास में भागीदार बनने के लिए उन्हें प्रेरित करने की कोशिश की गयी है । ग्रामीणों से सीधे मुखातिब होकर उनकी परेशानियों को समझकर, ग्रामीण समस्याओं के समाधान खोजने की कोशिश की गई है। "ग्रीन विलेज–क्लीन विलेज" कार्यक्रम के माध्यम से ग्रामीणों को अपने गांव व आसपास के परिवेश में स्वच्छता बनाए रखने, खुले में शौच मुक्त गांव बनाने व पर्यावरण संरक्षण/संवर्धन हेतु वृक्षारोपण करने की प्रेरणा दी गयी है । "आओ पढ़ें – आगे बढ़े" कार्यक्रम के माध्यम से ग्रामीण बच्चों को अच्छी शिक्षा व

संस्कारों के लिए प्रेरित किया गया है। ग्रामीण व पिछड़े तबके के गरीब बच्चों को अच्छी शिक्षा व अवसर उपलब्ध कराने के उद्देश्य से स्तरीय व आधुनिक सुविधाओं के साथ "उत्थान भवन" की स्थापना की गई है ।

इस अंक में "सोच बदलो गांव बदलो" अभियान की वर्षभर की गतिविधियों के साथ–साथ, ग्राम विकास समिति के पंजीयन की प्रक्रिया, गांव–गांव में युवा प्रयासों की संक्षिप्त कहानियां, कुछ महत्वपूर्ण सरकारी योजनाओं की संक्षिप्त जानकारी और वर्तमान परिदृश्य में गहराते जल संकट के संभावित समाधान और हमारी भूमिका जैसे कई महत्वपूर्ण आलेख आप पाठकों तक बेहद सरल व आम भाषा में पहुंचाने की कोशिश की गयी है।

सादर

संपादक मण्डल

मिल के चलो

मिल के चलो, मिल के चलो, मिल के चलो
चलो भाई, मिल के चलो, मिल के चलो, मिल के चलो
ये वक्त की आवाज़ है मिल के चलो
ये जिन्दगी का राज है मिल के चलो
मिल के चलो...

जैसे सुर से सुर मिले हों राग के
राग के, राग के
जैसे शोले मिल के बढ़ें आग के
आग के, आग के
जिस तरह चिराग से जले चिराग
ऐसे चलो भेद मेरा त्याग के
मिल के चलो...

संपादकीय

"सोच बदलो–गांव बदलो संस्था" का गठन ग्रामीण परिवेश के जागरूक और "पे–बैक टू सोसायटी" के सिद्धांत पर विश्वास रखने वाले युवाओं ने ग्रामीण लोगों के जीवन में आधारभूत परिवर्तन लाने के उद्देश्य किया है। संस्था का प्राथमिक उद्देश्य लोगों में जन जागरूकता और सामाजिक जन चेतना पैदा करना, जल संरक्षण व पर्यावरण संवर्धन के लिए काम करना, बच्चों में शिक्षा के प्रति जागरूकता पैदा करना, प्रतिभाशाली छात्रों को स्वस्थ प्रतिस्पर्धा पैदा करना, गरीब प्रतिभाशाली छात्रों को आर्थिक सहयोग प्रदान करना, महिलाओं विशेषरूप से बालिकाओं के सशक्तिकरण हेतु प्रयास करना, गरीब और जरूरतमंद युवाओं का "उत्थान कोचिंग संस्थान" के माध्यम से मार्गदर्शन करना और स्वरोजगार हेतु कौशल विकास करना, विभिन्न सरकारी योजनाओं की जानकारी लोगों तक पहुँचाना, जागरूकता रैलियों के माध्यम से नशाखोरी से होने वाले दुष्परिणामों से लोगों को अवगत कराना, जरूरतमंद लोगों को रक्तदान के माध्यम से रक्त उपलब्ध कराना, गाँव विकास में ग्रामीणों की सक्रिय भागीदारी सुनिश्चित करना, परस्पर सहयोग, सामंजस्य और जन सहभागिता के माध्यम से गाँव की समस्याओं का समाधान गाँव स्तर पर निकालना। इन प्रयासों के माध्यम से संस्था ग्रामीण लोगों के जीवन स्तर को ऊपर उठाने और उन्हें विकास की मुख्यधारा में जोड़ने में महत्वपूर्ण योगदान दे रही है।

सोच बदलो गांव बदलो संस्था के कार्यकर्ता जमीनी स्तर पर सकारात्मक और रचनात्मक कार्यों में संलग्न हैं। टीम के सक्रिय कार्यकर्ताओं द्वारा अपने–अपने स्तर पर गांव में विभिन्न कार्यों को अंजाम दिया जा रहा है– जैसे गांव की समस्याओं के विषय में मंथन करना, पेयजल की समस्या का समाधान करना, गांव के रास्तों से अतिक्रमण हटाना, वृक्षारोपण करना, जल संरक्षण के लिए कार्य करना, सार्वजनिक स्थानों की सफाई और मरम्मत का कार्य करना, गांव के आम रास्तों पर लाइट की व्यवस्था करना, विद्यालय में जमीनों का समतलीकरण और चारदीवारी का कार्य करना, विद्यालय में शौचालयों का निर्माण करना, कंप्यूटर की व्यवस्था करना, विशेष विषयों के लिए शिक्षकों की व्यवस्था करना, गांव में उत्थान कोचिंग संस्थान की शुरुआत करना, उत्थान पुस्तकालय संचालित करना, प्रतिभाशाली बच्चों को सम्मानित करना, बच्चों और युवाओं का मार्गदर्शन करना, ग्राम पंचायत द्वारा किए जाने वाले कार्यों के विषय में लोगों को जागरूक करना, सरकार की विभिन्न योजनाओं के विषय में ग्रामीणों को सजग करना और उनका लाभ लोगों तक पहुंचाने में सहायता करना, प्रशासन और ग्रामीण लोगों के मध्य सेतु का कार्य करना इत्यादि। इसके अतिरिक्त संस्था द्वारा सरमथुरा में उत्थान भवन का निर्माण कर उत्थान कोचिंग संस्थान और कौशल विकास केंद्र का संचालन सफलतापूर्वक किया जा रहा है। सोच बदलो गांव बदलो संस्था द्वारा उपरोक्त कार्यों का

संचालन संस्थागत रूप से विभिन्न कार्यक्रमों के माध्यम से किया जा रहा है; जिनका विवरण निम्न प्रकार है –

"सोच बदलो–गांव बदलो यात्रा"
"क्लीन विलेज–ग्रीन विलेज"
"आओ पढ़ें–आगे बढ़े"
"शिक्षा पाओ–ज्ञान बढाओ प्रतियोगिता'
"उत्थान कोचिंग संस्थान"
"रक्तदान–महादान" (Let's save life)
"महिला सशक्तिकरण"
"आधुनिक खेती–हमारा प्रयास"

उपरोक्त कार्यक्रमों का संचालन संस्था के स्वयंसेवी कार्यकर्ताओं द्वारा किया जाता है। कार्यक्रमों के सफलतापूर्वक संचालन के लिए प्रत्येक कार्यक्रम हेतु कोऑर्डिनेटरों और सब–कोऑर्डिनेटरों की नियुक्ति की गई है; सभी कोऑर्डिनेटर टीम के चीफ कोऑर्डिनेटर को रिपोर्ट करते हैं। यहां पर यह उल्लेख करना उचित होगा की टीम के किसी भी कार्यकर्ता को कोई वेतन या पारिश्रमिक नहीं दिया जाता है। सभी कार्यकर्ता बिना किसी पारिश्रमिक के स्वेच्छा से संस्था के लिए कार्य करते हैं और यही कारण है कि संस्था द्वारा बहुत कम बजट में भी महत्वपूर्ण कार्यक्रमों का संचालन सफलतापूर्वक किया जा रहा है।

डॉ. सत्यपाल सिंह मीना
संयुक्त आयकर आयुक्त
SBGBT

ले मशालें चल पड़े हैं लोग मेरे गांव के
अब अंधेरा जीत लेंगे लोग मेरे गांव के

संदेश

नरेन्द्र सिंह तोमर
NARENDRA SINGH TOMAR

कृषि एवं किसान कल्याण,
ग्रामीण विकास तथा पंचायती राज मंत्री
भारत सरकार
कृषि भवन, नई दिल्ली

MINISTER OF AGRICULTURE & FARMERS' WELFARE,
RURAL DEVELOPMENT AND PANCHAYATI RAJ
GOVERNMENT OF INDIA
KRISHI BHAWAN, NEW DELHI

संदेश

मुझे यह जानकर हर्ष है कि **सोच बदलो गांव बदलो टीम एवं इको नीड्स फाउंडेशन** द्वारा संयुक्त रूप से सामाजिक परिवर्तन के सार्थक प्रयास की अवधारणा के साथ वार्षिक पत्रिका **"उत्थान"** का दूसरा अंक प्रकाशित किया जा रहा है।

प्रसन्नता की बात है कि ग्रामीण पृष्ठभूमि के समग्र परिवर्तन के अभियान के साथ वर्ष 2018 में प्रकाशित इस पत्रिका के प्रवेशांक के माध्यम से देश के ग्रामीण अंचलों में विकास की जन-चेतना जागृत करने, जन-साधारण को उनके अधिकारों के प्रति जागरूक बनाने और रचनात्मक परिवर्तन के लिए युवा पीढ़ी को प्रेरित करने का प्रयास किया गया।

यह कहना सही है कि भारत की आत्मा गांवों में बसती है, क्योंकि आज भी देश की लगभग 70 प्रतिशत जनसंख्या गांवों में ही निवास करती है। हमारा देश सही अर्थों में विकसित राष्ट्र का स्वप्न तभी साकार कर सकता है जब हमारे गांव भी विकास की मुख्य धारा से जुड़े हों और विकास में जन-सहभागिता ज्यादा-से-ज्यादा हो।

यह समस्त देशवासियों और विशेष रूप से ग्रामीण क्षेत्रों के निवासियों के लिए प्रसन्नतादायक है कि माननीय प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी जी के नेतृत्व में वर्तमान सरकार विभिन्न योजनाओं के माध्यम से ग्रामीण क्षेत्रों को शहरों की तर्ज पर विकसित करने के गहन प्रयास कर रही है और इसके सुखद परिणाम लगातार सामने आ रहे हैं।

मुझे अवगत कराया गया है कि **सोच बदलो गांव बदलो टीम एवं इको नीड्स फाउंडेशन** ने पिछले एक वर्ष के दौरान मध्य प्रदेश, राजस्थान और महाराष्ट्र के कई गांवों में जन-सभाएं आयोजित कर विकास की जन-चेतना जागृत करने और विकासात्मक परिवर्तन में भागीदारी के लिए युवा वर्ग को प्रेरित करने का सफल प्रयास किया है जो अत्यंत सराहनीय है।

मुझे विश्वास है कि **"उत्थान"** पत्रिका के द्वितीय अंक में ग्रामीण भारतीय समाज और विशेष रूप से गांव, गरीब, किसान, युवा, मजदूर और महिला वर्ग के सशक्तिकरण तथा ग्रामीण क्षेत्रों में स्थानीय रोजगार संवर्धन के उपायों और अवसरों पर उपयोगी एवं ज्ञानवर्धक जानकारी व लेख प्रकाशित किए जाएंगे, जो लक्षित व्यक्तियों एवं समूहों के लिए लाभदायक होंगे।

मैं सोच बदलो गांव बदलो टीम एवं इको नीड्स फाउंडेशन के उत्कृष्ट प्रयासों की सराहना करते हुए **"उत्थान"** पत्रिका के दूसरे अंक की सफलता हेतु शुभकामनाएं व्यक्त करता हूं।

(नरेन्द्र सिंह तोमर)

Office: 'G' Wing, Ground Floor, Krishi Bhawan, New Delhi- 110001, Tel.: 011-23782373, 23782327 Fax: 011-23385876
Resi.: 3 Krishna Menon Marg, New Delhi-110001, Ph.: 011-23794697 / 98, Fax: 011-23794696

संदेश

D.P. Haokip I.R.S.
Chief Commissioner of Income Tax, Indore

डी.पी. हॉकिप भा.रा.से.
मुख्य आयकर आयुक्त, इन्दौर

भारत सरकार
मुख्य आयकर आयुक्त, इन्दौर
आयकर भवन, व्हाईट चर्च के सामने, इन्दौर -452001
फोन: 0731-2494152

GOVERNMENT OF INDIA
Chief Commissioner of Income Tax, Indore
"Aayakar Bhawan", Opp. White Church, Indore-452001
Ph.: 0731-2494152

इंदौर दिनांक 24-10-2019

संदेश

मुझे यह जानकर अत्यन्त प्रसन्नता हो रही है कि "सोच बदलो गांव बदलो टीम" की वार्षिक पत्रिका "उत्थान के द्वितीय अंक" का प्रकाशन किया जा रहा है । "सोच बदलो गांव बदलो टीम" के रूप में युवा पीढ़ी ग्रामीण विकास के अभूतपूर्व सपनों को पूरा करने की ओर अग्रसर है । आज भी भारत की लगभग दो तिहाई आबादी गांवों में बसती है और गांवों के विकास को सुनिश्चत करने के लिए इस टीम द्वारा जन-जागरूकता और जन-जागरण के माध्यम से सरकार और प्रशासन के प्रयासों को मजबूती दी जा रही है ।

सोच बदलो गांव वाली टीम के सभी कार्यकर्ताओं ने पूर्ण समर्पण, लगन व कर्तव्यनिष्ठा के भाव से गांवों के चहुंमुखी विकास के सपने को साकार किया है, इसके लिए मैं सभी सक्रिय कार्यकर्ताओं, सदस्यों और विशेष रूप से हमारे विभाग के कर्मठ अधिकारी डॉ. सत्यपाल सिंह मीणा (संयुक्त निदेशक, आयकर) को विशेष साधुवाद देना चाहता हूं जिन्होंने अपनी शासकीय ज़िम्मेदारियों को बखूबी निभाने के साथ-साथ इस जन अभियान को जन्म देकर ग्रामीण विकास का मार्ग प्रशस्त किया है ।

मैं सोच बदलो गांव बदलो टीम के सभी कार्यकर्ताओं को अल्प समय में उल्लेखनीय कार्य करने और इस "उत्थान पत्रिका" के प्रकाशन के लिए बधाई देता हूं ।

टीम के उज्ज्वल भविष्य के लिये मेरी बहुत सारी शुभकामनाएँ ।

डी.पी. हॉकिप

(डी.पी. हॉकिप)
मुख्य आयकर आयुक्त, इन्दौर

संदेश

Javed Akhtar

डॉ. सत्यपाल सिंह मीना,

मोहब्बत से भरा एक दिल है जैसे
मेरे बचपन का साथी मेरा गाँव
बहुत मीठा है पानी इस कुएँ का
बड़ी ठंडी है इन पेड़ों की छाँव
घुला संगीत है जैसे हवा में
ज़रा आवाज़ तो सुन चक्कियों की
रहट गाता है भीनी-भीनी लय में
सुरीली बोलियाँ हैं पंछियों की
मैं बरसों बाद लौटा हूँ तो जाना
ये गाँव गीत है सदियों पुराना...

शुभकामनाओं के साथ...

Javed Akhtar

जावेद अख़्तर

702, SAGAR SAMRAT GREENFIELDS, JUHU, MUMBAI-400 049
TEL. : 620 0066 TELEFAX : 620 2602

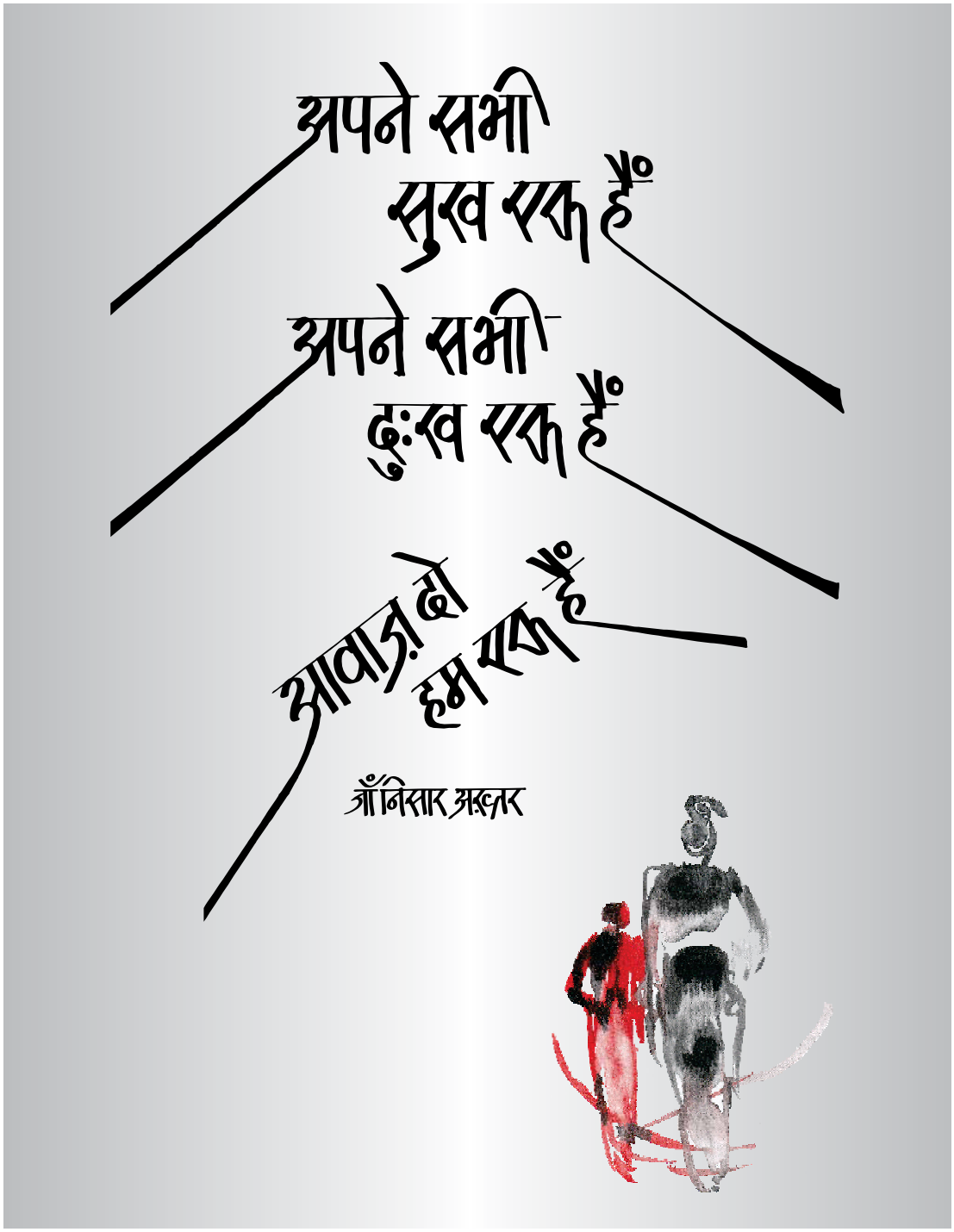
अपने सभी
सुख एक हैं
अपने सभी
दुःख एक हैं
आवाज़ दो
हम एक हैं
जाँनिसार अख़्तर

सोच बदलो गांव बदलो अभियान...

हमारा विजन

- समाज में विकास की जन चेतना व जन जागरूकता पैदा करना ।
- लोगों को उनके अधिकारों के प्रति जागरूक करना ।
- लोगों में आपसी सहयोग, सद्भाव, और भाईचारे को बढाना ।
- ग्रामीण विकास में जनसहभागिता, आमजन व युवाओं की भागीदारी बढ़ाना ।
- समाज में व्याप्त कुरीतियों जैसे– मृत्यु भोज, दहेज प्रथा, बाल–विवाह आदि को खत्म करके नवीन सोच पैदा करना।
- सामाजिक बुराइयों जैसे रास्तों का अतिक्रमण, शराब, जुआ, गुटखा, बीडी और तम्बाकू आदि व्यसनों से होने वाली समस्याओं के प्रति चेतना जगाना तथा इन पर प्रतिबंध लगाना।
- समाज को सामाजिक, नैतिक और मानवीय मूल्यों के प्रति जागरुक करना ।
- बच्चों के शैक्षिक, नैतिक, मानसिक एवं सामाजिक विकास हेतु विभिन्न खेल प्रतियोगिताओं, प्रतिभा सम्मान समारोहों आदि का आयोजन करना। गरीब व जरूरतमंद होनहार बच्चों के लिए कोचिंग संस्थानों, लाइब्रेरियों की स्थापना करना, आदि।
- पर्यावरण व जल संरक्षण व संवर्धन के प्रति लोगों में चेतना पैदा करना ।
- सरकारी योजनाओं का समुचित लाभ उनके लाभार्थियों तक पहुंचाने में मदद करना।
- ग्राम विकास समितियों का गठन कर, ग्रामीण विकास व वित्तीय समावेशन में मदद करना ।

सोच बदलो गांव बदलो अभियान : एक नज़र

"सोच बदलो – गांव बदलो"

राजस्थान के धौलपुर जिले से मई 2017 में शुरू हुआ, ग्रामीण विकास को समर्पित "सोच बदलो गाँव बदलो अभियान" आज देश भर में युवा दिलों की धड़कन बन चुका है । इस विचार के जनक डॉ. सत्यपाल सिंह मीना, जो कि भारतीय राजस्व सेवा में 2007 बैच के अधिकारी हैं, ने "इको नीड्स फाउंडेशन" के फाउंडर प्रोफेसर प्रियानंद अगले के साथ मिलकर अपने गांव 'धनौरा' को राष्ट्रीय स्तर पर स्मार्ट विलेज के रूप में पहचान दिलाई और ग्रामीण विकास की इस मुहिम को दूसरे गांवों तक पहुँचने के लिए "सोच बदलो गाँव बदलो अभियान" की शुरुआत करते हुए, देश भर के युवाओं को संदेश दिया;

"आओ! हम सब मिलकर अपने गांवों के लिए काम करें और एक खुशहाल व बेहतर राष्ट्र का निर्माण करें।"

ग्रामीण क्षेत्रों में जन चेतना व जन जागरूकता पैदा करने के उद्देश्य से शुरू हुआ "सोच बदलो गांव बदलो यात्रा" का सिलसिला आज भी अनवरत जारी है । "सोच बदलो गांव बदलो टीम" के रूप में युवा, अपने–अपने गांवों में छोटे–छोटे रचनात्मक व सकारात्मक कार्यों में संलग्न हैं, इस तरह युवाओं का यह उत्साह ग्रामीण विकास की उम्मीदों को पंख देकर एक नए भारत का निर्माण कर रहा है ।

"सोच बदलो–गांव बदलो अभियान" आज मात्र एक वैचारिक आंदोलन न होकर, एक जन आंदोलन का रूप ले चुका है। समाज में जन जागरूकता और विकास की जन चेतना पैदा करने वाले इस अभियान

के स्थापना दिवस पर सोच बदलो गाँव बदलो टीम द्वारा अब तक किए गए कार्यों का गहन मूल्यांकन किया गया। इस वर्ष के दौरान भी टीम द्वारा विभिन्न कार्यक्रमों को सफलतापूर्वक संचालित किया गया है; जैसे– सोच बदलो गांव बदलो यात्रा, ग्रीन विलेज–क्लीन विलेज अभियान, आओ पढें–आगे बढें अभियान, शिक्षा पाओ–ज्ञान बढ़ाओ प्रतियोगिता, अतिक्रमण मुक्ति अभियान, शराबबंदी अभियान, ग्राम विकास समितियों का गठन, पुस्तकालयों और कोचिंग संस्थानों का शुभारंभ इत्यादि।

इस दौरान टीम द्वारा अपनी विचारधारा और कार्यों को संगठित और व्यवस्थित रुप देने के लिए अपनी वार्षिक पत्रिका "उत्थान" के प्रथम अंक का विमोचन भी किया गया। टीम का मानना है कि सामाजिक बदलाव की यह पहली कोशिश नहीं है, बल्कि यह तो वर्षों से चली आ रही एक लंबी व सतत प्रक्रिया है। टीम, सामाजिक बदलाव के प्रयासों को संगठित कर, समाज को एक नई ऊर्जा, नई सोच व दिशा देने का प्रयास कर रही है। सामाजिक समरसता, युवाओं का मार्गदर्शन, बच्चों को अच्छे संस्कार और गांव के लोगों के जीवन स्तर में बदलाव की एक छोटी सी कोशिश का नाम है– सोच बदलो गांव बदलो टीम (SBGBT) । 21 मई 2017 को जन्मी इस टीम (SBGBT) ने अब तक कई महत्वपूर्ण उपलब्धियाँ हासिल की हैं।

उत्थान

आइये इन पर एक नज़र डालते हैं –

1. एसबीजीबीटी की पहली सबसे बड़ी उपलब्धि यह रही है कि समाज के अंदर नकारात्मक सोच को बदल कर एक सकारात्मक सोच का संचार किया है। युवाओं को हताशा और निराशा के माहौल से निकालकर उनके जीवन में नई ऊर्जा का संचार किया है और उज्ज्वल भविष्य के लिए प्रेरित किया है।

2. सामाजिक बुराइयों और दुर्व्यसनों के प्रति सुधारात्मक माहौल पैदा हुआ है। लोगों ने इन दुर्व्यसनों को एक बुराई के रुप में देखना और उसका विरोध करना शुरु किया है। जिसके परिणामस्वरूप हजारों घर बर्बाद होने से बच रहे हैं।

3. टीम ने युवा पीढ़ी / नौजवानों के मन में अपने गांव के प्रति प्रेम पैदा किया है तथा उन्हें ग्राम विकास में सहयोग के लिए आकर्षित किया है। जिससे इनमें गांव के प्रति एक जिम्मेदारी का माहौल बना है। आज युवा गांव के विकास को अपनी नैतिक जिम्मेदारी मान रहे हैं और आगे आकर अपने गांव के विकास की चर्चा कर रहे हैं और गाँव के विकास में बखूबी अपनी जिम्मेदारी भी निभा रहे हैं।

4. "सोच बदलो–गांव बदलो यात्रा" के तहत लगभग 100 से अधिक गाँवों में कार्यक्रम आयोजित किए गए, जिससे लोगो में भाईचारा, एकता व एक दूसरे के सहयोग से गांव को विकसित करने पर जोर दिया गया। जिसके अच्छे परिणाम देखने को मिल रहे हैं। आज गांव–गांव में एसबीजीबीटी के कार्यों की चर्चा है और लोग आपसी भाईचारे और सहयोग के लिए आगे आ रहे हैं। एक साथ बैठकर अपने गांव की समस्याओं व उनके संभावित समाधान पर चर्चा कर रहे हैं।

5. लोगों को पर्यावरण व जल संरक्षण के प्रति जागरूक करने के लिए, गत वर्ष की भांति इस वर्ष भी वृक्षारोपण कार्यक्रम "ग्रीन विलेज–क्लीन विलेज" पूरे उत्साह के साथ टीम साथियों द्वारा चलाया गया । जिसे समाज के हर वर्ग ने सराहा, साथ ही वन विभाग के अधिकारियों ने भी इस कार्यक्रम की प्रशंसा की। इस कार्यक्रम के माध्यम से लोगों में पर्यावरण के प्रति जागरूकता पैदा हुई।

6. बच्चे हमारे गांव और देश का भविष्य हैं। इन्हें मजबूत करने से ही हमारा समाज मजबूत होगा। बच्चों को शिक्षा के प्रति अभिप्रेरणा और अच्छे संस्कार देने के उद्देश्य से ही एसबीजीबीटी ने "आओ पढें–आगे बढें" कार्यक्रम की शुरुआत की; जिसके तहत टीम सदस्यों द्वारा स्कूलों में जाकर, बच्चों को दुर्व्यसनों से दूर रहने/अपने लक्ष्य के प्रति जागरूक करने के साथ–साथ, एक जीवन डायरी का वितरण किया गयाद्य अब तक लगभग 20 हजार से भी अधिक बच्चों ने हमारे इस कार्यक्रम में हिस्सेदारी निभाई है। सभी स्कूल के प्रधानाध्यापकों ने इस कार्यक्रम की सराहना की है।

7 एसबीजीबीटी की जन चेतना यात्रा का जनमानस पर इतना प्रभाव हुआ कि गांव–गांव में लोगों ने बदलाव के लिए मीटिंग्स कीं और अपने–अपने गांव से नशा मुक्ति की दिशा में ठोस कदम उठाए। 60 से भी अधिक गांवों में शराबबंदी, जुआ बंदी और कुछ एक गांव में तो गुटखा और तंबाकू उत्पादों पर भी गांव वालों ने रोक लगाई। महिलाओं ने भी कई गांवों में आगे आकर शराब बंदी के खिलाफ अपनी आवाज उठाई और गांव से अवैध शराब बिक्री की दुकानों को हटाने के लिए एकजुटता दिखाई। यह समाज में व्यसन मुक्ति की ओर एक अच्छा कदम है। हालांकि इस दिशा में शत प्रतिशत परिणाम हासिल करना अभी बाकी है ।

8. सोच बदलो गांव बदलो यात्रा के माध्यम से लोगों को स्वच्छता के महत्व को भी समझाया गया साथ ही गांव के संकरे रास्तों से अतिक्रमण हटाने के लिए लोगों से अपनी संकीर्ण मानसिकता को छोड़ने का निवेदन किया गया जिसके परिणामस्वरुप कई गांव के लोगों ने एसबीजीबीटी के विचारों से प्रभावित होकर अपनी सोच बदली और तुरंत प्रभाव से अपने गांव में मीटिंग आयोजित कर, गांव के संकरे रास्तों से अतिक्रमण हटा कर उन्हें चौड़ा किया और गांव को साफ सुथरा किया। युवाओं ने ऐसे कार्यक्रमों में बढ़ चढ़कर भाग लिया और गांव के रास्तों को चौड़ा कर अपने गांव की सुंदरता बढ़ाने में अप्रितम योगदान दिया। इससे आसपास के दूसरे गांवों को भी प्रेरणा मिली और यह कार्यक्रम धीरे–धीरे कई अन्य गांवों में युवाओं द्वारा अनवरत जारी है ।

उत्थान

9. एसबीजीबीटी ने अपनी यात्राओं के बाद, नियमित अंतराल पर गांव के युवाओं से संपर्क बनाए रखा और गांव–गांव लोगों के बीच जाकर, उनके गांव की समस्याओं को समझा और उनके निराकरण के लिए भी उपाय सुझाए, जिसके अच्छे परिणाम देखने को मिले। गांव धनेरा व खिन्नौट के बाद 'गुढ़ा' गांव के युवाओं ने गांव की प्रमुख समस्या पीने के पानी की समस्या को गांव में आपसी सहयोग से सुलझाया।

युवाओं ने गांव वालों के सहयोग से नया बोरवेल करवाकर व घर–घर पानी की सप्लाई हेतु पाईप लाईन बिछा डाली । सोच बदलो गांव बदलो टीम की विचारधारा से प्रभावित होकर गांव में पानी की समस्या को सुलझाकर इन युवाओं ने गांव में विकास की एक नई इबारत लिख दी है।

10. "आओ पढ़ें–आगे बढ़ें" के द्वितीय चरण में टीम की इस वर्ष की सबसे बड़ी उपलब्धि थी– भावनाओं के भवन के रूप में चर्चित "उत्थान भवन" का तय समय सीमा में निर्माण और भव्य उदघाटन। इस कार्यक्रम की यह खासियत रही कि इस खास मौके पर सोच बदलो गाँव बदलो टीम के लगभग 55 रक्तवीरों ने अपना अमूल्य रक्त देकर समाज सेवा की अनूठी मिसाल पेश की। साथ ही शिक्षा पाओ ज्ञान बढ़ाओ प्रतियोगिता में अव्वल आए प्रतिभागियों को भी पुरस्कृत किया गया। इस ऐतिहासिक अवसर पर राजस्थान के विभिन्न जिलों से पधारे समाजसेवियों, पत्रकार बंधुओं, दूरदराज के लगभग 110 गांवों से आए बुजुर्गों, महिलाओं और उत्थान कोचिंग संस्थान में वर्तमान में अध्ययनरत विद्यार्थियों की उपस्थिति ने इस कार्यक्रम की शोभा को और बढ़ा दिया था। एसबीजीबीटी ने अपने स्थापना दिवस की दूसरी वर्षगांठ पर इस बहुप्रतीक्षित भवन का उद्घाटन कर, गरीब बच्चों को एक अच्छे मानव संसाधन के रूप में विकसित करने के संकल्प को साकार रूप दिया है। जहां गरीब बच्चे अच्छे माहौल में अध्ययन कर अपनी उम्मीदों की उड़ान भर सकेंगे।

टीम अपनी विचारधारा व कार्यों को संगठित और व्यवस्थित रुप देने के साथ–साथ अपने लक्ष्यों के प्रति वचनबद्ध है। इस तरह एसबीजीबीटी ने ग्रामीण भारत में एक सकारात्मक माहौल को जन्म दिया है और लोगों में आपसी भाईचारे के साथ पारस्परिक सहयोग की भावना को बढ़ाने का प्रयास किया है। यही एकमात्र वजह है कि आज गांव–गांव में लोग, सोच बदलो गांव बदलो टीम के रूप में नयी युवा क्रांति को

एक आशा भरी दृष्टि से देख रहे हैं। इसके अतिरिक्त चौपालों पर चर्चा तेज हुई है कि हमारे युवा और हम मिलकर अपने गाँव का विकास कर सकते हैं। लोगों में इस सोच को पैदा करना ही एसबीजीबीटी की सबसे बड़ी उपलब्धि है। एसबीजीबीटी के माध्यम से आज युवा अपने–अपने गांव, समाज और देश के प्रति अपनी नैतिक जिम्मेदारी को निभाने का प्रयास कर रहे हैं।

SBGBT (सोच बदलो गांव बदलो टीम) ने युवाओं में कुछ कर गुजरने का एक जुनून सा पैदा कर दिया है, एक सकारात्मक, रचनात्मक व सद्भावना का माहौल सा खड़ा कर दिया है, लोगों के मन में बदलाव की एक उम्मीद पैदा कर दी है। इस अभियान से प्रेरणा लेकर, युवाओं ने अपने–अपने गांवों में स्वच्छता, अतिक्रमण हटाने, शराबबंदी, जुआ बंदी, गलियों में उजाले के लिए बल्ब लगाने व विद्यालय की चारदीवारी, गांव में पीने के पानी की व्यवस्था करने जैसी गतिविधियों में शामिल होकर एक नया संदेश लोगों में दिया है। अब गांव के युवा फिजूल के कार्यों में व्यस्त रहने के बजाय, अपनी ऊर्जा को गांव के विकास में लगा रहे हैं। गांव के युवाओं ने अपने गांव की समस्याओं (सड़क, बिजली, पानी, चिकित्सा, शिक्षा) को डिजिटल तकनीक का उपयोग करके सरकारी संपर्क पोर्टल, आरटीआई, CPGRAMS जैसे टूल्स के माध्यमों से उठाना शुरू कर दिया है। यह सब संभव हो पाया है, सिर्फ और सिर्फ, एक सोच बदलने से । आप भी सोच बदलो गांव बदलो अभियान से प्रेरणा लेकर, अपने गांव में एक नयी शुरुआत कर सकते हैं, बस एक बार सोच बदलने की जरूरत है, एक शुरुआत करने की जरूरत है । यदि आपके रास्ते सही हैं, नीयत सही है, तो देर सवेर ही सही, परिणाम सामने आते हैं, छोटी–छोटी कोशिशें ही बड़े परिवर्तन की दस्तक दे जाती हैं और आपके गांव के लोग भी आपसे जुड़ते चले जाते हैं । वैसे भी कहा जाता है "जब इरादे नेक होते हैं तो, कुदरत भी सहायक होती है।" आप भी एक बार सकारात्मक सोच के साथ, यथाशक्ति व यथासंभव प्रयास करके तो देखो। एक बार विचार करके देखो ! अपने बच्चों की भोजन व्यवस्था व देखरेख तो एक मांसाहारी जीव भी करता है, मुंह में निवाला लेकर अपने बच्चों तक पहुंचाता है । यदि हम इंसान होकर भी केवल अपने पेट व अपने परिवार तक ही सीमित रहे, तो हममें और जानवरों के जीवन में विशेष अंतर नहीं रह जाता । हमें अपने साथ–साथ अपने समाज, गांव व देश के विषय में भी सोचना चाहिए । गांव का, विकास की मुख्यधारा से

उत्थान

पिछड़ने का एक बड़ा कारण यह भी है कि आज गांव से जो अच्छा पढ़ लिख जाता है वह अपनी नौकरी अथवा व्यवसाय की खोज में शहर चला जाता है और वहां उन्नति करते हुए धीरे–धीरे अपने गांव व गांव के लोगों की मशक्कत भरी दिनचर्या को भूल जाता है या उस तरफ ध्यान नहीं दिया करता है। गांव के अनपढ़, नासमझ व भोले–भाले लोग अपनी परेशानियों को अपना भाग्य या ईश्वर की मर्जी मान लिया करते हैं और दूरगामी सोच न होने से अपनी परेशानियों, समस्याओं के समाधान की दिशा में ठीक से नहीं सोच पाते। वे आज भी सरकारी योजनाओं के सही मायने में लाभ से वंचित हैं, सरकारी महकमों में भी वो ठोकरें खाते–खाते हार मान चुके होते हैं और बड़ी मायूसी के साथ सोचने लगते हैं कि उनकी कोई सुनवाई नहीं हो सकती। यही हाल उनका, उनके जनप्रतिनिधियों के समक्ष अपनी बात रखने पर होता है और ऐसे में, गांव के लोग यही मान लेते हैं कि उनके गांव का भला कभी नहीं हो सकता। उनके गांव की जर्जर व टूटी हुई सड़क पर किसी की नजर नहीं जाती, प्राथमिक चिकित्सालयों का भी कागजों में ही गुणगान है, वहां क्या सुविधाएं उपलब्ध कराई गई हैं, किसी को जानने की उत्सुकता नहीं है। गांव के सरकारी विद्यालयों की दशा भी किसी से छिपी नहीं है। कई गांव में पानी की व्यवस्था भी चरमराई हुई है लोगों को पीने के पानी के लिए दिनभर इधर–उधर भटकना पड़ता है । इस तरह की और कई परेशानियों का आज देशभर के कई गांवों के लोगों को सामना करना पड़ रहा है। गांव के लोगों की सोच भी सीमित रहती है और संकीर्ण मानसिकता के चलते हुए गांव के लोग समय–समय पर गांव में प्रशासन के द्वारा कैंप या विशेष अभियानों के दौरान भी, बड़े आला अधिकारियों से मुखातिब होने के समय केवल अपनी व्यक्तिगत समस्याओं तक ही सीमित रह जाते हैं और अपने गांव की समस्यायों को नहीं रख पाते हैं। सार्वजनिक महत्व की जरूरतों को ध्यान में नहीं ला पाते हैं। दूरगामी सोच के अभाव के चलते, चुनाव के समय भी तात्कालिक लुभावने प्रस्तावों व अपने व्यक्तिगत लाभ की सोच में ही उलझ कर रह जाते हैं और एक सही जनप्रतिनिधि को चुनने से अकसर चूक जाते हैं। ऐसे हालातों में पढ़ा लिखा युवा वर्ग एक महत्ती भूमिका अदा कर सकता है। गांव के लोगों की टूटती उम्मीदों को नए पंख देने की कोशिश कर सकता है। डिजिटल तकनीक व सूचना प्रौद्योगिकी के इस दौर में एक बड़ा सहारा बन सकता है। आपकी छोटी–छोटी कोशिशें भी गांव के लोगों के जीवन स्तर में बदलाव के लिए बड़ी सहायक हो सकती हैं। इसलिए आप अपने गांव में बेहतर भविष्य निर्माण के लिए आगे आएं, सामूहिक प्रयास करें,

सकारात्मक सोच व सहभागिता से आने वाली पीढ़ियों के लिये हम शिक्षा के माध्यम से सफलता के रास्ते खोल सकते हैं - डॉ. सत्यपाल सिंह मीण

'सोच बदलो गांव बदलो' टीम ने किया रक्तदान

सरमथुरा के मोठियापुरा में भावनाओं के भवन 'उत्थान भवन' का हुआ उद्घाटन

सकारात्मक व सद्भावना के माहौल को बढ़ावा देने का प्रयास करें, गांव में मौजूदा सरकारी उपक्रमों की समुचित निगरानी की व्यवस्था कर, उनके सही संचालन हेतु प्रयास करें, लोगों को सरकारी योजनाओं के बारे में विस्तृत जानकारी शेयर करें और योजनाओं के लाभ उन्हें दिलवाने में मदद करें । इस हेतु गांव में एक "ग्राम विकास समिति" बनाकर ठंडे पड़े तंत्र में सुधार की दिशा में और गांव के विकास कार्यों को पटरी पर लाने की एक सकारात्मक पहल करें। ध्यान रखें, सामूहिक, सकारात्मक व गंभीर प्रयास ही जमीनी बदलाव ला सकते हैं। ऐसा करने पर धीरे–धीरे गांव के लोगों की सोच बदलेगी, गांव की तस्वीर बदलने लगेगी, गांव में विकास की कहानी आगे बढ़ने लगेगी । आओ, हम सब मिलकर अपने–अपने गांव व शहर में मिलजुल कर आपसी सहयोग से विकास को एक नयी राह पर लेकर चलें । बस! शुरुआत हमें अपने आप से करनी है।

जय हिंद
SBGBT

चाह एक युवा मन

चाहत है मेरी –

किन्हीं सूखे लबों की
मुस्कान बन पाऊँ
किन्हीं सँकरी सी आँखों का
सारा जहाँ बन पाऊँ

जिधर देखूँ ,उधर
मुस्काता हुआ ,गुलशन बन जाये
जर्जर होता मिट्टी का घर
महल बन जाये

ऊँच–नीच का भेद खत्म हो
ऐसी सोच जगा पाऊँ
हिन्दू–मुस्लिम, सिक्ख–ईसाई
सबको इंसान बना पाऊँ

प्रेम मुहब्बत बसे जहाँ पर
ऐसा हिन्दुस्तान बने
हर दिल मैं हिन्दुस्तान बसे
बच्चा–बच्चा भगवान बने

हे! मौला,रब, ईशु, दाता
रहमत इतनी बरसाना
मैं बन जाऊँ,कुछ ऐसा
जो चाहूँ मैं बन पाना

– मौनू गौड़
SBGB Team, कांसोटीखेड़ा

गांव में बदलाव की शुरुआत कैसे करें ?

"सोच बदलो – गाँव बदलो"
एक अभियान – एक विचार

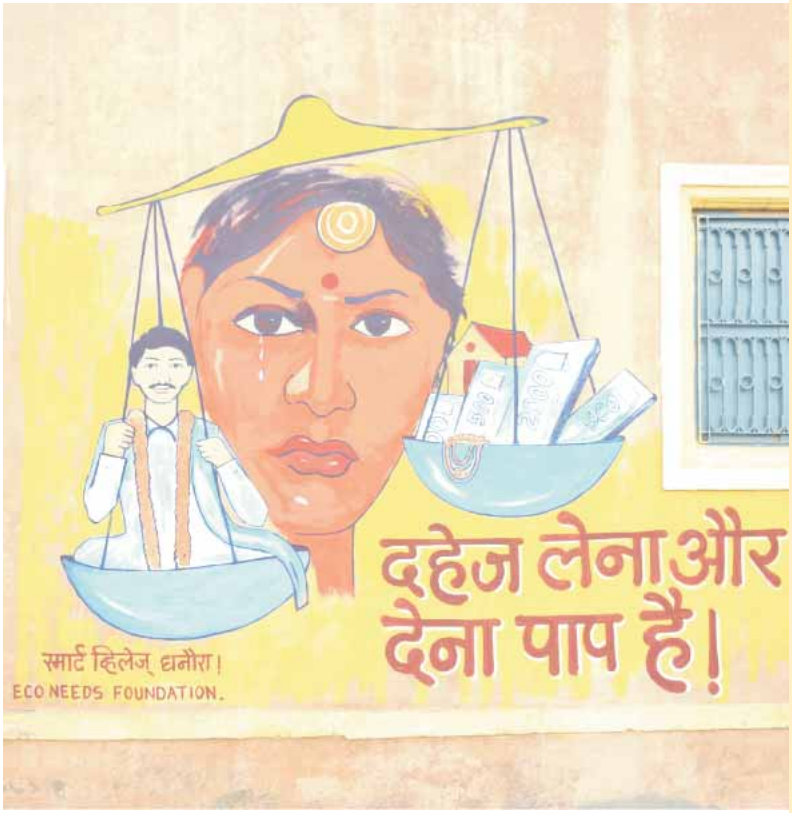

SBGBT गतिविधियों की अपने गाँव में शुरुआत के लिए सबसे पहले हमें गाँव के सकारात्मक युवाओं, सरकारी या निजी क्षेत्र में कार्यरत कर्मचारियों, उद्यमियों और गाँव के ईमानदार व सकारात्मक लोगों का एक समूह बनाना चाहिए; चाहे वह WhatsApp ग्रुप हो अथवा अन्य किसी रूप में हो। प्रारंभ में इसमें सिर्फ सकारात्मक और समाज सेवा के प्रति इच्छुक सदस्यों को ही जोड़ें। इस बात का विशेष ध्यान रखें कि प्रारंभ में ऐसे नकारात्मक और राजनीति वाले लोगों को बिल्कुल दूर रखें जो कि किसी भी कार्य की शुरूआत से पहले ही नकारात्मक माहौल को जन्म देते हैं अथवा अच्छे कार्यों में बाधा बनते हैं। शुरूआत में सकारात्मक व ईमानदार लोगों की संख्या कम भी हो सकती है; लेकिन अच्छे लोगों के जुड़े होने से आप अपने गाँव में एक अच्छी शुरुआत कर सकते हैं। एक बात और ध्यान रखें, बदलाव की मुहिम की शुरुआत में पूर्ण रूप से ईमानदार व चरित्रवान और संयमशील व्यक्तियों को ही जोड़े। इन सदस्यों में किसी भी प्रकार का व्यसन नहीं होना चाहिए, इन पर उंगली उठाने का कोई भी कारण नहीं होना चाहिए।

गाँव में लोगों का विश्वास जीतना सबसे बड़ी चुनौती होती है। अच्छे लोगों के जुड़े होने पर लोग आप में भरोसा करेंगे और आप के चुने हुए कार्यों की सफलता पर अन्य लोग भी आपसे जुड़ते चले जाएंगे । गाँव के किसी भी व्यक्ति को अपनी बात समझाते समय सकारात्मकता व विनम्रता का विशेष ध्यान रखें। हर व्यक्ति को यथोचित सम्मान दें। खास तौर पर बुजुर्गों और महिलाओं के सम्मान का विशेष ध्यान रखें ।

इसके उपरांत गाँव की विभिन्न समस्याओं पर विचार–विमर्श करने के बाद, प्रारंभ में गाँव में कोई ऐसा कार्य करना चाहिए, जिसमें ज्यादातर लोगों की सहमति हो, किसी को आपत्ति नहीं हो और किसी प्रकार का विरोध भी नहीं हो चाहे वह कार्य छोटा ही क्यों ना हो लेकिन यह ध्यान रहे यह काम गाँव के ज्यादातर लोगों की जरूरतों से

जुड़ा हो। जैसे कि गाँव के सरकारी स्कूल की स्थिति में सुधार, बच्चों की शिक्षण व्यवस्था, कठिन विषयों के लिए अतिरिक्त शिक्षकों की व्यवस्था, सरकारी विद्यालयों में समतलीकरण, चारदीवारी और पुताई जैसे कार्य, स्कूल में जन सहभागिता से बिजली, पानी, ब्लैक/वाइट बोर्ड, पंखा, फर्नीचर, अथवा कंप्यूटर की व्यवस्था करना या अन्य कोई सुविधाएं उपलब्ध करवाने की कोशिश करना, सरकारी स्कूल के बच्चों को प्रोत्साहन के लिए पुरस्कार वितरण जैसे कार्यक्रम आयोजित करना, सार्वजनिक स्थानों की सफाई, गाँव में वृक्षारोपण, जल संरक्षण के लिए कार्य इत्यादि। इस प्रकार के कार्य न केवल गाँव के लोगों का ध्यान आकर्षित करेंगे बल्कि गाँव में एक सकारात्मक माहौल को जन्म देगें तथा इस प्रकार के कार्य बिना बहुत खर्चे के अतिशीघ्र संपन्न किए जा सकते हैं। इन कार्यों की सफलता को गाँव के लोगों तक पहुंचाएं, जिससे दूसरे लोग आप से जुड़ेंगे और धीरे–धीरे गाँव विकास कार्य संगठन मजबूत होगा। इस बात का विशेष ध्यान रखें कि बिना लोगों की सहमति ऐसा कोई भी संवेदनशील कार्य नहीं करे, जिसका शुरूआत में ही लोग विरोध करें और आपके संगठन में फूट पड़ जाए ।

प्रारंभिक कार्यों की सफलता के बाद, गाँव में अपेक्षाकृत बड़े कार्य जैसे कि गाँव की खस्ताहाल सड़कों को सुधरवाना, पानी की व्यवस्था करवाना, गाँव में रास्तों से अतिक्रमण हटवाना, लोगों को स्वच्छता के प्रति जागरुक करना, लोगों को मनरेगा के तहत रोजगार सुनिश्चित करवाना, मनरेगा के माध्यम से पर्यावरण/जल संरक्षण व संवर्धन के प्रयास करना, उचित मूल्य वह समय पर राशन दिलवाना, विभिन्न सरकारी योजनाओं जैसे फसल बीमा योजना, प्रधानमंत्री सुरक्षा बीमा योजना, प्रधानमंत्री जीवन ज्योति बीमा योजना, पशुधन बीमा योजना, मुद्रा बैंक योजना, सुकन्या समृद्धि योजना, श्रमिक कार्ड योजना, भामाशाह योजना... इस तरह की कई उपयोगी सरकारी योजनाओं के लाभ गाँव के लोगों को दिलवाने के प्रयास किए जा सकते हैं। गाँव के पढ़े लिखे समझदार लोगों अथवा युवाओं द्वारा गाँव की समस्याओं को आरटीआई, राजस्थान संपर्क पोर्टल, CP grams जैसे ऑनलाइन ग्रीवांस टूल्स के माध्यम से सरकार व प्रशासन के ध्यान में लाने के प्रयास किए जा सकते हैं; जिससे बेहद कम समय में ही अच्छे परिणाम आ सकते हैं । इस तरह से हम छोटी–छोटी ही सही कुछ सकारात्मक पहल अपने अपने गाँव में कर सकते हैं। अपने गाँव में लोगों को आधारभूत सुविधाएं दिलवाकर एक बेहतर जीवन दे सकते हैं । गाँव के युवाओं को उपयोगी सरकारी योजनाओं की जानकारी, डिजिटल तकनीक के सकारात्मक उपयोग नियमित रूप से बता कर गाँव में बदलाव के लिए प्रेरित कर सकते हैं । इसलिए हमारी कोशिश यह होनी चाहिए चाहे छोटा कदम ही क्यों ना हो लेकिन सही दिशा में उठाया गया हर कदम सफलता की ओर ही लेकर जाता है। यूं तो बदलाव में एक बच्चे से लेकर बुजुर्ग तक हर व्यक्ति महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकता है। लेकिन फिर भी बुजुर्गों का अनुभव और युवाओं की ऊर्जा और आधुनिक तकनीक की समझ गाँव में बहुत बड़ा बदलाव ला सकते हैं। इसलिए हमें मिल जुलकर अपने गाँव को बेहतर बनाने के प्रयास करने चाहिए ताकि गाँव के लोगों का जीवन स्तर ऊंचा उठ सके और उनके जीवन में भी खुशहाली आ सके।

जय हिंद!

मनीराम, बडापुरा
SBGBT सदस्य

"उत्थान-भवन सरमथुरा" के उत्थान की कहानी"

उत्थान–भवन सरमथुरा के उत्थान की कहानी "पैसों की तंगी–तालीम के आड़े नहीं आती" इस कहावत को और महान कवि रामधारी सिंह दिनकर द्वारारश्मिरथी में लिखित पंक्तियों "मानव जब जोर लगाता है, पत्थर पानी बन जाता है" को सार्थक करती है। यह सर्व विदित है कि मानव जाति के विकास की आधारशिला शिक्षा है। एक सुव्यवस्थित शिक्षा प्रणाली ही मानव को सुसंस्कृत, संवेदनशील एवं विवेकशील बनाने के साथ विचारवान भी बनाती है। शिक्षा ही किसी भी समाज एवं राष्ट्र के विकास, उसकी समृद्धि एवं संपन्नता का मूल होती है। किसी भी समाज और राष्ट्र का विकास इस बात पर निर्भर करता है कि उस समाज और राष्ट्र में लोगों को कितनी गुणवत्तापूर्ण सुलभ शिक्षा उपलब्ध है।

भारत की आबादी का बहुत बड़ा हिस्सा गांवों में वास करता है। ऐसे में गांवों के विकास द्वारा ही देश का विकास सुनिश्चित किया जा सकता है और शिक्षा की इसमें सबसे महत्वपूर्ण भूमिका है। "उत्थान–भवन सरमथुरा'' इस क्षेत्र के लोगों की शिक्षा के प्रति जागरूकता और अपने बच्चों को शिक्षित करने की दृढ़ इच्छाशक्ति का परिणाम है। सरमथुरा धौलपुर जिले का एक छोटा सा कस्बा है जहां की विषम भौगोलिक परिस्थितियां, जागरूकता का अभाव, शैक्षिक दृष्टि से पिछड़ापन, सीमित संसाधन एवं सीमित रोजगार के अवसर, यहाँ के विकास और उन्नति में बाधक रहे। सरमथुरा क्षेत्र शिक्षा के माध्यमों की कमी से हमेशा से जूझता रहा है, इस वृहद ग्रामीण परिवेश के विद्यार्थी अभावों में अपनी स्कूली शिक्षा तो पूर्ण कर लेते हैं लेकिन परिवार की विषम आर्थिक परिस्थितियों के चलते वे प्रतियोगी परीक्षाओं की तैयारी के लिए बाहर किसी शहर में नहीं जा सकते। फलस्वरूप, उनका कैरियर स्कूली शिक्षा प्राप्त करने तक ही सीमित रह जाता था और युवाओं को या तो सीमित पत्थर की खदानों में खनन कार्य करने के लिए मजबूर होना पड़ता था या फिर वे बेरोजगारी की ठोकरें खाते रहते थे।

इन विषम परिस्थितियों में सोच बदलो–गांव बदलो टीम ने क्षेत्र लिए एक आशा की किरण के रूप में जन्म लिया। टीम ने क्षेत्र के गरीब एवं कमजोर तबके के विद्यार्थियों के सपनों को पंख लगाने के उद्देश्य से सरमथुरा में किराए के मकान में निशुल्क कोचिंग का संचालन शुरू किया। लंबे समय तक किराए के भवन में कोचिंग चलाने के पश्चात समाज एवं जनहितैषी टीम के कर्णधारों के मन– मस्तिष्क में एक कल्पना प्रस्फुटित हुई और गरीब शिक्षार्थियों की निर्बाध रूप से प्रतियोगी परीक्षाओं की तैयारी के लिए स्वयं का एक भवन बनाने का सपना संजोया। इस सपने को साकार रूप देने के लिए

उत्थान

सर्वप्रथम टीम के संस्थापक सदस्यों ने भूमि की क्रय लागत एवं भवन निर्माण की अनुमानित लागत का आंकलन किया। प्रयासों की एक लंबी श्रृंखला के बाद टीम के सदस्यों ने धन संग्रहण की प्रक्रिया शुरू की। कोर टीम के सदस्यों ने भूमि क्रय की लागत का बंदोबस्त कर सरमथुरा में उपयुक्त स्थान पर भवन निर्माण के लिए भूमि चिन्हित की। तत्पश्चात भूमि के क्रय संबंधी समस्त प्रक्रियाओं को कुछ ही समय में पूर्ण कर लिया गया। उसके पश्चात् टीम अपने दृढ़ संकल्प के साथ लक्ष्य प्राप्ति की दिशा में निरंतर अग्रसर रही और कुछ ही समय में समाज के बुद्धिजीवियों, बुजुर्गों एवं युवाओं का विश्वास हासिल कर लिया। इसके बाद तो सभी सदस्यों का हौसला सातवें आसमान पर था, हो भी क्यों ना, जो निस्वार्थ भाव से क्षेत्र के गरीब एवं मजदूर तबके के बच्चों के सपनों को पंख लगाने के लिए निरंतर चिंतनशील और प्रयत्नशील हैं। "पैसों की तंगी तालीम के आड़े नहीं आती'' इसी कथन को चरितार्थ करते हुए उत्थान भवन के निर्माण की प्रक्रिया ने गति पकड़ ली और 26 दिसंबर 2018 को इस भावनाओं के भवन 'उत्थान' की समाज के बुजुर्गों द्वारा आधारशिला रखी गई। टीम ने भूमि पूजन कार्यक्रम में उपस्थित जन समूह में बुजुर्गों का आशीर्वाद प्राप्त करते हुए संकल्प लिया कि टीम इस भवन के निर्माण कार्य को 5 माह के अंदर पूर्ण कर इसे विद्यार्थियों के लिए समर्पित कर देगी। इसी निर्धारित समय–सीमा को ध्यान में रखते हुए टीम के सदस्यों ने इस लक्ष्य को हासिल करने के लिए दिन–रात एक कर दिए। कर्मचारियों एवं व्यवसायियों ने तो इस पुनीत कार्य के लिए अपना तन–मन–धन सब कुछ न्यौछावर कर ही दिया लेकिन इसके साथ–साथ उस गरीब मजदूर का हौसला देखते ही बनता था जो भावनाओं के भवन 'उत्थान' के निमित्त, परमार्थ के लिए एक सेठ जी से ब्याज पर ऋण लेकर उस बेशकीमती धनराशि की उत्थान के इस महायज्ञ में आहुति देता है। दानदाताओं की दानशीलता ने उत्थान भवन के निर्माण में धन की कमी नहीं आने दी।

टीम के कर्मठ साथियों की कठोर मेहनत और दानदाताओं की सहयोग से वह अद्‌भुत और अद्वितीय दिन आया जब उत्थान भवन का उद्‌घाटन किया जाना था। दिनांक 21 मई 2019 का दिन एक ऐतिहासिक दिन बन गयाय जब टीम का प्रत्येक साथी और दानदाता सपनों के भवन उत्थान भवन को देखने के लिए लालायित हो उठा। राज्य के विभिन्न हिस्सों से पधारे हुए बुद्धिजीवियों, पत्रकार बंधुओं, अधिकारियों, कर्मचारियों एवं विद्यार्थियों की गरिमामयी उपस्थिति में उत्थान भवन का उद्‌घाटन समारोह संपन्न हुआ और उत्थान भवन में अध्ययन–अध्यापन प्रक्रिया का शुभारंभ हुआ। टीम के साथियों का मानना था कि उत्थान भवन की भूमि को हम अपने खून से सींचना चाहते हैं। रक्तदान जीवनदान होता है और हम अपना जीवन उत्थान भवन के लिए देना चाहते हैं और इसी भावना से ओतप्रोत होकर, टीम के कर्मठ एवं नौजवान सदस्यों ने उत्थान की पावन भूमि पर रक्तदान शिविर का आयोजन कर मानवता की सेवा का एक अनूठा उदाहरण पेश किया। इस शिविर में 55 रक्तवीरों ने रक्तदान कर

उत्थान

लोगों में रक्तदान संबंधी व्याप्त नकारात्मक धारणा को बदलने का संदेश प्रसारित किया। उत्थान भवन के उद्घाटन के बाद से ही इसमें सैकड़ों विद्यार्थी अनुभवी शिक्षकों के सानिध्य और मार्गदर्शन में प्रतियोगी परीक्षाओं की तैयारी करते हुए अपने भविष्य को संवारने लगे हुए हैं। इस उत्थान कोचिंग संस्थान में शिक्षकों द्वारा विभिन्न प्रतियोगी परीक्षाओं जैसे रेलवे, एसएससी, पुलिस, बी.एड एवं बीएसटीसी इत्यादि की तैयारी कराई जा रही है। यहां विद्यार्थी ना केवल प्रतियोगी परीक्षाओं की तैयारी कर रहे हैं बल्कि वे नैतिकता एवं सामाजिकता की शिक्षा भी ग्रहण कर रहे हैं। समय–समय पर शिक्षाविद एवं अधिकारीगण उत्थान भवन पर पधारकर परामर्श कक्षाएं लेते हैं इन परामर्श कक्षाओं में विद्यार्थियों को जीवन जीने का सलीका सीखने के अवसर प्राप्त हो रहे हैं। उत्थान कोचिंग संस्थान के उद्देश्य का दायरा शिक्षार्थियों को रोजगारपरक शिक्षा उपलब्ध कराने तक ही सीमित नहीं है। यहां पर देश के भावी नागरिकों का चरित्र निर्माण भी किया जा रहा है, उन्हें संस्कारवान बनाया जा रहा है, उनमें सामाजिकता और राष्ट्रीयता की भावना विकसित की जा रही है जो किसी भी समाज और राष्ट्र के नैतिक उत्थान के लिए नितांत आवश्यक हैं। इस संस्थान में विद्यार्थियों के लिए सारी सुविधाएं उपलब्ध हैं जैसे बैठने की व्यवस्था, कूलर–पंखे एवं वाटर कूलर इत्यादि।

"जब हौसले को पंख लग जाएं तो ऊंची उड़ान भरने में क्या हर्ज है। उत्थान भवन के भौतिक विकास का पहिया यहीं नहीं रुका। सामाजिक कार्यकर्ताओं के हौसले और जज्बे के बलबूते पर इस संस्थान को आधुनिक तकनीकी से लैस किया जा चुका है। संस्थान के प्रत्येक कमरे में सीसीटीवी कैमरे इंस्टॉल किए जा चुके हैं, जो विद्यार्थियों की सुरक्षा के दृष्टिकोण से महत्वपूर्ण हैं। डॉक्टर सत्यपाल मीना जी ने लोगों को विश्वास दिलाया कि भविष्य में उत्थान–भवन में ऑनलाइन क्लासेज, बहुआयामी कौशल विकास केंद्र 'स्किल डेवलपमेंट सेंटर' शुरू किया जाएगा, जिसमें क्षेत्र के बेरोजगार युवाओं के लिए विभिन्न क्षेत्रों में कौशल विकास के लिए प्रशिक्षण कार्यक्रम संचालित किए जाएंगे। यह 'स्किल डेवलपमेंट सेंटर' युवाओं की सरकारी नौकरियों पर निर्भरता और बेरोजगारी को कम करने में कारगर साबित होगा। आने वाले समय में उत्थान–भवन विकास और शिक्षा के क्षेत्र में नए आयाम स्थापित करेगा।

जय हिन्द! जय उत्थान !

मेरे सपनों की मातृभूमि

मेरा देश गांवों का देश है। जहां आज भी 70% से अधिक आबादी गांवों में बसती है । मेरा सौभाग्य है कि मेरा जन्म एक छोटे से गांव में हुआ, जहां मुझे गांव के जीवन को नजदीक से जानने का सुअवसर प्राप्त हुआ । बरसात के दिनों में कीचड़ भरे रास्ते, भरी दोपहरी में खेतों में काम करते लोग, सर्द रातों में अलाव के सहारे जगह–जगह खुले आसमान के नीचे झुण्डों में बतियाते लोग, अभावों से त्रस्त व दिनभर रोजी रोटी के लिए इधर–उधर मशक्कत करते गाँव के भोले–भाले लोग, खेतों से अथवा मजदूरी करके लौटते थके हारे ग्रामीणों का शाम को चारपाई पर लेटते ही ऊंघ जाना, यह सब नजर आता है। जब हम एक गांव के जीवन की ओर नजर डालते हैं । आज भी अधिकांश गांव आधारभूत सुविधाओं जैसे बिजली, पानी, सड़क, शिक्षा व स्वास्थ्य के पूर्ण लाभ से वंचित हैं । हालांकि, आज कई गांवों तक बिजली पहुंची है । लेकिन, वास्तविकता यही है कि आज भी गांवों में विद्युत आपूर्ति नियमित व पर्याप्त नहीं है । किसी भी समय बिजली का आना–जाना गांव के भोले–भाले लोगों व किसानों की दिनचर्या को अनियमित व ईश्वर के भरोसे जीने पर मजबूर करता है । आश्चर्य तो तब होता है जब आज़ादी के सात दशक गुजर जाने के बावजूद, आज भी कई गांव, पक्की सड़क बनने की बाट जोह रहे हैं । आज हमारे देश के कई गांवों में पीने के पानी का संकट गहराया हुआ है। गांव के लोग रोजगार की तलाश में और बेहतर शिक्षा व स्वास्थ्य सुविधाओं के लिए आज भी अपने आसपास के शहर जाने को मजबूर हैं। कहने का अभिप्राय यह है कि गांव के लोगों का अभावों से भरा जीवन किसी से छुपा नहीं है या संक्षिप्त में कहा जाए तो आज भी सरकारी प्रयासों के समुचित लाभ से ग्रामीण इलाके वंचित हैं। आज भी गांव के ज्यादातर परिवार इतने समर्थ नहीं है कि वह शहर जाकर अपना इलाज करा सकें, अपने बच्चों को अच्छे स्कूल–कॉलेज में दाखिला दिला सकें। मंहगाई के दौर में, कमजोर

उत्थान

आर्थिक स्थिति के कारण कई गरीब बच्चों के सपने, अभावों के बोझ तले समय पूर्व ही दफन हो जाते हैं और कई गरीब, बीमारियों का समय पर इलाज कराने में असमर्थता के चलते, अकाल मृत्यु का शिकार हो जाते हैं। आज भी गांव में हर घर शौचालय नहीं होने से, अल सुबह गांव की बहन–बेटियाँ, महिलाएं और अन्य लोग खुले में शौच जाने के लिए मजबूर हैं और अकारण बीमारियों के शिकार हो जाते हैं। हूबहू, ऐसी ही कुछ तस्वीर, आज से कुछ वर्ष पहले तक मेरे गांव की भी थी।

मेरा गांव "धनौरा" राजस्थान के धौलपुर जिले की बाड़ी तहसील का एक छोटा सा गांव है। मेरा बचपन गांव की गलियों में खेलते कूदते गुजरा। गांव की कच्ची संकरी पगडंडियों पर दिन भर बच्चों की हंसी ठिठोली व विभिन्न प्रकार के खेल खेलती टोलियां, पीठ पर भारी बस्ता (स्कूल बैग) लटकाए हुए स्कूल जाते बच्चों की टोलियां, गांव के लोगों का सुबह उठते ही खेत की ओर अथवा अपने काम पर निकल पड़ना, चौराहों पर गांव के बड़े बूढ़ों/पटेलों की हुक्का, तंबाकू व बीड़ी के साथ इधर उधर की चर्चाएं करती मंडलियां, भोर होते ही गांव की महिलाओं द्वारा पशुओं को चारा डालना, दूध दुहना, खेत के किसी कोने में गोबर के ढेर डालने जाना, गांव के चरवाहों द्वारा पशुओं को चराने हेतु हरे घास के मैदानों की ओर निकल पड़ना। यह सब नजर आता है एक गांव की दिनचर्या में ।

मैं भी अपनी साइकिल लेकर स्कूल की तरफ निकल पड़ता। स्कूल से लौट कर गांव के बच्चों के साथ खेल में घुल मिल जाता। शाम को बिजली न रहने से दीया/लालटेन के सहारे मां अपने घरेलू कामों को निपटाती रहती और वहीं एक कोने में इसी रोशनी के सहारे मैं भी अपने स्कूल में दिए गए होमवर्क को पूरा करने में जुट जाता था। बाबूजी भी खेत से लौट कर, पशुओं को चारा डालने व उन्हें पानी पिलाने जैसे कार्यों में मां का हाथ बंटाते। अपने संध्या बाती (इष्टदेव का दीपक जलाकर स्मरण करना) से निवृत्त होकर, थकान के चलते बाबूजी चारपाई पर लेट जाते और बीच–बीच में कई बार ऊंघते रहते, चारपाई पर पड़े–पड़े ही भोजन बनने का इंतजार करते रहते और जब मां भोजन तैयार होने पर चूल्हे पर से ही रोटी सेंकती हुई आवाज लगाती, तब कहीं जाकर बाबूजी की तंद्रा टूटती और माँ की आवाज सुनकर मैं भी झटपट अपना स्कूली बस्ता समेट कर बाबूजी के साथ मां के पास भोजन के लिए दौड़ा चला आता।

उच्च माध्यमिक तक की पढ़ाई मैंने गांव में रहते हुए ही पूरी की। इस दौरान, गांव में लोगों की तकलीफों को

देखकर, कई बार मेरा मन बहुत दुखी हो जाता था। मन में कई तरह के विचार आते, बाल मन कई सपने बुनने लगता "काश! हमारे गांव में भी यह सुविधा होती, तो हमारे गांव की लोगों की तकलीफें कितनी कम हो जातीं" लेकिन, परिस्थितियों के आगे मैं भी मजबूर था। एक आम इंसान की तरह, न कुछ बड़ा सोच पाता और न ही कुछ कर पाने की स्थिति में था। यह सब सोचकर कई बार बड़ा मायूस हो जाया करता था। मुझे आज भी याद है कि मेरे इन्हीं विचारों के चलते, स्कूली दिनों में, मैंने गांव के कुछ साथियों की मदद से गांव की गलियों को रोशन करने के उद्देश्य से हर खंबे पर बल्ब लगाकर, लोगों के चेहरों पर एक छोटी सी मुस्कान व उनके मन में हल्का सा संतोष भाव पैदा करने की एक छोटी सी कोशिश की थी। इस तरह की कोशिशें मन को बड़ी तसल्ली देतीं थीं। इसी बीच कॉलेज की पढ़ाई के लिए मेरे पिताजी ने मेरा एडमिशन राजस्थान यूनिवर्सिटी, जयपुर में करा दिया। जयपुर रहते हुए कॉलेज के दिनों में मुझे बहुत कुछ नया सीखने को मिला। मैं अपने परिवार व गांव की मशक्कत भरी दिनचर्या को हमेशा याद रखता और दिन–रात मेहनत करता। यहां कॉलेज की पढ़ाई के दौरान कई अच्छे मित्रों और एक अच्छे मार्गदर्शक (प्रो. रूप सिंह बारेठ सर) से भेंट हुई। ग्रेजुएशन में अपने कॉलेज में प्रथम स्थान प्राप्त करने के पश्चात, सर व मित्रों की हौसला–अफजाई से यूपीएससी की तैयारी शुरू कर दी। ईश्वरीय कृपा, माता पिता के आशीर्वाद, सभी की दुआओं, व सर के मार्गदर्शन से मात्र 26 वर्ष की आयु में ही सिविल सेवा परीक्षा में सफलता हासिल हो गई। परिणाम आते ही गांव पहुंचा, जहां मेरे माता पिता सहित, मेरा पूरा गांव मेरे लिए पलक पांवड़े बिछाए बैठा था। गांव की माताओं, बहनों व बुजुर्गों ने मुझे उस दिन वह अपार स्नेह दिया जिसे मैं जीवन भर नहीं भूल पाऊंगा।

भारतीय राजस्व सेवा में सफल होने के पश्चात, जब भी मैं गांव आता, अपने गांव के लोगों के उसी जीवन को पुनः देखता, तो मेरा मन अपने आप को धिक्कारता। हर बार सोचता, मैं गांव में कैसे शुरुआत करूं? कैसे अपने लोगों के जीवन स्तर में थोड़ा बहुत ही सही लेकिन, बदलाव ला सकूं ? मेरा मन गांव की माताओं, बहनों व बेटियों के प्रति कहीं ज्यादा संवेदनशील था। उनकी दैनिक मुसीबतों को कई बार सोच–सोच कर, मेरा मन क्षुब्ध हो जाता था। इसलिए मैंने मन ही मन यह निश्चय कर लिया था कि ईश्वर की कृपा से

उत्थान

यदि मैं गांव में कोई भी सकारात्मक शुरुआत कर पाने में सफल हो पाया, तो सबसे पहले अपनी बहनों व माताओं के लिए करूंगा। इसी बीच एक कार्यक्रम के दौरान, मेरी मुलाकात प्रोफेसर प्रियानंद अगले सर से हुई, जिन्होंने मेरे संकल्पों को और ताकत दी। श्री अगले सर, देश की एक जानी मानी गैर–सरकारी संस्था "इको नीड्स फाउण्डेशन" के फाउंडर मेंबर व इस संस्था के वर्तमान अध्यक्ष हैं। अगले सर से मैंने अपने विचारों व गांव के लिए कुछ रचनात्मक शुरुआत करने की सोच को साझा किया और बताया कि कैसे शौचालयों के अभाव में आज भी मेरे गांव में माताएं, बहनें व बेटियां खुले में शौच जाने के लिए मजबूर हैं। अगले सर ने भी अपने सकारात्मक, उत्साही विचारों से मुझे प्रभावित किया और उनके द्वारा संस्था की ओर से हर संभव सहयोग के आश्वासन ने मुझे अपने गांव में शुरुआत का एक बड़ा अवसर दे दिया ।

इस मुलाकात ने मेरे सपनों को और मजबूती दी। बस फिर क्या था, हमने मिलकर गांव के पंच स्थल 'अथाई' पर गांव वालों की एक मीटिंग बुलाई, इस खास मीटिंग में हर घर से एक सदस्य को उपस्थिति देने को कहा गया। अगले ही दिन 1 मई 2014 को गांव की महिलाओं की भी एक मीटिंग बुलाई गई, जिसमें गांव की महिलाओं की समस्याओं को नजदीक से समझने की कोशिश की गई। मीटिंग के दौरान, गांव की महिलाओं से सामाजिक बदलाव में भागीदारी निभाने की अपील की गई। यह मीटिंग, क्षेत्र की अब तक की सबसे पहली महिला पंचायत के रूप में जानी गई। इस प्रकार मेरे गांव में बदलाव की नींव रखी गई और इसके बाद कई अन्य छोटी–छोटी मीटिंग रखकर गांव के लोगों को इस बदलाव में हाथ बंटाने के लिए प्रेरित किया गया। संपूर्ण ग्राम विकास की कार्य योजना तैयार की गई और उस पर काम शुरू हो गया।

गांव के लोगों ने भी मुझे निराश नहीं किया। गांव वासियों ने आगे आकर हर मीटिंग में उत्साह के साथ भाग लिया और कंधे से कंधा मिलाकर अपने त्याग और सहयोगात्मक रवैये का परिचय दिया। गांव के सरपंच, स्थानीय प्रशासन और लोगों की सक्रिय जन–भागीदारी ने एक ऐतिहासिक कहानी को गढ़ना शुरू कर दिया। इन सब प्रयासों ने, मातृभूमि के प्रति मेरे सपनों रूपी कैनवास में रंग भरना शुरू कर दिया।

आज गांव में लगभग 822 टॉयलेट्स निर्माण के साथ, हर घर में टॉयलेट बने हैं जिन्हें इंस्पेक्शन चेंबर और मेन होल्स के जरिए लगभग 2 किलोमीटर लंबी और 450 मिलीमीटर व्यास की सीवरेज लाइन से जोड़ा गया है। गांव से बाहर एक तरफ सीवेज ट्रीटमेंट प्लांट भी

बनाया गया है ताकि इस पानी को सिंचाई के लिए काम लिया जा सके। जल संरक्षण को ध्यान में रखते हुए परकोलेशन टैंक सिस्टम विकसित किया गया है। मानव निर्मित 3 किलोमीटर नहर बनाई गई है, जिसे 8 परकोलेशन टैंक के माध्यम से जोड़ा गया है। एक अनुमान के अनुसार इस व्यवस्था से इस गांव की भूमि में प्रतिवर्ष 97.49 मिलियन लीटर पानी रिचार्ज होता है। गांव के मुख्य रास्ते के साथ–साथ इसे जोड़ने वाले विभिन्न आंतरिक रास्तों अथवा गलियों से अतिक्रमण हटा कर उन्हें 8–10 फीट चौड़ाई की जगह अब 20–25 फीट चौड़ा कर दिया गया है और इनमें लगभग 2.3 किलोमीटर लंबी, उच्च कोटि की सीमेंटेड सड़कें बनाई गई हैं। ग्राम वासियों ने मिलकर स्थानीय देवता भूमिया बाबा का भी नया मंदिर बना कर प्राण प्रतिष्ठा करवाई है। गांव में लगभग 300 लोगों के बैठने की क्षमता वाला कम्युनिटी सेंटर भी बनकर तैयार हो गया है। इसके लिए गांव के हर सरकारी कर्मचारी और भामाशाहों ने स्वप्रेरणा से ग्राम विकास समिति में अपना योगदान दिया है ताकि उनका गांव विकास के पथ पर पीछे ना रह सके और गांव के बच्चों के सपने साकार हो सकें। गांव में प्रवेश करने के साथ ही प्रशासन और जन सहयोग से निर्मित 20–25 फीट चौड़ा गौरव पथ हर आने वाले का मन मोह लेता है। गांव की गलियों में रोशनी के लिए सोलर लाइट लगाई गई हैं। गांव के स्कूल में बच्चियों के लिए आधुनिक शौचालयों का निर्माण किया गया है। गांव के बच्चों को कंप्यूटर की शिक्षा देने की व्यवस्था भी की गई है। गांव व आसपास के होनहार बच्चों को गांव में ही स्तरीय प्रतियोगी परीक्षाओं की तैयारी के लिए "उत्थान कोचिंग संस्थान" की शुरुआत हो चुकी है।

गांव की गलियों में, घरों की बाहरी दीवारों पर बने भित्ति चित्र, स्लोगन और प्रेरक पंक्तियां गांव की सुंदरता बढ़ाने के साथ–साथ गांव के बच्चों और युवाओं में प्रेरणा व सकारात्मक माहौल को जन्म देती हैं। गांव की गलियों को सुंदर व स्वच्छ बनाए रखने के लिए गांव वासियों ने स्वयं आगे आकर ऐसी व्यवस्थाओं को जन्म दिया है कि हर घर के सदस्य का यह नैतिक दायित्व होगा कि वह अपने घर के सामने और आसपास स्वच्छता पर ध्यान देगा। कोई भी ग्रामीण पशुओं को सड़क पर बाँध कर अथवा अन्य सामान सड़क पर रखकर राहगीरों के आवागमन में बाधा नहीं बनेगा। गांव की सड़कों पर चलते समय अपने पशु, वाहन अथवा अन्य किसी कारण से यदि कचरा अथवा गंदगी फैलती है तो उसे हटाने की जिम्मेदारी भी उक्त व्यक्ति की रखी गई है। नियमों की पालना नहीं करने पर फाइन अथवा दंड की व्यवस्था भी

रखी गई है। गांव की सभी व्यवस्थाओं के सुचारु रुप से संचालन के लिए गांव की 3क मैपिंग भी की जा चुकी है। गांव वालों ने पर्यावरण संरक्षण के लिए अनूठी पहल शुरू करते हुए, यह निर्णय लिया है कि गांव में किसी की मृत्यु होने पर मृतक का परिवार श्मशान घाट में वृक्षारोपण करेगा। उस पेड़ को संभालने और बड़ा करने की जिम्मेदारी भी उस परिवार को दी गई हैद्य आज गाँव में पुस्तकालय, मेडिटेशन सेंटर और इनफार्मेशन सेंटर हैं। अभी भी कुछ कार्य ऐसे हैं जिनका किया जाना बाकी है– ग्रामीण कौशल विकास प्रशिक्षण केंद्र, वाई–फाई फैसिलिटी, CCTV सर्विलांस, वर्चुअल क्लास रूम, e-learning, e-library और गांव में डेयरी प्लांट जैसी कई महत्वपूर्ण योजनाएं मूर्त रूप लेना बाकी हैं। गांव में आयुर्वेद औषधालय की स्वीकृति भी प्रशासन से मिल चुकी है। वर्तमान में, गांव में कोई पुलिस केस दर्ज न होने के कारण, जिला प्रशासन द्वारा गांव को "क्राइम फ्री विलेज" घोषित किया गया है। हर घर में टॉयलेट बनने से जिला प्रशासन द्वारा धनौरा को पहली व्क्थ् (Open Defecation Free) पंचायत घोषित किया गया है। राजस्थान सरकार ने स्मार्ट विलेज मॉडल को अपनाकर, स्मार्ट विलेज योजना राज्य में शुरू की है। राज्य सरकार द्वारा धनौरा ग्राम पंचायत को राज्य स्तरीय पंचायत अवार्ड से भी सम्मानित किया है। आज मेरे गांव में ग्राम विकास समिति के गठन के साथ–साथ गांव का हर बच्चा, युवा, महिलाएं और बुजुर्ग अपने गांव की तरक्की के लिए हरसंभव सहयोग देने को लालायित हैं।

आज मेरे गांव की पहचान न केवल धौलपुर में बल्कि राजस्थान के बाहर भी जा पहुंची है। पिछले वर्ष जुलाई 2018 में, विज्ञान भवन, नई दिल्ली में आयोजित हुए एक कार्यक्रम में, मेरे गांव को देश के मॉडल विलेज की कैटेगरी में प्रथम स्थान से नवाजा जाना और माननीय प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी जी के कर कमलों से पुरस्कृत किया जाना, व्यक्तिगत तौर पर मेरे और मेरे गांव वासियों के लिए अविस्मरणीय पल था। यह पल मुझे मेरी मातृभूमि के लिए और अधिक उत्साह व ऊर्जा के साथ काम करने के लिए प्रेरित करते हैं। आज लोग उत्सुकतावश धनौरा गांव में हुए कार्यों को जानना चाहते हैं। गांव को देखने की जिज्ञासा मन में रखते हैं। मुझे गर्व होता है यह कहते हुए कि स्थानीय अखबारों के साथ–साथ मेरे गांव की स्टोरी राष्ट्रीय मीडिया में भी कई बार जगह आ चुकी है । गांव में हुए बदलावों और गांव वासियों के अपार सहयोग ने "सोच बदलो गांव बदलो अभियान" को जन्म दिया। यही वजह है कि आज न केवल मेरा गाँव "धनौरा" आगे बढ़ रहा है बल्कि, इसकी प्रेरणा से कई गांवों में युवाओं ने ग्राम विकास का बिगुल बजा दिया है। ग्राम विकास व सामाजिक सुधार की गतिविधियों ने जोर पकड़ा है। इस तरह मेरे सपनों की मातृभूमि का मेरा सपना साकार होता हुआ नजर आ रहा है लेकिन, इसका श्रेय मेरे सभी ग्राम वासियों के त्याग और कड़ी मेहनत को भी जाता है और साथ ही साथ सोच बदलो गांव बदलो टीम से जुड़े हर एक कार्यकर्ता को, जो कि मुझे निरंतर अपनी मातृभूमि के लिए अनवरत कार्य करने की प्रेरणा देते हैं।

डॉ. सत्यपाल सिंह मीना
संयुक्त आयकर आयुक्त
SBGBT

गहराता जल संकट , संभावित उपाय व हमारी भूमिका

जल, मानव जीवन की बुनियादी आवश्यकता है। बचपन में, गांव में जब सुना था कि शहर में पीने का पानी भी मोल में मिलता है तब बड़ा आश्चर्य हुआ करता था लेकिन, जब मैं सर्वप्रथम शहर गया तो वहाँ देखा कि वास्तव में शहरों में पानी का मासिक बिल जमा कराने पर भी नल 2 या 3 दिनों में आता है जोकि पेयजल आवश्यकता के हिसाब से अपर्याप्त होता है। इसके बाद जब मैं अपनी पढ़ाई के सिलसिले में दिल्ली गया तो वहाँ देखा कि यहां तो पेयजल आपूर्ति उद्योग में तब्दील हो चुकी है और महसूस किया कि पेयजल की समस्या आज वाकई अत्यधिक गंभीर है।

सूखा, भूकंप के समान अचानक घटित न होकर, धीरे–धीरे आगे बढ़ता है। जनसंख्या विस्फोट, जल संसाधनों का अति उपयोग / दुरुपयोग, पर्यावरण की क्षति तथा जल प्रबंधन की दुर्व्यवस्था के कारण भारत के कई राज्य आज जल संकट की त्रासदी भोग रहे हैं। स्वतंत्रता के बाद, देश ने काफी वैज्ञानिक एवं तकनीकी प्रगति की है। सूचना प्रौद्योगिकी में यह अग्रणी देश बन गया है लेकिन, सभी के लिए जल की व्यवस्था करने में अभी भी पीछे है। जल संकट का एकमात्र कारण यह नहीं है कि वर्षा की मात्रा निरंतर कम होती जा रही है। इजराइल जैसे देशों में जहाँ वर्षा का औसत 25 से.मी. से भी कम है, वहाँ भी जीवन चल रहा है। वहाँ जल की एक बूँद भी व्यर्थ नहीं जाती। वहाँ जल प्रबंधन तकनीक, अति विकसित होकर जल की कमी का आभास नहीं होने देती। यह उल्लेखनीय है कि भारत में लगभग 15 प्रतिशत जल का उपयोग होता है, शेष जल बहकर समुद्र में चला जाता है। शहरों एवं उद्योगों से निकलने वाले अपशिष्ट पदार्थ नदियों के जल को प्रदूषित करके पीने योग्य नहीं रहने देते। आज भी देश में कई बीमारियों का एकमात्र कारण प्रदूषित जल है।

यदि आंकड़ों की दृष्टि से देखा जाए देखा जाए तो नीति आयोग की रिपोर्ट के अनुसार भारत में वर्ष 2020 तक 21 शहरों में गंभीर पेयजल की समस्या उत्पन्न होगी। तथा वर्ष 2030 तक 40% जनसंख्या को पेयजल संकट की समस्या का सामना करना पड़ेगा। वर्तमान में भारत में 70% जल भंडार प्रदूषित हो चुके हैं। जल, एक

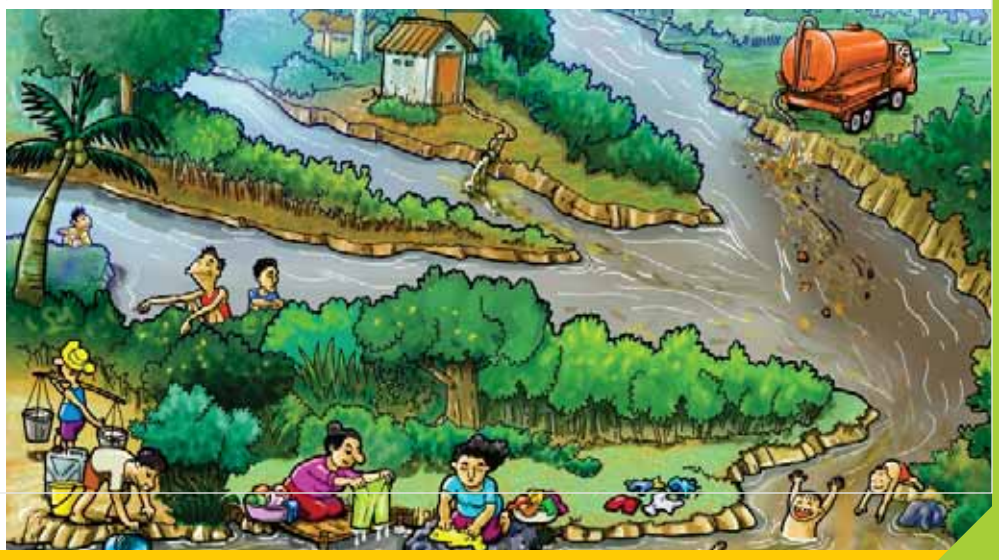

उत्थान

प्राकृतिक संसाधन है जो प्रकृति द्वारा प्रदत्त है इसे बनाया नहीं जा सकता। यद्यपि, भारत में विश्व की 18% जनसंख्या निवास करती है, वहीं जल संसाधन विश्व का केवल 4% है । अभी तक जल संकट के नाम पर राजस्थान और महाराष्ट्र की खबर आती थी लेकिन आज शिमला जैसे पहाड़ी शहर तथा चेन्नई जैसे तटीय शहरों में भी पेयजल संकट उत्पन्न हो चुका है, जोकि एक भयावह भविष्य की ओर संकेत करता है।

यदि भारत में जल संकट के लिए उत्तरदायी कारणों पर चर्चा की जाए, तो निम्नलिखित कारण सामने आते हैं–

1. देश में कानून के तहत भूमि के मालिक को जल का भी मालिकाना हक दिया जाता है जबकि भूमिगत जल साझा संसाधन है।
2. बोरवेल प्रौद्योगिकी से धरती के गर्भ से अंधाधुंध जल खींचा जा रहा है। जितना जल वर्षा से पृथ्वी में समाता है, उससे अधिक हम निकाल रहे हैं।
3. साफ एवं स्वच्छ जल भी प्रदूषित होता जा रहा है।
4. जल भंडार अतिक्रमण की चपेट में आ गए हैं जिसके कारण वर्तमान में वर्षा जल का संचय नहीं हो पा रहा है
5. अत्यधिक शहरीकरण से वर्षा जल बिना किसी उपयोग के बह जाता है। जल संरक्षण, जल का सही ढंग से इस्तेमाल, जल का पुनः इस्तेमाल और भूजल की रिचार्जिंग पर समुचित ध्यान नहीं दिया जा रहा है।
6. राजनैतिक एवं प्रशासनिक इच्छाशक्ति की कमी, गलत प्राथमिकताएँ, जनता की उदासीनता एवं सबसे प्रमुख ऊपर से नीचे तक फैली भ्रष्टाचार की संस्कृति। जल संसाधन वृद्धि योजनाओं पर करोड़ों रुपए खर्च करने के बावजूद समस्याग्रस्त गाँवों की संख्या उतनी की उतनी ही बनी रहती है।

वास्तव में देखा जाए तो हमारे यहां जल व अन्य प्राकृतिक संसाधनों के उपयोग व समाज तथा अर्थव्यवस्था में कोई अंतर संबंध नहीं दिखाई देता। यही कारण है कि हम भूमि को जल से अधिक महत्व देते हैं। जल निकायों पर अतिक्रमण बढ़ता जा रहा है यदि हम चेन्नई की बात करें तो यहां एक समय छोटे–बड़े करीब 30,000 जलाशय थे जोकि अब अतिक्रमण की चपेट में आ चुके हैं और पेयजल संकट भी इसी की देन है।

इस प्रकार जल संकट के कारणों का विश्लेषण किया जाए तो अभी तक हमारे द्वारा जल का उपयोग, अनुशासित ढंग से नहीं कर पाना भी इसका एक बड़ा कारण है। जल व अन्य प्राकृतिक संसाधनों का अंधाधुंध

दोहन करने की हमारी मानसिकता भी जल संकट में उत्तरदायी है। जल की पर्याप्तता वाले स्थानों पर जल की महत्ता के बारे में जागरूकता का अभाव है। एक आँकड़े के अनुसार यदि हम अपने देश के जमीनी क्षेत्रफल में से मात्र 5 प्रतिशत में ही गिरने वाले वर्षा के जल का संग्रहण कर सके तो एक बिलियन लोगों को 100 लीटर पानी प्रति व्यक्ति प्रतिदिन मिल सकता है।

जल संकट के निदान के लिए आवश्यक प्रयास–

जल संवर्धन / संरक्षण के परंपरागत तरीकों की ओर विशेष ध्यानाकर्षण करना।

जल संकट के समाधान के लिए हमें हमारी परंपरागत जल संरक्षण पद्धति जैसे तालाब व जोहड़ का निर्माण करवाना होगा। अभी तक हम केवल कुल वर्षा जल का 8% ही संचय कर पाते हैं ।

जल, जमीन और जंगल तीनों एक–दूसरे से गहराई से जुड़े हुए हैं। इन्हें एक साथ देखने, समझने और प्रबंधन करने की आवश्यकता है। पानी के व्यर्थ उपभोग को कम करने के साथ–साथ व्यर्थ हुए पानी का पुनर्चक्रण तथा पुनः उपयोग को बढ़ावा दिया जाना चाहिए ।

जल का संस्कार समाज में हर व्यक्ति को बचपन से ही स्कूलों में दिया जाना चाहिए। जल संवर्धन / संरक्षण कार्य को सामाजिक संस्कारों से जोड़ा जाना चाहिए। तालाबों और अन्य जल संसाधनों पर समाज का सामूहिक अधिकार होना चाहिए। अतः इनके निजीकरण पर रोक लगनी चाहिए।

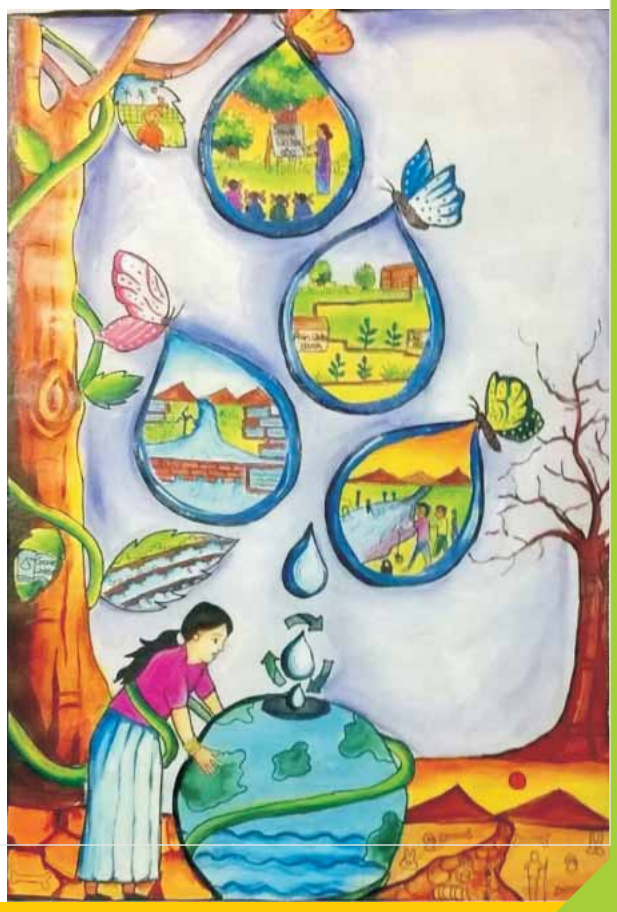

भूजल दोहन अनियंत्रित तरीके से न हो, इसके लिए आवश्यक कानून बनना चाहिए। जल संरक्षण के लिए किए जाने वाले प्रयास ग्राम पंचायत स्तर पर किए जाने चाहिए। इसमें गांव के सभी लोगों को जागरूक बनाकर तथा जलीय निकाय को अतिक्रमण से मुक्त करने जैसे प्रयास किए जा सकते है।

हेतु मांग रख सकते हैं। इस दिशा में सोच बदलो गांव बदलो टीम द्वारा किए जा रहे प्रयास सराहनीय हैं। जल संरक्षण के लिए स्थानीय स्तर पर देखा जाए तो सोक पिट का निर्माण महत्वपूर्ण साबित हो सकता है क्योंकि इससे एक तरफ जहां कम लागत आएगी , वही पानी की समस्या का स्थानीय स्तर पर समाधान हो सकेगा।

कई राज्यों में पानी के अधिकार की बात होने लगी है जोकि जीवन जीने के लिए अनिवार्य मूलभूत आवश्यकता भी है किंतु साथ ही हमें जल संसाधन के उचित उपयोग व संरक्षण के लिए अपने कर्तव्य को भी उसी जिम्मेदारी के साथ निभाना पड़ेगा। जल संकट के लिए उत्तरदायी कारणों में अनुपयुक्त ढंग से क्रॉपिंग पेटर्न का अनुसरण किया जाना भी शामिल किया जा सकता है । इसका उदाहरण महाराष्ट्र में गन्ने की खेती में अत्यधिक जल का उपयोग होना है जिसके कारण वहां जल संकट की समस्या लगभग प्रत्येक वर्ष विद्यमान रहती हैं। अतः हमें सोचना होगा कि क्षेत्र विशेष में स्थानीय पर्यावरण दशाओं तथा भूमिगत जल के भंडार के अनुसार ही कृषि पद्धति का अनुसरण किया जाए ।

नदियों और नालों पर चैक डैम बनाए जाए, खेतों में वर्षा पानी को संग्रहीत किया जाए। मानसून के सीजन में अत्यधिक वर्षा जल बिना उपयोग में लाए बह जाता है । इसके लिए हमें प्रत्येक घरों व कार्यालयों में वर्षा जल संरक्षण की पद्धति का उपयोग किया जाना चाहिए।

साथ ही किसी मीटिंग/सभा में या यात्रा करते समय प्लास्टिक की बोतलों में पानी के उपयोग के स्थान पर अन्य विकल्पों का उपयोग किया ना सकता है जिससे अनुपयोगी पानी को फेंकने के स्थान पर उसे उपयोग में लाया जा सके तथा प्लास्टिक से होने वाले पर्यावरणीय प्रदूषण को भी कम किया जा सकता है ।

नदियों और तालाबों को प्रदूषण मुक्त रखा जाए। भारत में धार्मिक दृष्टि से देखा जाए तो एक तरफ नदियों को देवी/माँ का रूप दिया है लेकिन, वहीं धार्मिक क्रियकलापों से नदी प्रदूषण को बढ़ावा दिया जा रहा है । हमें ऐसी गतिविधियों को रोकना होगा जोकि हमारे अस्तित्व पर ही संकट उत्पन्न कर रही हैं, चाहे वो कितनी ही धार्मिक महत्व की क्यों न हो क्योंकि प्रकृति के सम्मान पर ही हमारा अस्तित्व है।

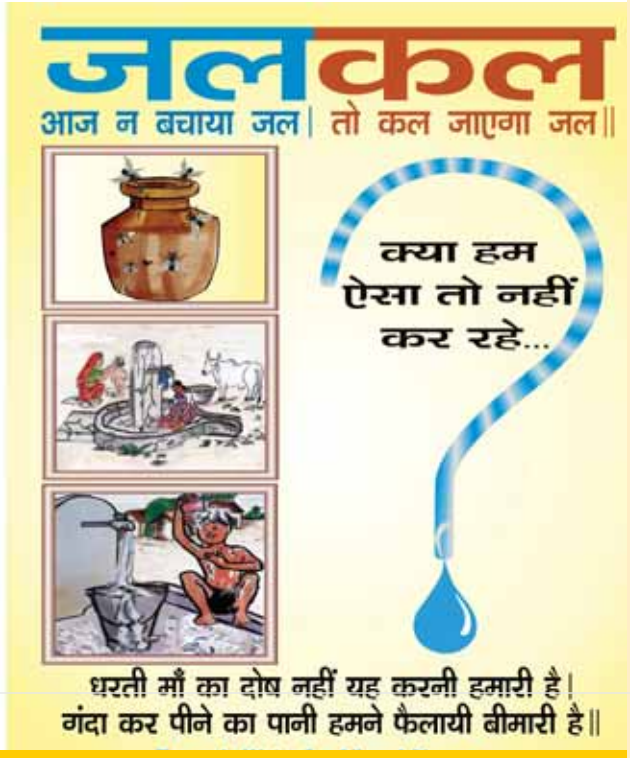

दैनिक दिनचर्या में जल की बचत

- दंत मंजन करते वक्त नल खोलकर रखने की आदत से 33 लीटर पानी व्यर्थ बहता है जबकि एक मग में पानी लेकर दंत मंजन किया जाए तो सिर्फ 1 लीटर पानी ही खर्च होता है।
- दाढ़ी बनाते वक्त नल को खुला रखते हैं तो ऐसा करके लोग 11 लीटर पानी बर्बाद करते हैं जबकि वे यह काम एक मग लेकर करें तो सिर्फ 1 लीटर में हो सकता है।
- शौचालय में फ्लश टेंक का उपयोग करने में एक बार में 13 लीटर पानी का प्रयोग होता है जबकि यही काम छोटी बाल्टी से किया जाए तो सिर्फ चार लीटर पानी से यह काम हो जाता है।
- फव्वारे से या नल से सीधा स्नान करने पर लगभग 180 लीटर पानी का प्रयोग होता है जबकि बाल्टी से स्नान करने पर सिर्फ 18 लीटर पानी प्रयोग में आता है।
- महिलाएं जब घरों में कपड़े धोती हैं तो नल खुला रखना आम बात है ऐसा करते वक्त 166 लीटर पानी बर्बाद होता है जबकि एक बाल्टी में पानी लेकर कपड़े धोने पर 18 लीटर पानी में ही यह काम हो जाता है।
- प्रत्येक घर में चाहे गांव हो या शहर पानी के लिए टोंटी जरूर होती है और प्रायः यह देखा गया है कि इस टोंटी या नल या टेप के प्रति लोगों में अनदेखा भाव होता है। यह टोंटी अधिकांशतः टपकती रहती है और किसी भी व्यक्ति का ध्यान इस ओर नहीं जाता है। प्रति सेकंड नल से टपकती जल बूंद से एक दिन में 17 लीटर जल का अपव्यय होता है और इस तरह हजारों लीटर जल सिर्फ टपकते नल से बर्बाद हो जाता है। अब अगर इस टपकते नल के प्रति संवेदना उत्पन्न हो जाए और जल के प्रति अपनत्व का भाव आ जाए तो हम हजारो लीटर जल की बर्बाद को रोक सकते हैं।

जल संरक्षण की दिशा में राजस्थान व अन्य प्रदेशों में प्रचलित पद्धतियां जैसे जोहड़, छोटे एनीकट, चेक डैम तथा कुंडो का निर्माण एक अनुकरणीय उदाहरण प्रस्तुत करते हैं । इसके माध्यम से वर्षा जल को संचित कर खेती में उपयोग लाया जा सकता है । इसमें लागत भी बहुत कम आती है और खेती में उत्पादन भी बढ़ाया जा सकता

हैं। इसमें एक अतिरिक्त प्रयास यह किया जा सकता है कि कुंडों से खेतों में जल सिंचाई के लिए डीजल पंप की जगह सोलर पंप का उपयोग किया जा सकता है जिसके लिए राजस्थान सरकार द्वारा सब्सिडी भी दी जाती है।

इसी प्रकार का एक उदाहरण, आदर्श गांव 'धनौरा' में भी है, जहां सीवेज ट्रीटमेंट के माध्यम से पुनर्चक्रित पानी का उपयोग सिंचाई हेतु किया जा रहा है । हमारे गावों में भी सूखे पड़े कुओं को रेन वॉटर हार्वेस्टिंग के लिए उपयोग में लाया जा सकता है । जिनके माध्यम से अशुद्घ जल को कम लागत में पुनः उपयोग में लाया जा सकता है। इसमें श्री प्रियानंद अगले सर द्वारा इको नीड्स फाउंडेशन के माध्यम से जल शुद्धीकरण के लिए किए गए प्रयास सराहनीय है।

हमारे देश में अनेक समाजसेवी, सरकारी सहायता की अपेक्षा के बिना ही जल संरक्षण एवं जल संग्रहण जैसे पुनीत कार्य में जुट गए हैं। औरंगाबाद (महाराष्ट्र) जिले के रालेगाँव सिद्धी के श्री अन्ना हजारे, हिमालय क्षेत्र के श्री सुन्दरलाल बहुगुणा और उनका अभियान तथा रेमन मैगसेसे पुरस्कार से सम्मानित तरुण भारत संघ, राजस्थान के श्री राजेन्द्र सिंह आदि के अथक प्रयासों ने यह सिद्ध कर दिखाया है कि जल संकट के समाधान में पूरे समुदाय की संलग्नता से कोई भी कार्य असंभव नहीं है।

पश्चिमी गुजरात में बिचियावाड़ा नामक गाँव में लोगों ने मिलकर 12 चैक बाँध बनाए हैं। इन बाँधों पर डेढ़ लाख रुपए की लागत आई। इन बाँधों से वे 3000 एकड़ भूमि की आसानी से सिंचाई कर सकते हैं। इसी तरह भावनगर जिले के खोपाला गाँव के लोगों ने 210 छोटे–छोटे बाँध बनाए हैं। इनके परिणाम भी शीघ्र सामने आ गए हैं। औसत से भी कम वर्षा होने पर भी यहाँ की नहरें वर्ष भर ऊपर तक भरी रहती हैं।

मध्य प्रदेश में जनभागीदारी से उज्जैन जिले में डबरियां बनाकर खेती के पानी की व्यवस्था करने का प्रयोग अनूठा है। खेत का पानी खेत में रोकने की सरंचना का नाम 'डबरी' है। एक डबरी बनाने में लगभग 33 फुट चौड़ा, 66 फुट लंबा तथा 5 फुट गहरा गड्ढा खोदा जाता है तथा मिट्टी व पत्थर से पीचिंग तैयार की जाती है। इसमें पानी को एकत्रित कर खेत की जरूरत पूरी हो सकती है। पानी रोकने पर आस–पास का भूजल स्तर भी अपने–आप बढ़ जाता है। डबरी अभियान इसलिए सराहनीय है कि इसमें किसान को अपनी जमीन पर स्वयं ही डबरी बनाना है। डबरी का

छत वर्षा जल संग्रहण टांका

प्रबंध तथा उपयोग भी वह स्वयं ही करने वाला है। निजीकरण का यह एक अच्छा उदाहरण है। इसमें आधुनिक यंत्रीकृत तकनीकों का प्रयोग करना भी जरूरी नहीं है।

जल संरक्षण के लिए किए गए प्रयास यदि ग्राम पंचायत स्तर पर किया जाएं, तो कम लागत में अत्यधिक प्रभावशाली परिणाम आ सकता है । आज की आवश्यकता है कि यदि हम सतत विकास लक्ष्यों को प्राप्त करना चाहते हैं तो हमें स्वयं के स्तर से ही सतत जीवन शैली को अपनाना होगा जिसमें जल जैसे प्राकृतिक संसाधनों का उचित उपयोग सुनिश्चित करना होगा ताकि न केवल मनुष्यों का बल्कि अन्य जीवों का भी अस्तित्व बचा रहेगा । 'जल संरक्षण' विषय को व्यापक अभियान की तरह सरकारी और गैर सरकारी दोनों स्तरों पर प्रचारित करने की जरूरत है। जिससे छोटे, बड़े सभी इस विषय की गंभीरता को समझें और इस अभियान में अपनी भूमिका अदा करें।

अंत में जल की महत्ता को इन शब्दों में वर्णित किया जा सकता है–

"रहिमन पानी राखिए, बिन पानी सब सून,
पानी गए न उबरे, मोती, मानुष, चून।"

लोकेश मीना
सहायक आयुक्त, आयकर
SBGBT सदस्य

वर्तमान में जारी महत्वपूर्ण सरकारी योजनाओं की संक्षिप्त जानकारी

जैसा कि आप सभी जानते हैं कि केंद्र सरकार और राज्य सरकार द्वारा ग्रामीण विकास के लिए प्रत्येक ग्राम पंचायत को अनुमानतः 1 करोड़ से लेकर 2 करोड़ रुपयों तक का बजट प्रतिवर्ष आवंटित किया जाता है लेकिन, जनजागरूकता और जनसहभागिता के बिना ग्रामीण विकास का सपना आज भी साकार नहीं हो पा रहा है।

सोच बदलो गांव बदलो टीम का यह मानना है कि आज लोगों में जागरूकता और विकास के लिए जन चेतना पैदा करने की जरूरत है। लोगों को विकास में सक्रिय भागीदारी निभाने के लिए प्रेरित करने की जरूरत है। तभी सरकार के प्रयासों को ताकत मिलेगी और सरकार द्वारा आवंटित बजट का समुचित लाभ ग्रामीण क्षेत्रों को मिल सकेगा। इसके लिए सबसे बड़ी जरूरत है कि हमारे देश का वर्तमान और भविष्य कही जाने वाली युवा पीढ़ी आगे आए और अपनी ऊर्जा को सकारात्मक कार्य में लगाए।

ग्रामीण विकास की पहली सीढ़ी, ग्राम पंचायत है। ग्राम सभा का आयोजन और उसके द्वारा ग्राम विकास की चर्चा और वार्षिक प्लान तैयार करना, किसी भी पंचायत और गांव के विकास के लिए अत्यंत आवश्यक है।

नियमों के मुताबिक, प्रत्येक साल में कम से कम 2 बार ग्राम पंचायत की बैठक बुलाना अनिवार्य होता है। यदि किसी ग्राम पंचायत में ग्राम सभा का आयोजन नहीं किया जाता है तो इसकी सूचना प्रशासनिक अधिकारियों

तथा जनप्रतिनिधियों को दी जाए द्य प्रत्येक ग्राम पंचायत द्वारा ग्राम सभा की बैठक में अनुमोदन कर वार्षिक प्लान बनाया जाता है, जिसे प्रत्येक वर्ष 28 फरवरी तक ग्राम पंचायत से प्रेषित किया जाता है।

सच्चे अर्थों में, ग्रामीण विकास के लिए सर्वप्रथम गांव के सभी जागरूक युवा सदस्यों और गाँव विकास समिति के सदस्यों के द्वारा ग्राम सभा में भागीदारी सुनिश्चित की जाए, जिसमें गाँव की मुख्य समस्याओं और आगामी साल में कराए जाने वाले विकास कार्यों की सर्वसम्मति से एक सूची बनाई जाए।

इसके बाद सरपंच और ग्राम पंचायत के सदस्यों के साथ मिलकर, प्रत्येक वर्ष जनवरी और फरवरी में, अपने–अपने गांवों की आगामी साल में कराए जाने वाले कार्यों की सूची को, आगामी साल के वार्षिक प्लान में शामिल करवाया जाए, तभी हम अपने गांवों में विकास कार्य सही से अंजाम दे सकते हैं।

आइए, ग्राम पंचायतों से जुड़ी केंद्र और राज्य सरकार द्वारा संचालित कुछ योजनाओं पर एक नज़र डालते हैं–

1. चौदहवां वित्त आयोग

14 वें वित्त आयोग (FFC) के तहत भारत सरकार द्वारा ग्राम पंचायत के विकास हेतु शत् प्रतिशत राशि ग्राम पंचायतों को सीधे ही हस्तांतरित किए जाने के प्रावधान हैं, जिससे जमीनी स्तर पर नागरिकों की बुनियादी न्यूनतम जरूरतों की पूर्ति हो सके।

14 वें वित्त आयोग (FFC) के तहत लगभग प्रत्येक ग्राम पंचायतों को अनुमानतः 25 से 30 लाख रुपये का बजट आवंटित होता है, जिसके तहत गांवों में पेयजल उपलब्धता के लिए सिंगलफेस बोरिंग, हैंडपम्प और पेयजल टंकियां का निर्माण और शौचालयों का निर्माण जैसे विभिन्न कार्य कराए जाते हैं।

2. पंचम राज्य वित्त आयोग

इसके तहत राज्य सरकार द्वारा अनुमानतः 15 से 20 लाख रुपये आवंटित किया जाते हैं, जिसमें ग्राम पंचायत निम्नांकित कार्य संपादित कर सकती हैं–

i. ठोस कचरा प्रबंधन से संबंधित कार्य।
ii. गलियों एवं सड़कों पर प्रकाश व्यवस्था।
iii. शवदाह एवं कब्रिस्तान का रख–रखाव।
iv. पेयजल आपूर्ति।
v. स्वच्छता (जिसमें व्यक्तिगत/सार्वजनिक शौचालयों, मूत्रालयों का निर्माण शामिल है) एवं सफाई व्यवस्था।

जिन्दगी तब बेहतर होती है, जब हम खुश होते हैं
लेकिन जिन्दगी तब और बेहतरीन हो जाती है
जब हमारी वजह से लोग खुश होते हैं।

3. महात्मा गांधी राष्ट्रीय ग्रामीण रोजगार गारंटी अधिनियम (MNREGA) –

MNREGA के तहत भारत सरकार लगभग प्रत्येक ग्राम पंचायत को लगभग 60 लाख से 1 करोड़ रुपये का बजट आवंटित करती है, जिसमें मुख्यतः निम्नलिखित कार्य कराये जाते है –

i. जल संरक्षण के तहत नवीन तालाब निर्माण और छोटे–छोटे एनीकटों का निर्माण।

ii. सूखे की रोकथाम के तहत वृक्षारोपण।

iii. भूमि विकास के तहत मेड बंदी और भूमि समतलीकरण।

iv. इंदिरा आवास योजना के तहत विभिन्न तरह के आवास निर्माण।

v. ग्रामीण सम्पर्क मार्ग जैसे इंटरलॉकिंग सड़क, खरंजा निर्माण, नाली निर्माण और RCC रोड निर्माण।

vi. सरकारी विद्यालयों में खेल मैदान का निर्माण और ग्राम पंचायत मुख्यालय पर अनाज भंडार गोदाम निर्माण इत्यादि। ऐसे अनेक कार्य किये जाते हैं, जिनसे गांवों की तस्वीर ही बदल सकती है।

प्रत्येक वर्ष 2 अक्टूबर को गांधी जयंती के अवसर पर प्रत्येक ग्राम पंचायत में बैठक बुलाई जाती है। अक्टूबर और नवंबर के महीनों में MNREG। का आगामी वर्ष का, वार्षिक प्लान बनाया जाता है जिसको दिसंबर माह के प्रथम सप्ताह तक पंचायत समिति को भेज दिया जाता है। इसलिए प्रत्येक गाँव के जागरूक युवक और गाँव विकास समिति के सदस्यों के द्वारा गाँव वालों के साथ मीटिंग कर सर्वसम्मति से MNREG। के तहत होने वाले कार्यों की सूची 2 अक्टूबर से पहले ही तैयार करवा ली जानी चाहिए। इसके बाद सरपंच और ग्राम पंचायत के सदस्यों के जरिए उक्त सूची को वार्षिक प्लान में शामिल करवाकर, ग्राम सभा में अनुमोदन करवाया जाना चाहिए।

4. डाँग क्षेत्रीय विकास योजना

राज्य सरकार द्वारा डाँग क्षेत्रों में व्याप्त पिछडेपन को देखते हुए धौलपुर, करौली, सवाईमाधोपुर, भरतपुर, कोटा, बूंदी, बांरा, झालावाड़ जिलों की 22 पंचायत समितियों को शामिल किया गया है। इसके तहत चिन्हित ग्राम पंचायतों में निम्नलिखित कार्य किए जाते है –

i. ग्राम स्वच्छता एवं स्वच्छ पेयजल के तहत नाली एवं कचरा प्रबंधन, शौचालय निर्माण और गाँवों में स्वच्छ पेयजल की उपलब्धता सुनिश्चित करना।

ii. सामुदायिक एवं प्राथमिक स्वास्थ्य केन्द्रों और सरकारी विद्यालयों में विदद्युत आपूर्ति, पंखे, फर्नीचर, बेड, प्रयोगशाला उपकरण एवं जांच मशीन उपलब्ध कराना, अतिरिक्त भवनों का निर्माण, आरओ प्लांट लगाना, शौचालय निर्माण और पेयजल और आवागमन की सुविधा उपलब्ध कराना, खेल मैदान का निर्माण करना।

iii. प्रत्येक गांव में सुगम आवागमन के लिए आंतरिक सड़क मय नाली, सभी राजकीय भवनों तक सड़क निर्माण और प्रत्येक गांव को मुख्य सड़क से जोड़ना। इसके अलावा प्रत्येक गाँवों में सार्वजनिक भवनों, चौपालों, धार्मिक स्थलों और आम रास्तो में रोशनी की व्यवस्था करना इत्यादि।

इस प्रकार डाँग क्षेत्रो में आधारभूत भौतिक परिसम्पत्तियों का सृजन, स्थानीय नागरिकों को रोजगार सृजन और लघु एवं कुटीर उद्योगों की स्थापना कर, डाँग क्षेत्र का समग्र विकास का लक्ष्य रखा गया है। ग्राम पंचायत द्वारा ग्राम सभा की बैठक आयोजित कर, डाँग विकास योजना के तहत होने वाले कार्यों को ग्राम पंचायत और पंचायत समिति से अनुमोदन कराकर जिला परिषद को स्वीकृति के लिए भेजा जाता है। जिला परिषद द्वारा समग्र ग्राम विकास योजना को प्रत्येक साल के अप्रैल माह में राज्य सरकार के लिए अनुमोदन के लिए भेजा जाता है।

5. सांसद एवं विधायक स्थानीय क्षेत्र विकास कार्यक्रम

प्रत्येक सांसद को अपने संसदीय क्षेत्र में विकास कार्यों हेतु प्रति वर्ष 5 करोड़ रुपये आवंटित होते हैं ' इसी प्रकार प्रत्येक विधायक को अपने विधानसभा क्षेत्र में विकास कार्यों हेतु प्रति वर्ष 2 करोड़ रुपये का बजट आवंटित होता है। ग्राम पंचायत के सरपंच व गाँव के जागरूक युवक व वरिष्ठ नागरिक मिलकर MLA से निम्नलिखित कार्यों के लिए संस्तुति करवा सकते हैं –

i. गाँवों में ग्रेवल सड़क, सीसी रोड, खरंजा एवं नाली निर्माण, डामर रोड और गाँवों के लिए संपर्क सड़क, पुलिया और रपट का कार्य, पेयजल की उपलब्धता।

ii. पुस्तकालय भवन, सामुदायिक भवन, बस स्टैंड, धर्मशाला, विश्राम घर और खेल मैदान, कब्रिस्तान की चारदीवारी एवं शमशान घाट।

iii. सरकारी विद्यालयों में आधारभूत सुविधाएं जैसे विधुत, पंखे, फर्नीचर, अतिरिक्त भवन निर्माण, कम्प्यूटर, खेल सामग्री, स्काउट सामग्री, खेल मैदान का निर्माण और स्वच्छ पेयजल के लिए R-O प्लांट एवं वाटर कूलर लगाना और शौचालयों का निर्माण कराना।

iv. सामुदायिक एवं प्राथमिक स्वास्थ्य केन्दों में बेड, प्रयोगशाला एवं चिकित्सक उपकरण एवं जांच मशीन उपलब्ध कराना, एम्बुलेंस की व्यवस्था, अतिरिक्त भवनों का निर्माण, आरओ प्लांट लगाना, शौचालय निर्माण व अन्य मूलभूत सुविधाएं की व्यवस्था करना।

v. पशु चिकित्सा के लिए चिकित्सकीय / डिस्पेन्सरी भवन निर्माण।

vi. पशु धन के लिए पीने के पानी की सुविधा करना।

vii. पारंपरिक जल स्रोतों का विकास और तालाबों की सफाई कार्य।

उपर्युक्त के अलावा ग्राम पंचायत का सरपंच, प्रधान और जिला प्रमुख कोटे से भी गाँवों में आधारभूत सुविधाओं के लिए बजट की मांग कर सकता है। सांसद, विधायक, जिला प्रमुख और प्रधान की तरफ से की गई जनहित घोषणाओं के विषय में, गांव के सरपंच और गाँव के वरिष्ठ सम्मानित नागरिकों को, उक्त सभी जन प्रतिनिधियों से उनके लेटर पैड पर, उनके द्वारा की गयी घोषणा की संस्तुति करवानी चाहिए।

इसके बाद जिला परिषद के मुख्य कार्यकारी अधिकारी से प्रशासनिक एवं वित्तीय स्वीकृति जारी करवानी के प्रयास करने चाहिए और समय–समय पर फॉलोअप लेना चाहिए जब तक कि उक्त विकास कार्यों हेतु प्रशासनिक और वितीय स्वीकृति नहीं मिल जाए। एक जिम्मेदार नागरिक होने के नाते हम सब यह जिम्मेदारी बनती है कि विकास कार्य तय मानकों के अनुरूप हों। हमें ध्यान रखना चाहिए कि ग्राम विकास के लिए आया प्रत्येक नया पैसा, जनता का पैसा है और उसका सदुपयोग सुनिश्चित करना हम सब की नैतिक जिम्मेदारी है। इस प्रकार आप इस विकास प्रक्रिया में सहभागी बनकर कुछ ही वर्षों में अपने गांव सूरत बदल सकते हो।

उक्त संदर्भ में, सोच बदलो गांव बदलो टीम आप सभी से निवेदन करती है कि सरकार और प्रशासन का सहयोग करके ग्राम विकास में सहभागी बनें। आपके द्वारा जमीनी धरातल पर किए गए कार्य ही सच्चा बदलाव ला सकते हैं। केवल जनप्रतिनिधियों, प्रशासन और सरकार को कोसने से गाँवों की तकदीर नहीं बदल सकती। हमें अपने अधिकारों के लिए सजग होना होगा और तभी हम अपने गाँव, समाज और देश के लिए अपने कर्तव्यों का निर्वाह कर सकते हैं।

6. Prime Minister Employment Generation Programme (PMEGP)

दोस्तों ! हमारे गाँवों में ऐसे बेरोजगार युवाओं की संख्या दिनों दिन बढ़ती जा रही है जो कि अपनी पढ़ाई पूरी करने के पश्चात रोजगार की तलाश में इधर उधर भटक रहे हैं। ऐसे में यह सवाल अकसर उठता है कि इन युवाओं को रोजगार के साधन कैसे उपलब्ध कराए जाएँ?

कई ऐसे भी लोग हैं जिनके पास योग्यता है लेकिन, धन की कमी के कारण अपना व्यवसाय शुरू नहीं कर पाते हैं। ऐसे लोगों की सहायता कैसे की जाए? गाँवों में लघु एवं कुटीर उद्योगों को बढ़ावा कैसे दिया जाए? जिससे कि लोग गाँव में ही रहकर अपना व्यवसाय चला सकें और गाँवों से शहर की ओर पलायन को कम किया जा सके।

यहाँ हम इन सब सवालों और समस्याओं के समाधान के रूप में, भारत सरकार की एक महत्वपूर्ण योजना "प्रधानमंत्री रोजगार सृजन कार्यक्रम (PMEGP) योजना से आपको रूबरू कराते हैं –

PMEGP योजना के तहत भारत सरकार द्वारा भारत के नागरिकों के लिए उद्योग और व्यापार करने के लिए ऋण दिया जाता है। PMEGP scheme का मकसद है देश के बेरोजगार नागरिकों को नए रोजगार उपलब्ध कराना, युवाओं को व्यापार/उद्योग के लिए प्रोत्साहित करना/उन्हें मदद करना।

PMEGP योजना को राष्ट्रीय स्तर पर नोडल एजेंसी के रूप में कार्य करते हुए खादी और ग्रामोद्योग आयोग (KVIC) द्वारा कार्यान्वित किया जाता है। राज्य स्तर पर, यह योजना राज्य KVIC निदेशालय, राज्य खादी और ग्रामोद्योग बोर्ड (KVIB), जिला उद्योग केंद्र (DIC) और बैंकों के माध्यम से कार्यान्वित की जाती है। ऐसे मामलों में केवीआईसी मार्गों को सरकारी सब्सिडी के माध्यम से लाभार्थियों/उद्यमियों को सीधे उनके बैंक खातों में वितरित करने के लिए नामित करता है। विनिर्माण क्षेत्र में स्वीकार्य परियोजना/इकाई की अधिकतम लागत 25 लाख है और व्यवसाय/सेवा क्षेत्र में यह 10 लाख है। इस योजना में सामान्य श्रेणी के लिए शहरी क्षेत्र (परियोजना/इकाई का स्थान) हेतु 15 प्रतिशत और ग्रामीण क्षेत्र (परियोजना/इकाई का स्थान) हेतु 25 प्रतिशत सब्सिडी प्राप्त होती है।

अन्य केटेगरी ST/SC/OBC व अल्पसंख्यक वर्ग के लिए शहरी क्षेत्र में 25 प्रतिशत और ग्रामीण क्षेत्र में 35 प्रतिशत सब्सिडी प्राप्त होती है। कुल परियोजना लागत की शेष राशि बैंकों द्वारा सावधि ऋण और कार्यशील पूंजी के रूप में प्रदान की जाएगी।

कौन आवेदन कर सकता है?

इस योजना हेतु 18 वर्ष से ऊपर का कोई भी व्यक्ति आवेदन कर सकता है । विनिर्माण क्षेत्र में 10 लाख रुपये से अधिक की लागत वाली परियोजनाओं के लिए और व्यवसाय/सेवा क्षेत्र में 5 लाख रुपये से अधिक की लागत वाली परियोजनाओं के लिए कम से कम आठवीं कक्षा उत्तीर्ण होना जरूरी है । इस योजना के अंतर्गत, केवल नई परियोजनाओं को ही मंजूरी दी जाती है। पुराने/वर्तमान उद्योग के लिए PMEGP ऋण नहीं दिया जाता।

स्वयं सहायता समूह (बीपीएल से संबंधित लोगों सहित, बशर्ते कि उन्हें किसी अन्य योजना के तहत लाभ नहीं मिला है), संस्थाएं पंजीकरण पंजीकरण अधिनियम, 1860 के तहत पंजीकृत हैं; उत्पादन सहकारी समितियां, और धर्मार्थ ट्रस्ट भी पात्र हैं। मौजूदा इकाइयाँ (PMRY, REGP या भारत सरकार या राज्य सरकार की किसी अन्य योजना के तहत) और वे इकाइयाँ जो भारत सरकार या राज्य सरकार की किसी अन्य योजना के तहत पहले ही सरकारी सब्सिडी ले चुकी हैं, पात्र नहीं हैं।

आवेदन कैसे करें ?

KVIB के राज्य / मंडल के निदेशक, ज़िटप्ठ और संबंधित राज्यों के उद्योगों के निदेशक (क्प्ब के लिए) के साथ मिलकर स्थानीय स्तर पर प्रिंट और इलेक्ट्रॉनिक मीडिया के माध्यम से विज्ञापन देंगे, जिसमें संभावित लाभार्थियों से परियोजना प्रस्तावों के साथ–साथ उद्यम की स्थापना / सेवा इकाइयों की शुरुआत के इच्छुक हैं।

PMEGP के तहत लाभार्थी अपना आवेदन ऑनलाइन https://www.kviconline.gov.in/pmegpeportal/pmegphome/index.jsp पर भी जमा कर सकते हैं और आवेदन का प्रिंटआउट ले सकते हैं और विस्तृत परियोजना रिपोर्ट और अन्य आवश्यक दस्तावेजों के साथ संबंधित कार्यालयों में जमा कर सकते हैं ।

7. श्रमिक (मजदूर) कार्ड योजना

राजस्थान श्रमिक (मजदूर) कार्ड योजना एक बहुत ही लोकप्रिय योजना है। जिन भी लोगों के पास यह कार्ड होगा वह राजस्थान श्रमिक छात्रवृति योजना के तहत लाभ ले सकते है। यह सिर्फ एक कार्ड है लेकिन, इस कार्ड धारक को बहुत से लाभ मिलते हैं जो कि निम्न प्रकार है –

1. लड़के के जन्म पर 20 हजार रुपये, लड़की के जन्म पर 21 हजार रुपये मिलेंगे (अधिकतम 2 बच्चों के जन्म पर)
2. श्रमिक कार्ड धारकों के बच्चों को पढ़ाई में मिलने वाली छात्रवृत्ति –

कक्षा 6 से 8	–	8000 रुपये
कक्षा 9 से 12	–	9000 रुपये
आईटीआई	–	9000 रुपये
डिप्लोमा	–	10000 रुपये
स्नातक (GRADUATION)	–	13000 रुपये
स्नातकोत्तर (PG)	–	15000 रुपये

नोट : छात्राओं को मिलने वाली छात्रवृत्ति की राशि उपर्युक्त राशि से 1000 रुपये अधिक मिलेगी।

3. शुभ–शक्ति योजना– लड़की कि उम्र 18 वर्ष की होने पर तथा 8वीं पास होने 55 हजार रूपये की सरकारी सहायता मिलेगी। (लड़की 8वीं पास हो, उम्र 18 साल हो, श्रमिक कार्ड बने हुए 6 माह हो गए हो) अधिकतम 2 लड़कियों को ही मिलेगी।
4. जमीन का पट्टा होने पर 1 लाख 50 हजार की सहायता।
5. दुर्घटना होने पर 30 हजार से 3 लाख तक की सरकारी सहायता।
6. सामान्य मृत्यु होने पर 2 लाख रुपये सहायता।
7. दुर्घटना मृत्यु पर 5 लाख सरकारी सहायता।

श्रमिक कार्ड बनवाने की उम्र अवधि

18 वर्ष से 60 वर्ष की उम्र तक कोई भी पुरुष या महिला ये श्रमिक कार्ड बनवा सकते हैं ।

श्रमिक कार्ड बनवाने के लिये आवश्यक दस्तावेज

आधार कार्ड, राशन कार्ड, बैंक पासबुक, स्व घोषणा प्रमाण पत्र 1 फ़ोटो।

8. सिलिकोसिस पीड़ित हिताधिकारियों हेतु सहायता योजना

राजस्थान सिलिकोसिस नीति बनाने वाला हरियाणा के बाद दूसरा राज्य बन गया है ए इस नीति के तहत सिलिकोसिस पीड़ित को पुनर्वास (Rehabilitation) के लिए 3 लाख रुपए देने का प्रावधान किया गया है। पीड़ित की मौत (Death of victim) पर उत्तराधिकारी को 2 लाख की सहायता दी जाएगी। इसके साथ ही अंतिम संस्कार (Funeral) के लिए भी 10 हजार रुपए मुहैया करवाए जाएंगे।

पात्रता एवं शर्तें

- पंजीकृत निर्माण श्रमिक हिताधिकारी हों।
- सिलिकोसिस से पीड़ित होना न्यूमोकोनियोसिस मेडिकल बोर्ड द्वारा प्रमाणित किया गया हो।
- हिताधिकारी को राजस्थान पर्यावरण एवं स्वास्थ्य सैस कोष (रीहेब) से सहायता राशि प्राप्त नहीं हुई हो।
- वे श्रमिक, जिन पर खान अधिनियम, 1952 के प्रावधान लागू होते हैं, वे सहायता राशि प्राप्त करने के पात्र नहीं होंगे।
- आवेदन की समय सीमा मेडिकल बोर्ड द्वारा प्रमाण—पत्र दिये जाने से 6 माह तक तथा मृत्यु की दशा में मृत्यु की तिथि से 6 माह की अवधि तक।

वांछित दस्तावेज

- मृत्यु होने की दशा में मृत्यु प्रमाण पत्र।
- न्यूमोकोनियोसिस मैडिकल बोर्ड का सिलिकोसिस संबंधी प्रमाण—पत्र
- हिताधिकारी पंजीयन परिचय पत्र या कार्ड की प्रति
- भामशाह परिवार कार्ड या भामशाह नामांकन की प्रति
- आधार कार्ड की प्रति
- बैंक खाता पास—बुक के पहले पृष्ठ की प्रति

9. प्रसूति सहायता योजना

हितलाभ लड़की का जन्म होने पर 21,000 रू. तथा लड़के का जन्म होने पर 20,000 रू.

पात्रता एवं शर्तें

- प्रसव से 6 सप्ताह पूर्व हिताधिकारी का पंजीयन आवश्यक।
- अधिकतम दो प्रसव तक देय।
- संस्थागत प्रसव होने अर्थात अस्पताल में प्रसूति होने की स्थिति में ही लाभ देय।
- प्रसव के समय हिताधिकारी की आयु 20 वर्ष से कम नहीं हो।
- पंजीयन से पूर्व 2 संतान होने की दशा में सहायता देय नहीं। पंजीयन से पूर्व एक सन्तान होने पर पंजीयन के पश्चात एक प्रसव हेतु ही सहायता देय।
- आवेदन करने की समय सीमा प्रसव तिथि के 90 दिन में (अस्पताल में प्रसूति होने का प्रमाण पत्र)

आवेदन के साथ लगाये जाने वाले दस्तावेज

- डिलीवरी डिस्चार्ज टिकट / ममता कार्ड।
- बच्चे का जन्म प्रमाण–पत्र।
- हिताधिकारी के पंजीयन पत्र की प्रति।
- हिताधिकारी पंजीयन परिचय पत्र या कार्ड की प्रति
- भामशाह परिवार कार्ड या भामशाह नामांकन की प्रति
- आधार कार्ड की प्रति
- बैंक खाता पास–बुक के पहले पृष्ठ की प्रति

10. शुभ–शक्ति योजना

हितलाभ हिताधिकारियों की वयस्क व अविवाहिता पुत्री को तथा महिला हिताधिकारी को 55,000 रूपये प्रोत्साहन / सहायता राशि देय होगी। प्रोत्साहन राशि का उपयोग महिला हिताधिकारी / पुत्री के विवेक के अनुसार आगे शिक्षा या व्यावसायिक प्रशिक्षण प्राप्त करने, स्वयं का व्यवसाय प्रारम्भ करने, कौशल विकास प्रशिक्षण प्राप्त करने आदि में तथा स्वयं के विवाह हेतु उपयोग में लिया जाएगा

पात्रता एवं शर्तें

- लड़की के पिता या माता अथवा दोनों, कम से कम एक वर्ष से मण्डल में पंजीकृत हिताधिकारी / निर्माण श्रमिक हों;
- अधिकतम् दो पुत्रियों अथवा महिला हिताधिकारी को और उसकी एक पुत्री को प्रोत्साहन राशि देय होगी;
- महिला हिताधिकारी अविवाहिता हो अथवा हिताधिकारी की पुत्री की आयु न्यूनतम् 18 वर्ष पूर्ण हो गई हो तथा वह अविवाहिता हो;
- हिताधिकारी की पुत्री / महिला हिताधिकारी कम से कम 8वीं कक्षा उत्तीर्ण हो;
- हिताधिकारी की पुत्री / महिला हिताधिकारी के नाम से बचत बैंक खाता हो;
- हिताधिकारी का स्वयं का आवास होने की स्थिति में, आवास में शौचालय हो;
- आवेदन की तिथि से पूर्व के एक वर्ष की अवधि में हिताधिकारी कम से कम 90 दिन निर्माण श्रमिक के रूप में कार्यरत रहा हो;

प्रोत्साहन राशि हिताधिकारी के निर्माण श्रमिक होने के भौतिक सत्यापन की शर्त पर ही देय होगी। निर्माण श्रमिक होने का सत्यापन तहसीलदार, विकास अधिकारी, सहायक व उच्च अभियन्ता, सरकारी माध्यमिक विद्यालय का प्रधानाध्यापक अथवा अन्य राजपत्रित अधिकारी द्वारा किया जा सकेगा;

प्रोत्साहन राशि का उपयोग महिला हिताधिकारी / पुत्री के विवेक के अनुसार आगे शिक्षा या व्यावसायिक प्रशिक्षण प्राप्त करने, स्वयं का व्यवसाय प्रारम्भ करने, कौशल विकास प्रशिक्षण प्राप्त करने आदि में तथा स्वयं के विवाह हेतु उपयोग में लिया जाएगा (स्वयं का व्यवसाय प्रारम्भ करने या कौशल विकास करने या व्यावसायिक शिक्षा प्राप्त करने के लिए लड़की को उचित परामर्श प्रदान किया जाएगा);

योजना का हितलाभ प्राप्त करने के लिए हिताधिकारी द्वारा निर्धारित प्रपत्र में आवेदन, पंजीकृत हिताधिकारी के रूप में एक वर्ष पूरा होने के पश्चात्, प्रस्तुत किया जाएगा। परन्तु यह आवश्यक होगा कि योजना का आवेदन प्रस्तुत करने के समय हिताधिकारी का परिचय–पत्र वैध हो;

आवेदन की समय सीमा

आवेदन पत्र हिताधिकारी द्वारा पंजीयन की तिथि से एक वर्ष की अवधि पूरी होने के पश्चात् तथा अविवाहिता पुत्री की आयु 18 वर्ष पूर्ण होने की तिथि से 6 माह की अवधि में अथवा योजना लागू होने की तिथि से 6 माह की अवधि में, जो भी लागू हो हो, अथवा लड़की की शादी होने से पूर्व प्रस्तुत किया जा सकेगा।

आवेदन के साथ लगाये जाने वाले दस्तावेज

- हिताधिकारी की पुत्री के बैंक खाते की पास–बुक के प्रथम पृष्ठ (जिसमें हिताधिकारी का नाम, बैंक खाता संख्या व आईएफएससी कोड हो) की प्रति।
- हिताधिकारी की पुत्री की आयु 18 वर्ष पूरी होने के प्रमाण पत्र की प्रति।
- महिला हिताधिकारी अथवा हिताधिकारी की पुत्री के कक्षा 8 उत्तीर्ण करने की अंक तालिका, जो राजकीय अथवा राज्य सरकार द्वारा मान्यता प्राप्त निजी विद्यालय द्वारा जारी की गई हो, की प्रति।
- हिताधिकारी पंजीयन परिचय पत्र या कार्ड की प्रति
- भामशाह परिवार कार्ड या भामशाह नामांकन की प्रति
- आधार कार्ड की प्रति

11. निर्माण श्रमिक स्वास्थ्य बीमा योजना

हितलाभ हिताधिकारी और उनके परिवार के सदस्यों के लिए की राज्य सरकार की भामशाह स्वास्थ्य बीमा योजना की सूची में सम्मलित सरकारी और निजी अस्पतालों में सामान्य बीमारियों में वार्षिक 30,000 रूपये तक और चिन्हित गम्भीर बीमारियों में वार्षिक 3 लाख रूपये तक निःशुल्क ईलाज की सुविधा।

पात्रता एवं शर्तें

- पंजीकृत हिताधिकारी हो;
- कम से कम एक दिन अस्पताल में भर्ती रहा हो;;

आवेदन के साथ लगाये जाने वाले दस्तावेज

- अपना हिताधिकारी परिचय पत्र तथा राष्ट्रीय खाद्य सुरक्षा राशन–कार्ड लेकर किसी भी अधिकृत या एमपैनल अस्पताल में जाएं भामाशाह स्वास्थय परिचय पत्र राशन–कार्ड संख्या दर्ज कराएं और निःशुल्क इलाज प्राप्त करे।
- हिताधिकारी पंजीयन परिचय पत्र या कार्ड की प्रति
- भामशाह परिवार कार्ड या भामाशाह नामांकन की प्रति
- आधार कार्ड की प्रति
- बैंक खाता पासबुक के पहले पृष्ठ की प्रति

12. सुकन्या समृद्धि योजना (SSY)

सुकन्या समृद्धि योजना (एसएसवाई या SSY) 10 साल से कम उम्र की बच्ची के लिए उच्च शिक्षा और शादी के लिए केंद्र सरकार की एक अच्छी निवेश योजना है जिसे बेटी बचाओ–बेटी पढ़ाओ स्कीम के तहत लांच किया गया है। इस योजना के अंतर्गत किए निवेश पर अन्य सभी निवेश योजनाओं से अधिक ब्याज दर दिया जाता है।

सुकन्या समृद्धि योजना (SSY) के तहत खाता किसी भी डाक कार्यालय या वाणिज्यिक बैंक की अधिकृत शाखा में बेटी के जन्म लेने के बाद 10 साल से पहले की उम्र में कम से कम 250 रुपये के जमा के साथ खोला जा सकता है और चालू वित्त वर्ष में अधिकतम 1.5 लाख रुपये जमा कराये जा सकते है।

SSY खाता खोलने के बाद यह बेटी के 21 साल के होने या 18 साल की उम्र के बाद उसकी शादी होने तक चलाया जा सकता है।

SSY खाते से 18 साल की उम्र के बाद बच्चे की उच्च शिक्षा के लिए खर्च के मामले में 50 फीसदी तक रकम निकाली जा सकती है।

SSY खाता बच्ची के माता–पिता या कानूनी अभिभावक द्वारा बेटी के नाम से उसके 10 साल की उम्र से पहले खोला जा सकता है। इस नियम के मुताबिक एक बच्ची के लिए एक ही खाता खोला जा सकता है और उसमें पैसा जमा किया जा सकता है।

SSY खाता खोलने के वक्त बच्ची का बर्थ सर्टिफिकेट पोस्ट ऑफिस या बैंक में देना जरूरी है इसके साथ ही बच्ची और अभिभावक के पहचान और पते का प्रमाण भी देना जरूरी है।

SSY खाते में रकम खाता खोलने के दिन से 15 साल तक जमा कराया जा सकता है। 9 साल की किसी बच्ची के मामले में जब वह 24 साल की हो जाये तब तक रकम जमा कराई जा सकती है। बच्ची के 24 से 30 साल के होने तक, जब तक कि SSY खाता मैच्योर न हो जाये, उसमें जमा रकम पर ब्याज मिलता रहेगा।

किसी अनियमित SSY अकाउंट में जहां कम से कम रकम जमा नहीं हुई है, उसे 50 रुपये सालाना की पेनल्टी देकर नियमित कराया जा सकता है। इसके साथ ही हर साल के लिए कम से कम जमा कराई जाने वाली रकम भी ल अकाउंट में डालनी पड़ेगी।

अगर SSY खाता धारक की मृत्यु हो जाये तो डेथ सर्टिफिकेट दिखाकर खाता बंद कराया जा सकता है। इसके बाद SSY खाते में जमा रकम बच्ची के अभिभावक को ब्याज सहित वापस दी जा सकती है।

दूसरे मामलों में एसएसवाई (SSY) खाते को खोलने से पांच साल के बाद बंद किया जा सकता है. यह भी कई परिस्थितियों में किया जा सकता है, जैसे जीवन को खतरे वाली बीमारियों के मामले में।

इसके बाद भी अगर किसी दूसरे कारण से SSY खाता बंद किया जा रहा हो तो इसकी इजाजत दी जा सकती है, लेकिन उस पर ब्याज सेविंग एकाउंट के हिसाब से मिलेगा।

अकाउंट होल्डर की वित्तीय जरूरतें पूरी करने के लिए SSY खाते से आंशिक निकासी की जा सकती है, इनमें उच्च शिक्षा और शादी जैसे काम शामिल हैं। इसमें SSY में पिछले वित्त वर्ष के अंत तक जमा रकम का 50 फीसदी निकाला जा सकता है। SSY से यह निकासी तभी संभव है, जब एकाउंट होल्डर 18 साल की उम्र पार कर ले।

SSY अकाउंट से रकम निकालने के लिए एक लिखित आवेदन और किसी शैक्षणिक संस्थान में एडमिशन ऑफर या फीस स्लिप की जरूरत होती है। इन मामलों में हालांकि SSY से निकासी करने वाली रकम फी और दूसरे चार्ज के बराबर ही हो सकती है उससे अधिक नहीं।

SSY योजना की कुछ शर्तें भी हैं–

1. अगर खाताधारक की शादी खाता खोलने के 21 साल पूरे होने से पहले हो जाती है तो खाते में रकम जमा नहीं कराई जा सकती।
2. अगर खाता 21 साल पूरा होने से पहले बंद कराया जा रहा है तो खाताधारक को यह शपथ पत्र देना पड़ेगा कि खाता बंद करने के समय उसकी उम्र 18 साल से कम नहीं है। मैच्योरिटी के समय पासबुक और जमा धन निकासी स्लिप पेश करने पर खाताधारक को ब्याज सहित जमा रकम वापस हो जाएगी।

13. गुरु गोलवलकर जनभागीदारी विकास योजन (guru golavalakar janbhagidari vikas yojana)

योजना का उद्देश्य

i. गांव के विकास के लिए आवश्यक सामुदायिक परिसंपत्तियों का निर्माण करवाना।
ii. रोजगार के अतिरिक्त अवसरों का सर्जन करना, स्थानीय सामुदायिक में स्वावलंबन एवं आत्मनिर्भरता को प्रोत्साहन देना।
iii. सामाजिक सामुदायिक परिसंपत्तियों के निर्माण एवं रखरखाव में स्थानीय समुदाय की भागीदारी को प्रोत्साहन देना, ग्रामीण क्षेत्र में परिवारों के जीवन स्तर में सुधार करवाना इत्यादि।

योजना के लाभ

i. स्थानीय आधारभूत सुविधाओं का विकास एवं सामाजिक क्षेत्रों में भवन निर्माण कराना
ii. गौशाला–गौसदनो हेतु पक्का फर्श, नाली एवं गोमूत्र टैक, नन्दीगृह, चारा भंडार, गृह निर्माण कार्य एवं अभियान से संबंधित कार्य, निर्मल घाट निर्माण कार्य करवाना इत्यादि।

योजना की पात्रता

i. श्मशान एवं कब्रिस्तान भूमियों की चार दीवारों के निर्माण, छाया में पानी की व्यवस्था संबंधित कार्य हेतु राज्यांश 90% तथा जनसहयोग 10% दिया जाता है।
ii. सामुदायिक परिसंपत्तियों के सृजन हेतु राज्यांश 70% तथा जनसहयोग 30% दिया जाता है।
ii. उक्त जनसहयोग की राशि का वहन पंजीकृत संस्था/ट्रस्ट/सामाजिक संगठन/NGO/व्यक्तिगत दानदाता के द्वारा भी किया जा सकेगा। जनसहयोग की राशि जिला परिषद में नगद/डिमांड ड्राफ्ट के रूप में करायी जा सकेगी।

कार्यों के प्रस्ताव और स्वीकृति की प्रक्रिया

सर्वप्रथम कराए जाने वाले कार्यों को ग्राम पंचायत के प्रस्ताव में शामिल कराना होता है।

इसके बाद ग्राम पंचायत के सहयोग से उक्त प्रस्तावों को पंचायत समिति से जिला परिषद को प्रेषित किए जाते हैं। साथ में कराए जाने वाले कार्यों की पंचायत समिति के श्रम्छ के जरिये एस्टिमेटेड प्रपोजल भी तैयार करवाना होता है।

गुरु गोलवलकर जनभागीदारी विकास योजनांतर्गत पंजीकृत कार्यों की स्वीकृति के लिए वरीयता का आधार पंचायत समिति वार प्राप्त प्रस्तावों में से रखा जाएगा न कि जिलों में प्राप्त प्रस्तावों के वरीयता के आधार पर किया जावेगा।

योजनांतर्गत जिलों को आवंटित / स्वीकृत बजट का पंचायत समिति वार आवंटन ग्राम पंचायत की संख्या के आधार पर जिला कलेक्टर के द्वारा किया जाता है।

स्वीकृत कार्य की अधिकतम राशि 15 लाख रुपये है।

जिला परिषद के द्वारा एक निर्धारित अवधि में बजट की उपलब्धता के आधार इस योजनांतर्गत आने वाले कार्यों की प्रशासनिक / तकनीकी / वितीय स्वीकृति जारी की जाती है।

तू ज़िन्दा है तो...

तू ज़िन्दा है तो ज़िन्दगी की जीत में यकीन कर
अगर कहीं है स्वर्ग तो उतार ला ज़मीन पर

सुबह औ शाम के रंगे हुए गगन को चूमकर
तू सुन ज़मीन गा रही है कब से झूम-झूम कर
तू आ मेरा सिंगार कर तू आ मुझे हसीन कर
अगर कहीं है स्वर्ग तो उतार ला ज़मीन पर

तू जिन्दा है तो ज़िन्दगी की जीत में यकीन कर
अगर कहीं है स्वर्ग तो उतार ला ज़मीन पर
तू जिन्दा है...

ग्रामीण समस्याओं के निराकरण की आशा की कुंजी

'ग्राम विकास समिति

दोस्तों ! गांवों के विकास के लिए "ग्राम–सभा" पंचायती राज व्यवस्था का मूल आधार है । लेकिन, हमारे गांवों में प्रायः यह देखने में आता है कि ग्राम सभा के दौरान ग्रामवासी उत्साह से भाग नहीं लेते हैं एवं कई बार ग्राम सभाओं में पर्याप्त संख्या नहीं होने के कारण बैठकें भी स्थगित कर दी जाती हैं तथा विकास कार्यों के प्रस्ताव समय पर पारित नहीं करवा पाते हैं, जिससे गांव के विकास कार्य प्रभावित होते हैं । अतः ग्राम सभा को सुदृढ़ बनाने के लिए "सोच बदलो गांव बदलो टीम" प्रारंभ से ही गांव के अधिक से अधिक लोगों की भागीदारी सुनिश्चित करने के उद्देश्य से "ग्राम विकास समिति" बनाने पर जोर देती आई है । जिससे कि समय पर विकास कार्यों के प्रस्ताव पारित किए जा सकें और नियमित रूप से विकास कार्य संपन्न कराए जा सकें।

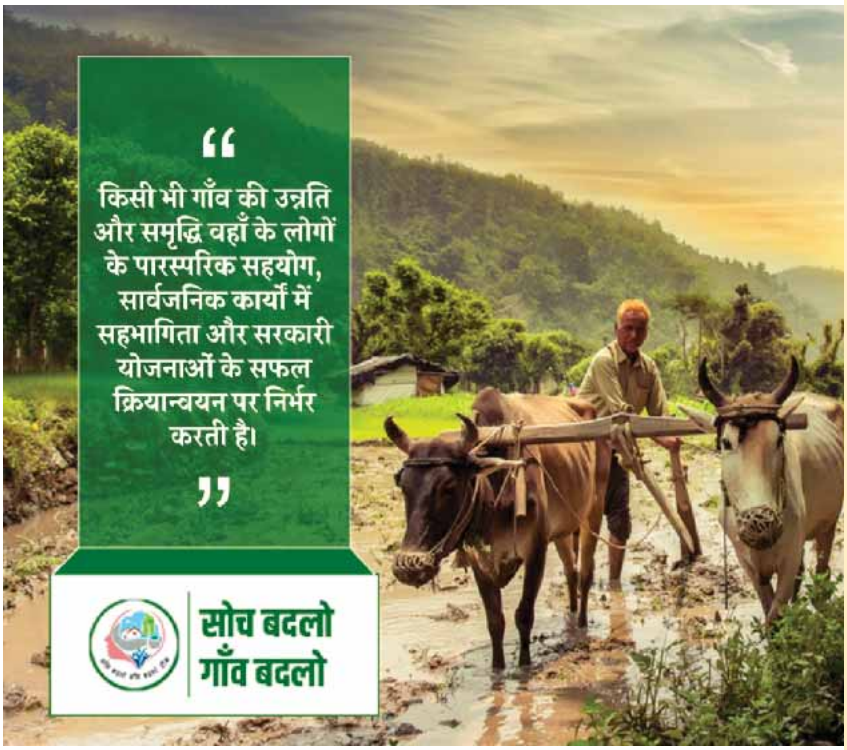

"उत्थान" वार्षिक पत्रिका के पिछले अंक में हमने गांव–गांव में एक रजिस्टर्ड ग्राम विकास समिति बनाने हेतु अपील की थी । लेकिन, हमने महसूस किया कि ग्राम विकास समिति के पंजीयन की प्रक्रिया से अनभिज्ञ हमारे कई साथियों के मन में स्वाभाविक रूप से कुछ शंकाएं / प्रश्न थे । इन्हीं शंकाओं / प्रश्नों के समाधान के लिए, आइए इस अंक में हम चर्चा करते हैं कि आप अपने गांव के विकास के लिए "ग्राम विकास समिति" का पंजीयन कैसे करवाएं और साथ ही यह भी जानें कि ग्राम विकास समिति के पंजीयन के पश्चात इसके माध्यम से गांव में कौन–कौन से विकास कार्य करवाए जा सकते हैं ।

ग्राम विकास समिति का पंजीयन

ग्राम विकास समिति का रजिस्ट्रेशन (पंजीयन), संस्था पंजीकरण अधिनियम, 1958 के अंतर्गत नियमानुसार सहकारिता विभाग से करवाया जा सकता है। इसके लिए आप सहकारिता विभाग की आधिकारिक वेबसाइट www.rajcooperatives.nic.in पर जाकर ऑनलाइन आवेदन कर सकते हैं। याद रखें कि वर्तमान में राजस्थान में सभी प्रकार की सोसाइटियों का पंजीयन ऑनलाइन ही होता है।

अतः ग्राम विकास समिति के पंजीयन हेतु आप निम्नलिखित में से कोई एक तरीका चुन सकते हैं:–

(1) स्वयं के द्वारा इंटरनेट पर

(2) ई–मित्र कियोस्क पर जाकर

(3) SSO ID के माध्यम से

संस्था रजिस्ट्रीकरण अधिनियम 1958 के अंतर्गत "ग्राम विकास समिति" के रजिस्ट्रेशन के लिए कम से कम 7 व्यक्तियों की आवश्यकता होती है जिनमें सामान्यतः तीन पदाधिकारी अध्यक्ष (President), सचिव (Secretary) व कोषाध्यक्ष (Treasurer) अनिवार्य रूप से होते हैं, इसके अतिरिक्त अन्य पदाधिकारी भी हो सकते हैं और विभिन्न सदस्य हो सकते हैं। आवेदन के समय सभी आवेदकों एवं कार्यकारिणी सदस्यों के आधार कार्ड अथवा भामाशाह कार्ड की जरूरत होती है।

रजिस्ट्रेशन के लिए आवेदन करने से पूर्व हमें आम सहमति से निम्नलिखित चीजें निर्धारित कर लेनी चाहिए –

ग्राम विकास समिति का नाम

समिति का उद्देश्य (objects)

कार्यकारिणी अथवा शासी निकाय

नियम एवं विनियम (Rules and Regulations)

राजस्थान सहकारिता विभाग की विभागीय वेबसाइट पर उपलब्ध प्रारूप में आवेदकों की सुविधा हेतु प्रस्तावित सोसाइटी के "उद्देश्य" एवं "नियम और विनियम" का सुझावात्मक प्रारूप डाउनलोड किए जा सकने की सुविधा उपलब्ध करवाई गई है ५ आवेदक चाहे तो स्वयं के स्तर से अधिनियम के प्रावधानों से सुसंगत रहकर तैयार किए गए "उद्देश्य" एवं "नियम और विनियम" तीन पदाधिकारियों द्वारा हस्ताक्षरित रूप में पीडीएफ फॉर्मेट में ऑनलाइन आवेदन के साथ यथास्थान अपलोड कर सकते हैं ५

ई–मित्र कियोस्क के जरिये ऑनलाइन आवेदन

ग्राम विकास समिति का सारा प्रोसेस ई–मित्र कियोस्क के जरिए भी ऑनलाइन होता है और डॉक्यूमेंट वेरिफिकेशन भी EKYC के जरिए ही होता है;

सबसे पहले आपको अपने गांव में मीटिंग कर सर्वसम्मति से अध्यक्ष, सचिव और कोषाध्यक्ष व अन्य पदाधिकारीयों का चयन करना होगा। इसके बाद सभी पदाधिकारियों के आधार नंबर और आधार से जुड़े हुए उनके रजिस्टर्ड मोबाइल नंबर अंकित करने होंगे ।

सभी पदाधिकारियों के आधार से लिंक रजिस्टर्ड मोबाइल पर ओटीपी आएगा, इसके बाद EKYC हो जाएगा, जिनके मोबाइल नंबर आधार से लिंक नहीं हैं, उनका ई–मित्र सेंटर पर ही थंब (अंगूठे) से EKYC होगा।

इसके बाद सोसाइटी रजिस्ट्रेसन की ऑफिशियल वेबसाइट से "नियम एवं विनियम" और "उद्देश्यों' की पीडीएफ डाउनलोड कर लो या फिर ई–मित्र की दुकान से भी उक्त "नियमों और विनियमों" और "उद्देश्यों" के प्रारूप प्राप्त कर सकते हैं। इसके बाद मुख्य पदाधिकारियों के अधोहस्ताक्षर से एक पीडीएफ डॉक्यूमेंट ई–मित्र के जरिए ही अपलोड करना होता है ।

आपके द्वारा चुने गए ग्राम विकास समिति के अध्यक्ष की ई–मित्र कियोस्क पर ही ऑनलाइन एप्लीकेशन करते समय आवश्यक डिटेल भरने के बाद आधार कार्ड, पैन कार्ड और फ़ोटो अपलोड करने होंगे। यह प्रक्रिया सिर्फ ग्राम विकास समिति के अध्यक्ष के लिए होगी अन्य पदाधिकारियों के लिए तो सिर्फ आधार अथवा भामाशाह कार्ड से EKYC हो जाएगा, उनके लिए अन्य डॉक्यूमेंट की जरूरत नहीं पड़ती है ।

ईमित्र से सारा प्रोसेस पूरा करने के बाद रजिस्ट्रार कार्यालय में आपके एप्लीकेशन का वेरिफिकेशन होगा। अगर एप्लीकेशन में कोई गलती है तो त्रुटि सुधार के लिए ऑनलाइन ही एप्लीकेशन वापस कर दिया जाएगा और आपके द्वारा दिये गए मोबाइल पर मैसेज आ जायेगा ।

सोसाइटी रजिस्ट्रेशन कार्यालय से वेरीफाई होने के बाद दिए गए मोबाइल नंबर पर निर्धारित रजिस्ट्रशन फीस का मैसेज आएगा, जिसको ऑनलाइन ही नेट बैंकिंग या डेबिट कार्ड के जरिए ई–मित्र कियोस्क के जरिए भी डिपाजिट करवाया जा सकेगा।

आवेदक द्वारा ऑनलाइन पंजीकरण शुल्क जमा करा दिए जाने पर पंजीकरण अधिकारी पंजीयन प्रमाण पत्र एवं संस्था (ग्राम विकास समिति) के विधान पर अपने डिजिटल हस्ताक्षर करेगा जो कि ऑनलाइन ही डिजिटल रजिस्टर में संधारित हो जाएगा।

इसके पश्चात आवेदक के हस्ताक्षर युक्त पंजीयन प्रमाण पत्र एवं संस्था के पंजीकृत विधान की प्रति ऑनलाइन डाउनलोड कर सकेगा, जिस पर क्यू आर कोड भी अंकित होगा। इस प्रकार ग्राम विकास समिति

के रजिस्ट्रेशन का सारा प्रोसेस ई–मित्र कियोस्क से ही पूर्ण हो जाता है। रजिस्ट्रेशन सर्टीफिकेट मिलने के बाद आप ग्राम विकास समिति के लैटर पैड व सील बनवा सकते हैं और बैंक जाकर ग्राम विकास समिति का पब्लिक एकाउंट खुलवा सकते हैं।

पब्लिक एकाउंट खुलवाने के लिए रजिस्ट्रेशन सर्टिफिकेट जरूरी होता है इसके साथ रजिस्ट्रेशन के समय जो पीडीएफ फ़ाइल अपलोड की गई थी, जिस पर सोसाइटी के नियम और विनियम और उद्देश्य लिखे गए थे, उसकी एक कॉपी की जरूरत होगी जिसमें मुख्य पदाधिकारियों (अध्यक्ष, सचिव, कोषाध्यक्ष) के हस्ताक्षर होने चाहिए। उक्त तीनों पदाधिकारीयो के आधार कार्ड, पैन कार्ड और फ़ोटो की भी जरूरत होती है। साथ ही समिति के लैटर पैड पर अध्यक्ष, सचिव और कोषाध्यक्ष के अधोहस्ताक्षर से एक रेजोल्यूशन भी देना होता है। इसके बाद ग्राम विकास समिति का पब्लिक एकाउंट खुल जायेगा ।

ग्राम विकास समिति के माध्यम से किए जा सकने वाले कार्य –

समिति का गठन गांव के विकास कार्यों के लिए किया जा रहा है। अतः ग्राम विकास समिति निम्नलिखित कार्य करवाएगी ।

1. गांव के ग्राम पंचायत विकास योजना के तहत किए जाने वाले कार्यों का प्राथमिकता से चिन्हीकरण के लिए सलाह देना ।
2. गांव में स्थित विद्यालय के विकास हेतु योजना बनाने के लिए सलाह देना ।
3. गांव में स्थित आंगनवाड़ी, अस्पताल एवं अन्य सरकारी कार्यों के लिए सलाह देना ।
4. गांव में स्थित सार्वजनिक परिसंपत्तियों की देखरेख करना ।
5. गांव में स्थित वृद्ध जनों के कल्याण के लिए योजना बनाने के लिए सलाह देना ।
6. गांव में स्थित सर्वाधिक गरीब लोगों के उत्थान के लिए सलाह मशविरा करना ।
7. केंद्र एवं राज्य सरकार की सभी जनकल्याणकारी विकास योजनाओं एवं व्यक्तिगत लाभ की योजनाओं की जानकारी ग्राम वासियों को उपलब्ध कराना ।
8. गांव में स्वच्छता के लिए विचार करके, ग्राम को स्वच्छ रखने के लिए प्रयास करने के लिए अच्छे सुझाव देना ।
9. समिति में, निर्वाचित वार्ड पंच भी स्वतः ही सदस्य होते हैं । वार्ड पंचों द्वारा ग्राम पंचायतों की बैठकों में उनके गांव की ग्राम विकास समिति द्वारा किए जा रहे कार्यों की जानकारी प्रस्तुत करना ।
10. गांव के प्रतिभाशाली छात्र छात्राओं को स्कॉलरशिप अथवा पुरस्कार प्रदान करना ।
11. अन्य सभी वो कार्य, जो ग्राम विकास समिति के सदस्यों द्वारा सर्वसम्मति से प्रस्तावित किए जावें ।

– देवेन्द्र सिंह, धनेरा (SBGBT सदस्य)

बदलाव की कहानी - लोगों की जुबानी

1. गुढा गाँव, धौलपुर

गुढा गाँव प्रकृति की गोद में बैठा हुआ छोटा सा गाँव है। गाँव में लगभग 115 परिवार है और जनसंख्या लगभग 700 है। सोच बदलो–गाँव बदलो टीम की इस 22वी मीटिंग का गुढा गाँव युवा कार्यकर्ताओं ने विशेष आग्रह कर आयोजन करवाया क्योंकि इन कार्यकर्ताओं के मन में बदलाव की उमंग जोर पकड़ रही थीद्य सोच बदलो गाँव बदलो टीम के कार्यों से प्रभावित होकर इन कार्यकर्ताओं ने अपने गाँव में स्वेच्छा से ही बहुत से कार्य को अंजाम देना शुरू कर दिया था। इस मीटिंग में कार्यकर्ताओं का मनोबल बढ़ाने के लिए डॉ सत्यपाल सिंह मीना सहित टीम के सभी सक्रिय और वरिष्ठ सदस्य शामिल हुए। टीम के सभी साथियों द्वारा व्यावहारिक अनुभव पर आधारित बातों से ग्रामीणों को प्रोत्साहित किया गया। टीम के वरिष्ठ कार्यकर्ता देवेन्द्र भाई साहब ने पॉवरमैन की भूमिका का बखूबी निर्वहन किया। देवेन्द्र जी के द्वारा प्रस्तुत विचार बेहद जमीनी, प्रासंगिक, यादगार और अभूतपूर्व थे। ग्रामीणों द्वारा प्रस्तुत प्रतिवेदन से स्पष्ट हुआ कि गाँव में रास्तों पर अतिक्रमण, श्मशान घाट पर अतिक्रमण, पेयजल का संकट इत्यादि समस्याएं प्रमुख है। मीटिंग के दौरान युवाओं के साथ साथ बुजुर्गों को विश्वास में लिया गया और आगे की रणनीति तय की गई। उस रणनीति पर चलते हुए इस गाँव के युवाओं ने अभूतपूर्व बदलाव किए; जिनको लेखनी में समेटना अत्यंत कठिन है। गाँव के युवाओं ने मिलकर गुढ़ा में युवा विकास समिति का गठन किया और इस के बैनर तले विभिन्न विकास कार्यों को अंजाम दिया गया है और आगे भी कार्य जारी है।

दोस्तों कहते हैं कि जब युवा सामाजिक बदलाव और सामाजिक क्रांति में आनंद की अनुभूति करने लगता है तो बाकी सभी काम उसे बहुत ही फीके और हल्के लगने लगते हैं। समाज सेवा और गाँव में बदलाव के प्रयास व्यक्ति के जीवन में एक नया रस घोल देते हैं; जिस के रंग में रंग कर युवा मस्ताना होकर अपना सर्वस्व अपने गाँव और समाज के लिए निछावर करने को तैयार होता है। युवा बदलाव के लिए तैयार होता है ताकि अपना समाज आगे जा सके; ताकि उसका परिवार आगे जा सके; ताकि उसके अपने लोग भी जीवन की बुनियादी सुविधाओं के साथ अच्छा जीवन जी सकें।

गुढ़ा गाँव के युवाओं ने यही तय किया है कि अब हमें बदलाव करना है। सोच बदलो गाँव बदलो टीम की विचारधारा से प्रभावित होकर इस सोच को आगे बढ़ाते हुए सरमथुरा के पास स्थित गाँव गुढ़ा में "अतिक्रमण हटाओ अभियान" में गुढ़ा विकास समिति के सक्रिय पदाधिकारियो ने स्वतः ही आगे आकर अपने

हाथों से अपनी घर के बाहर रास्तों में अवस्थित कच्ची दीवारों और रसोई का चूल्हा चौका तोड़कर एक अनुकरणीय और अनोखी मिशाल पेश की। पहले जहाँ गाँव के सभी मुख्य रास्तो में चौपहिया वाहन तक भी नहीं गुजरता था और सभी रास्ते बहुत संकरे थे लेकिन सोच बदलो गाँव बदलो अभियान से प्रेरित होकर समस्त गाँव वासियों ने एकजुट होकर लगातार 4–5 दिन तक गाँव के सभी मुख्य रास्तों को 15 फ़ीट तक चौड़ा किया और गाँव के एक मुख्य रास्तों को तो लगभग 30 फ़ीट तक भी चौड़ा कर दिया। इस प्रकार गाँव गुढ़ा में युवा विकास समिति के सानिध्य में गाँव वालों ने बेहतर सोच और समर्पण का परिचय देते हुए गाँव को अतिक्रमण मुक्त किया है।

"गाँव के संकरे रास्ते आपकी छोटी और संकीर्ण सोच के परिचायक हैं मितरों, जब तक आपके गाँव के रास्ते चौड़े नहीं होंगे, तब तक आपके दिमाग (सोच) के रास्ते भी चौड़े नहीं होंगे, साथियों। इसलिए अपनी सोच का दायरा बढ़ाओ, तभी गाँव में उन्नति होगी।" गुढ़ा गाँववासियों देवेंद्र सिंह जी इस अपील को मानते हुए उसे जमीनी धरातल पर उतार दिया है। दोस्तों धौलपुर जिले के ज्यादातर गांवों में पानी की समस्या का सामना करना पड़ रहा है। भीषण गर्मी में कई गांवों में बुरे हालात हैं, पानी की कमी से जनजीवन अस्त व्यस्त है। खास तौर पर महिलाओं को भोर होते ही दिन भर पानी की व्यवस्था के लिए इधर उधर भटकना पड़ रहा है, कई गाँवों में तो महिलाओं को बहुत दूर–दूर से पानी लाना पड़ रहा है। 'गुढ़ा गाँव वासियों' अपने अपने प्रयासों से ही गाँव की पानी की समस्या को कुछ हद तक कम करने का प्रयास किया है। अपने गाँव की टंकियों को दुरस्त करवाकर, उनमें पानी भरने की व्यवस्था की है, साथ ही टंकी के पास में पशुधन के पानी की व्यवस्था भी इन गाँववासियों ने की है।

इसके अतिरिक्त युवा विकास समिति गुढा द्वारा गाँव के मुख्य मार्गो की साफ सफाई, श्मशान घाट में हेण्डपम्प, गंदे पानी के लिये नालियों को ठीक करना, पेयजल हेतु पानी टँकी बनाना एवम पशुओं के लिए अलग से छोटी टँकी रखना, समय समय पर पेयजल टँकीयों को साफ़ करना, विद्यालय की सफाई एव चारदीवारी को ठीक करना, पढ़ने वाले बच्चों के लिये पंखे आदि की व्यवस्था करना, विद्यालय के दरवाजे की मरमत करना, गाँव मे रात्रि –रोशनी के लिये बल्ब एवम चौराहों पर रोशनी की व्यवस्था करना इत्यादि कार्यों को सफलतापूर्वक संपन्न किया है। सोच बदलो गाँव बदलो टीम युवा विकास समिति गुढ़ा के उन सभी कार्यकर्ताओं को ह्रदय की गहराई से अनन्त शुभकामनाएं देते है; जिन्होंने गाँव हित ने अपनी भूमि त्यागी और सकारात्मक सोच के साथ रास्तों को आपसी सहमति से चौड़ा किया और गाँव विकास के विभिन्न कामों को अंजाम दिया।

दैनिक भास्कर

ग्रामीणों ने एकजुट होकर स्वेच्छा से मुख्य रास्ते से हटाया अतिक्रमण, स्कूल तक वाहनों का पहुंचना हुआ असान

गुढ़ा के लोगों ने सोच बदलो, गांव बदलो से प्रेरित होकर गांव में चलाया अभियान

सरमथुरा. रास्ता से अतिक्रमण हटाते ग्रामीण।

स्वच्छता अभियान को कैसे मिले बढ़ावा, 20 रुपए प्रतिदिन की मजदूरी पर तैनात हैं, 21 सफाई कर्मी

2. कांकरेट गाँव, धौलपुर

बाडी तहसील से पश्चिम की ओर करीब 20–22 किमी दूरी पर अवस्थित कांकरेट एक खूबसूरत गाँव है। 250 परिवार वाले इस गाँव की कुल जनसंख्या 1800 के करीब है। कांकरेट और पुरा के रूप में यह गाँव दो भागों में बँटा हुआ है।

सोच बदलो–गाँव बदलो अभियान की आँधी से कांकरेट गाँव भी बच नहीं सका। इस गाँव की मौलिक समस्याएं अन्य गाँवों की भांति ही थी, जैसे– अत्यधिक संकरे और अतिक्रमणयुक्त रास्ते, कीचड़ भरी मैली गलियाँ, गरीबी और बेरोजगारी, नशाखोरी और व्यसनों का प्रकोप, लोगों में आपसी वैमनस्य और विघटन, गाँव में अवैध रूप से पनपती शराब की दुकानें।

इस मीटिंग की विशेष बात यह रही की मीटिंग के दौरान आंधी तूफान के साथ बारिश आ गई और मीटिंग के लिए तैयार किया गया पूरा का पूरा पांडाल लगभग गिर गया इसके बावजूद भी महिलाएं, बुजुर्ग और युवा साथी डटे रहे और मीटिंग विद्यालय के एक बरामदे में आयोजित की गई।

टीम के कार्यकर्ताओं के विचार सुनने के लिए महिलाएं अलग–अलग कमरों में एकत्रित हो गई और पूरा कार्यक्रम समाप्त होने के बाद ही लोगों ने जगह छोड़ी। टीम के लिए परम सौभाग्य की बात थी इतनी बड़ी संख्या में महिलाएं मीटिंग में न केवल उपस्थित हुई बल्कि इस आंधी तूफान में डटी रहीं।

मीटिंग के दौरान सोच बदलो गांव बदलो टीम के कार्यकर्ताओं ने विभिन्न विषयों पर गंभीर विचार विमर्श किया और देवेंद्र जी ने महिलाओं को शराब के खिलाफ उठ खड़े होने की शपथ दिलाई। मीटिंग के पश्चात इस गाँव में शराब का असीमित सेवन करने वाले कई व्यक्तियों ने प्रभावित होकर शराब पीना छोड दिया।

एक दिन जब विष्णु जी जब ऐसे ही एक व्यक्ति के घर के आगे से होकर गुजरे, तो उसकी बूढी माँ हाथ जोड़कर विष्णु जी के आगे सजल आँखों के साथ खड़ी हो जाती हैं। तत्पश्चात रुँधे हुए गले से करुण स्वर में कहती है, कि बेटा तूने मेरे परिवार को बर्बाद होने बचा लिया।

मेरे बेटे ने तुम्हारी मुहिम से प्रेरित होकर कई दिनों से शराब को छुआ तक नहीं है, आखिर तुम लोगों ने ऐसा क्या चमत्कार कर दिया। बेटा में तुम्हारा ये अहसान कभी नहीं भूल सकती।

दोस्तों, इस बूढी माँ के इन शब्दों ने विष्णु जी को भावविह्वल कर दिया। सीना गर्व से भर गया। SBGBT की मुहिम से एक शराबी बेटा आज सज्जन बेटा बन गया है। जबसे उसने शराब छोडी है, वह तरक्की के मार्ग पर चल पडा है। आज उसका परिवार अच्छी तरह फल–फूल रहा है। अगर हम ऐसे किसी एक परिवार को भी बर्बाद होने से बचाने में सफल होते हैं, तो हमारी तपस्या का इससे बड़ा फल दूसरा नहीं हो सकता। मीटिंग के बाद कांकरेट गाँव में नवीन ऊर्जा का संचार हुआ। ग्रामवासियों ने मिलकर ग्राम विकास समिति का गठन किया। गाँव के विकास और स्वच्छता के लिए चंदा एकत्र कर सफाई अभियान चलाया गया। संकरे रास्तों को अतिक्रमणमुक्त कर चौडा किया गया। गलियों में वर्षों से भरे कीचड़ और मलवे को हटाया गया।

खास अवसर पर गाँव के प्रतिभाशाली बच्चों को पुरस्कृत कर प्रोत्साहित किया गया। ग्रीन विलेज–क्लीन विलेज अभियान के तहत बडी संख्या में वृक्षारोपण किया गया। आओ पढें आगे बढें अभियान के तहत गाँव के बच्चों को प्रेरित व मार्गदर्शित किया। गांव के नागरिकों ने अपने अथक प्रयासों से वर्षों से लंबित पड़े गांव को जोड़ने वाले मुख्य मार्ग को चौड़ा कर नेशनल हाईवे से जोड़ने का काम किया जो कि अपने आप में बहुत बड़ी उपलब्धि है। सोच बदलो गांव बदलो टीम पूरे गांव वालों को भविष्य के विकास के लिए शुभकामनाएं देती हैं।

इस तरह के अनेक बहुआयामी कार्यक्रम SBGBT के सहयोग से यहाँ संपन्न हुए हैं। इस गाँव ने ऐसी प्रतिभाओं को जन्म दिया है, जो आज राष्ट्र स्तर पर अपने गाँव का नाम रोशन कर रहे हैं। यहाँ के बुजुर्ग बेहद बुद्धिजीवी और अनुभवी हैं, उन्ही की बदौलत आज ये अभियान सफल हो पाया है। इन बुजुर्गों का आशीर्वाद और युवाओं की कर्मशक्ति और उत्साह एकसाथ बने रहे, तो निश्चित रूप से यह गाँव जल्दी ही स्मार्ट विलेज के रूप में परिवर्तित हो जाएगा। इसी आशा और विश्वास के साथ आप सभी सज्जनों का हार्दिक आभार। धन्यवाद!

3. लीलोठी–कुरिगमा गाँव, धौलपुर

सरमथुरा से उत्तर की ओर नादनपुर–बसेडी रोड पर करीब 20–22 किमी दूर लीलौठी और कुरिगमा गाँव बसे हुए हैं। दोनों गाँव के बीच एक प्राचीन सिद्धबाबा का मंदिर स्थापित है। जो इस क्षेत्र के लोगों की आस्था का बडा केन्द्र है। जहाँ प्रतिवर्ष भाद्रपद के महीने में दशमी व एकादशी को मेला लगता है। जिसमें आसपास के गाँव डिंगोडी, कल्लापुरा, भिरामद, रतनपुर, झाला, बाबाजियों का पुरा, देवारा, पिपरानी, भकूंजरा, हरियापुरा, फकीरपुरा, तिलउआ आदि गाँवों के लोग बडी संख्या में यहाँ आते हैं। SBGBT की 13वी बैठक का आयोजन इसी सिद्धबाबा मंदिर के पुनीत स्थल पर किया गया। जो पेडों के बीच निर्मित खूबसूरत व शुकूनभरा स्थान है। जिसमें आसपास के सभी गाँवों के लोग बडी संख्या में मौजूद रहे। महिला और युवतियों ने भी इस सभा में बढ–चढ़कर हिस्सा लिया और उसके अनेक सार्थक परिणाम और परिवर्तन देखने को मिले। जो इस प्रकार हैं–

1. SBGBT के सौजन्य से शिक्षा पाओ ज्ञान बढाओ प्रतियोगिता का यहाँ का संयुक्त रूप से सफलतापूर्वक आयोजन किया गया।
2. आओ पढ़े आगे बढ़े नवीन प्रकल्प के माध्यम से बच्चों को प्रेरित और प्रोत्साहित किया गया।
3. स्वच्छता अभियान चलाकर गाँवों में युवाओं द्वारा सार्वजनिक और सामुदायिक स्थानों की साफ–सफाई की गयी। साथ ही लीलौठी गाँव के युवाओं ने गाँव में अतिक्रमणयुक्त स्थानों से अतिक्रमण हटाकर आम रास्तों को चौडा किया गया।
4. ग्रीन विलेज–क्लीन विलेज अभियान के तहत बडी संख्या में यहाँ वृक्षारोपण किया गया।
5. शराब जुआ और मादक पदार्थों के सेवन पर रोक लगाने के भी भरपूर प्रयास जारी हैं, जिसके चलते धीरे–धीरे इस क्षेत्र में सकारात्मक बदलाव देखने को मिल रहे हैं। इस बीच एक घटना से आपको अवगत कराना चाहूँगा, कि एक दिन आधी रात गये लीलौठी गाँव की एक बेबस महिला टीम के एक वरिष्ठ साथी को फोन करती है और रोते हुए करुण भाव से कहती है, कि बाबूजी मेरे घर को बर्बाद होने से बचा लीजिए।

आप की टीम ही हैं, जो इस गरीब को पीडा मुक्त कर सकते हैं। मेरे पति शराब के आदी हैं, जो शराब पीकर घर में रोज झगड़ा और मारपीट करते हैं। गाँव में अवैध शराब का ठेका होने की वजह से युवा लोग भी तेजी से इसकी गिरफ्त में आ रहे हैं। अतः कैसे भी करके इस ठेके को बंद करवा दीजिए, ताकि मेरा परिवार और गाँव के लोग शुकून से रह सकें। टीम ने तुरंत प्रभाव से निर्णय लेकर SBGBT और पुलिस द्वारा अवैध शराब को जब्त करवाया और गाँव के लोगों से चर्चा करके शराब बेचने और पीने वाले वालों पर जुर्माना तय किया गया। जिसे दण्ड के रूप उल्लंघन करने वाले से वसूला जाएगा। इसका परिणाम यह हुआ, कि आज गाँव में शराब पीने वालों में भारी कमी आई है।

सरमथुरा : ग्रामीण बच्चों ने शिक्षा पाओ ज्ञान बढ़ाओ प्रतियोगिता में लिया भाग

सिटी रिपोर्टर

सरमथुरा 12 अगस्त। शिक्षा पाओ ज्ञान बढ़ाओ प्रतियोगिता के पुरस्कार वितरण कार्यक्रम का आयोजन लीलौठी-कुरिगमा सर्किल में किया गया। इस दौरान चयनित बच्चे उनके अभिभावकगण एवं बडी संख्या में ग्रामीणों ने भाग लिया। पुरस्कार वितरण में लीलाठी पंचायत के 22 बच्चों को पुरस्कृत किया गया छात्र छात्रों की बराबर भागीदारी रही। इस कार्यक्रम से ग्रामीण परिवेश में रहने वाले बच्चों को प्रोत्साहन मिल रहा है व उनमें पढ़ने की इच्छशक्ति बाद रही है। कार्यक्रम में टीम के कार्यकर्ताओं ने भी बढकर-चढ़कर हिस्सा लिया। जिनमें भगवानसिंह, राजेन्द्र, धर्मसिंह, योगेश योगी, बाबूलाल गौड़, रामदास, राधेलाल,मुरारी लाल,अजय, महावीर, हरिकेश, कुंजीलाल, बलीचरन, मन्नू, परशुराम, मोहनसिंह, वीरसिंह, दीपक, रामफल, संजीव सहित बडी संख्या में ग्रामीण एवं बच्चों ने भाग लिया।

» पीलपुर... प्रतियोगिताओं में पुरस्कारों के साथ विजेता बच्चे

दोस्तों, इस तरह SBGBT द्वारा इन गाँवों के विकास और बेहतर प्रगति के प्रयास नियमित रूप से यहाँ चल रहे हैं। हम आशा करते हैं, कि जनसहभागिता और जनजागरुकता के द्वारा इस क्षेत्र की समस्याओं को दूर करने में अवश्य सफल होंगे। इसी के साथ आप सभी सज्जनों का हार्दिक आभार।

4. कसारा गाँव, करौली

सोच बदलो गांव बदलो यात्रा दिनांक 18 / 09 / 2018 को गाँव कसारा (मासलपुर) में "SBGBT" की 26वीं मीटिंग' का आयोजन किया गया। आपको जानकर खुशी होगी कि यह मीटिंग अब तक की सबसे लंबे समय तक चलने वाली मीटिंग रही। इस मीटिंग की विशेष बात यह रही कि इसमें कसारा गाँव की महिलाएं भी शामिल हुई थी। सभी साथियों द्वारा व्यावहारिक और अनुभव आधारित बातों से ग्रामीणों को प्रोत्साहित किया गया। जिसमें टीम के वरिष्ठ कार्यकर्ता देवेन्द्र भाई साहब ने स्वयं और हमारे पॉवरमैन (देवेन्द्र जी) की भूमिका का एक साथ बखूबी निर्वहन किया। देवेन्द्र जी के द्वारा प्रस्तुत विचार बेहद जमीनी, प्रासंगिक, यादगार और अभूतपूर्व थे।

(1) सोच बदलो गाँव बदलो टीम के अन्य कार्यकर्ता अजय रावत, हेमू सर, रूपसिंह जी धर्मवीर जी, संतराम जी, विजय कसारिया, कप्तान जी के द्वारा कसारा गाँव के युवाओं और गाँव वालों में जोश और उत्साह भर दिया। युवा विकास समिति मासलपुर के वरिष्ठ सदस्य मनोज मल्होत्रा जी, जीतू भाई, नरेश भाई और शिवराम जी व अन्य सदस्यो के द्वारा भी भाग लेकर बहुत ही बढ़िया उत्साहवर्धन किया गया।

कसारा में अतिक्रमण, युवाओं की समझाइश से चला बुल्डोजर, गांव में अब राह हुई आसान

भास्कर न्यूज | मासलपुर

गांव कसारा युवा विकास समिति के सदस्यों ने ग्रामीणों की सहमति से रास्ते में हो रहे अतिक्रमण को जेसीबी से ध्वस्त कर गांव की राह आसान कर दी है। इसके साथ रास्ता निर्माण के लिए गांव के एक भामाशाह ने अपनी जमीन भी दान में दी है।

युवा विकास समिति के मनीराम मीना ने बताया कि गांव के जलस्रोत बने कुआं पर जाने के लिए रास्ते में अतिक्रमण होने से ग्रामीणों को विद्यालय परिसर में होकर निकलना पड़ रहा था। इससे छात्र - छात्राओं की पढ़ाई में व्यवधान के साथ विद्यालय परिसर में पौधों का संरक्षण नहीं हो पा रहा था। इस मामले में युवा विकास समिति कसारा के कमल सिंह मीना,विजेंद्र सिंह, हेम राज,राधे,शिंभू,विद्याराम,भगतराम,सागर व मनोज आदि सदस्यों ने गांव की राह आसान करने के लिए ग्रामीणों से संपर्क किया। इसके बाद ग्रामीणों की सहमति से गांव का रास्ता जेसीबी से अतिक्रमण मुक्त कर दिया तथा सड़क पर मिट्टी डाल दी है। वहीं रास्ते को चौड़ा करने के लिए गांव के भामाशाह कैलाचरण ने अपनी जमीन रास्ते के लिए दान में देकर सराहनीय कार्य किया है।

मासलपुर। कसारा में जेसीबी से अतिक्रमण ध्वस्त करते युवा विकास समिति के सदस्य।

इससे ग्रामीणों को आवागमन में परेशानी से निजात मिली है। इस कार्य में युवा विकास समिति के सदस्य विजेंद्र का सहयोग सराहनीय रहा है। इसके साथ युवा विकास समिति के सदस्यों ने विद्यालय में छात्र - छात्राओं को पोषाहार वितरण के दौरान छात्राओं के लिए बैठकर खाना खाने के लिए एक अतिरिक्त कक्ष का निर्माण कराने का निर्णय किया है।

(2) कसारा गाँव के आयोजनकर्ताओं द्वारा टीम का जो स्वागत और सम्मान किया गया, उसके लिए टीम उनका हृदय से आभार प्रकट करती है। कसारा एक प्राचीनकालीन गाँव है। तालाबों से घिरा यह गाँव बसावट की दृष्टि से घनी आबादी वाला है। यहाँ के ज्यादातर लोग बेहद सज्जन, सुशील और सीधे–सादे हैं। गाँव की तंग गलियाँ और कच्चे रास्ते आज भी यथावत हैं। एक उच्च प्राथमिक विद्यालय है, जो गाँव की तलहटी में बना हुआ है, जिसके चलते बारिश का अधिकांशतः पानी विद्यालय में ही समा जाता है। जैसाकि देखने में भी आया कि विद्यालय के एक तरफ का विशाल भाग पानी और कीचड़ से भरा हुआ था। संध्या और सुबह के समय गाँव के ही कुछ अपचारी बच्चे विद्यालय की दीवारों पर बैठकर शौच करने का आनंद लेते हैं।

(3) कसारा (मासलपुर) में कमल राम जी कैप्टन (मर्चेंट नेवी) के मार्गदर्शन में सागर सिंह जी, विजेंद्र जी, विद्याराम जी, मनोज जी बैंक मैनेजर भगत राम जी और कसारा विकास समिति के सभी सदस्यों के सहयोग के द्वारा गाँव के विद्यालय परिसर में लाइट फिटिंग, पंखे, फर्श आदि सुविधाओं की व्यवस्था करके अभूतपूर्व और अप्रतिम कार्य की शुरूआत की है।

(4) मीटिंग के दौरान टीम के प्रत्येक वक्ता ने अपनी ओजस्वी वाणी और बुद्धिमता से लोगों में जबरदस्त ऊर्जा और उत्साह का संचार किया। मीटिंग के बाद पुनः गाँव में ही रात्रि के दौरान भौमिया मंदिर पर "कसारा विकास समिति" के सभी सदस्यों और गाँव वालों की सर्वसम्मति से निम्नलिखित निर्णय लिए गए –

i. इससे पूर्व गाँव के सरकारी विद्यालय की मुख्य समस्या यह थी कि गाँव के लोग स्कूल की बाउंड्री के बगल में कचरा डालते थे और शौच करते थे जिसके कारण विद्यालय के आस पास गंदगी और कीचड़ रहती है, इसलिए मीटिंग में यह निर्णय लिया गया कि गांव का कोई व्यक्ति विद्यालय के आस पास गंदगी फैलाते हुए अथवा शौच करते हुए पाया जाता है तो कसारा विकास समिति द्वारा 1100 रुपये का जुर्माना दंडस्वरूप लिया जाएगा और सूचना देने वाले को 500 रुपये का इनाम दिया जाएगा और जुर्माना नहीं देने पर संपूर्ण गाँव की तरफ से उक्त व्यक्ति को बहिष्कृत किया जाएगा।

ii. दूसरा सबसे महत्वपूर्ण निर्णय यह किया गया कि गांव में पूर्ण रूप से शराब और जुआ खेलने पर पाबंदी लगा दी गई है। कसारा विकास समिति द्वारा इस निर्णय के उल्लंघन करने वाले व्यक्ति पर 1100 रुपये का जुर्माना दंडस्वरूप लिया जाएगा और सूचना देने वाले व्यक्ति को 500 रुपये का इनाम दिया जाएगा और जुर्माना नहीं देने पर संपूर्ण गाँव की तरफ से उक्त व्यक्ति को बहिष्कृत किया जाएगा।

iii. मीटिंग में यह भी निर्णय लिया गया कि गांव के बीचो–बीच स्थित रिंग रोड को अतिक्रमण मुक्त किया जाएगा।

कसारा विकास समिति, गाँव के समावेशी विकास मे सहभागी बनने और समिति की बैठक में उपस्थित होने वाले सभी महानुभावों का दिल से आभार व्यक्त करती है।

5. परीता गाँव, करौली

गाँवों में सकारात्मक और रचनात्मक बदलाव की मुहिम "सोच बदलो गांव बदलो यात्रा" अपने 27वें पड़ाव के रूप में दिनांक 28/10/2018 को गाँव परीता (करौली) पहुंची। इस जागरूकता सभा का आयोजन गांव के युवाओं और कर्मचारियों के संगठन "सोच बदलो–परिता बदलो" के आग्रह पर किया गया। "सोच बदलो–परिता बदलो" ग्रुप के सदस्यों में अपने गांव के प्रति लगाव और सकारात्मक परिवर्तन लाने की इच्छाशक्ति काबिले तारीफ है।

1. परीता गाँव करौली से पश्चिम की ओर करीब 15–16 किमी की दूरी पर अवस्थित लगभग 4000 हजार की आबादी वाला विशाल और खूबसूरत गाँव है। जिसमें सभी समुदायों और समाजों के लोग बडे ही प्रेम और सद्भाव से रहते हैं। ऐसी समरसता इतने विशाल गावों में कम ही देखने को मिलती है, जो वाकई अनुपम और सराहनीय है। भौगोलिक रूपरेखा और पक्के मकानों को देखकर तो परीता, गाँव कम कस्बा ज्यादा लगता है।

2. जैसे ही, टीम ने परीता गाँव में प्रवेश किया, गाँव के लोगों ने बैण्ड बाजों के साथ टीम का अभूतपूर्व और जोरदार स्वागत किया। यह पहला अवसर था, जब टीम बैण्ड बाजों के साथ गाँव में होकर कार्यक्रम स्थल तक पहुंची हो। इस अनौखे और अद्भुत सत्कार के लिए SBGBT परीता गाँव की युवा टीम का हार्दिक आभार प्रकट करती है। परंतु भविष्य में किसी मीटिंग में इस प्रकार के कार्यक्रम की पूर्ण रूप से मनाही करती हैद्य सोच बदलो गांव बदलो टीम केवल और केवल जमीनी धरातल पर काम करने और बदलाव लाने के लिए जानी जाती है।

3. SBGBT की विचारधारा और धरातलीय परिणामों से प्रेरित होकर इस गाँव की युवाशक्ति ने तमाम समस्याओं और विपरीत परिस्थितियों से नियमित जूझते हुए एक नयी क्रान्ति और सोच पैदा करने का बीड़ा उठाया है, जो इन नौजवानों की कर्मठता और जागरुकता का परिचायक है। यह युवा वर्ग अपने गाँव की समस्याओं को लेकर बेहद चिंतित है और उन सभी समस्याओं के समाधान हेतु नियमित रूप से प्रयासरत है। इसी के फलस्वरूप अपने गाँव की दिशा और दशा दोनों को

बदलने के उद्देश्य से गाँव के कुछ युवा क्रान्तिकारियों ने 'SBGBT' की कार्यप्रणाली और अवधारणा से प्रेरित होकर हाल ही में "सोच बदलो–परिता बदलो" का गठन किया है, जिसके जरिए इस टीम ने अपने गाँव में कई रचनात्मक कार्य किए हैं, जैसे –

1. गाँव के प्रत्येक खंबे पर स्ट्रीट लाइट लगाना।
2. गाँव के मुख्य रास्तों को अतिक्रमण मुक्त करके स्वच्छ और साफ रखना।
3. गाँव के कर्मचारी वर्ग को संगठित कर गाँव की उन्नति और खुशहाली के लिए सार्थक अवदान हेतु प्रेरित करना।
4. जनसहभागिता के माध्यम से गाँव में बहुआयामी नवाचार स्थापित करना आदि कार्य प्रमुख हैं।

4. "सोच बदलो–परिता बदलो" का मानना है कि सोच बदलो गांव बदलो टीम के आगमन के बाद उनका उत्साह, उमंग और उल्लास दुगना हो गया हैद्य गांव के युवाओं ने विश्वास दिलाया की करौली जिले के आसपास के गांव में हो सोच बदलो गांव बदलो मुहिम को आगे लेकर जाएंगे। युवाओं ने टीम को विश्वास बताया है कि गांव में बहुत से काम प्रस्तावित हैं, जैसे –

i. गांव में व्याप्त व्यसन और नशा खोरी जैसी बुराइयों को समाप्त करना।
ii. गांव में नियमित रूप से स्वच्छता अभियान चलाकर साफ–सफाई बनाए करना।
iii. घरों से निकलकर मुख्य सडकों पर व्यर्थ में बहने वाले पानी को पूर्णतः बंद करना, साथ ही गाँव को स्वच्छ बनाने के लिए पानी को घरों के अंदर गड्ढे खोदकर उसके उचित सरंक्षण की व्यवस्था करना।
iv. बच्चों के लिए निःशुल्क कोचिंग और पुस्तकालय की व्यवस्था करना।
v. गाँव को अतिक्रमण मुक्त करना।
vi. गाँव में सार्वजनिक स्थानों व सड़कों पर स्ट्रीट लाइट का उचित प्रबंधन करना।
vii. गाँव में ताश, जुआ जैसे खेलों पर प्रतिबंध लगाना तथा इसके साथ ही गाँव में प्रचलित समस्त कुरीतियों को खत्म करने के लिए हर संभव प्रयास करना।

5. मीटिंग के दौरान SBGBT के सभी कार्यकर्ताओं ने अपने अनुभवों और ज्ञान के आधार पर गाँव वासियों को प्रेरित और प्रोत्साहित किया। साथ ही टीम के द्वारा अब तक किये गये सार्थक प्रयास और उनसे मिली उपलब्धियों के बारे में बखूबी से अवगत कराया। टीम के कार्यकर्ताओं ने गांव वालों को विश्वास दिलाया कि सकारात्मकता और बदलाव की इस मुहिम में हम आपके साथ कदम से कदम मिलाकर आगे चलने को तैयार हैंद्य टीम के साथियों ने इस प्रकार तुम बदलाव से उनके जीवन उनके परिवार और उनके गांव में हुए बदलावों के बारे में विस्तृत रूप से चर्चा की जिसका बहुत ही सकारात्मक प्रभाव गांव वालों के उत्साह में देखने को मिलाद्य टीम के कार्यकर्ताओं ने गांव की युवा पीढ़ी को पूरे जोश और जुनून के साथ गांव के लिए कार्य करने हेतु प्रेरित किया।

6. कार्यक्रम का समापन ग्रावासियों द्वारा भगवान नृसिंह को साक्षी मानकर, समस्त कुरीतियों को जड़ से खत्म करने और गाँव की उन्नति और विकास के लिए तन–मन–धन से सहयोग करने की शपथ लेकर किया गया। इस सुखद समापन के पश्चात गाँव के बुद्धिजीवी और प्रबुद्धजनों ने आशीर्वाद स्वरूप टीम को धन्यवाद ज्ञापित किया।

7. SBGBT परीता गाँव के युवा और बुजुर्गों की कर्मठता एवं जज्बे को सलाम करती है। जिस तरह की एकता, सहिष्णुता, सद्भावना और समर्पण गाँव के लोगों में देखा गया, वह वाकई अनुपम और सराहनीय है। परीता गाँव का हर कार्यकर्ता अपने गाँव को उन्नति की राह पर ले जाने का दम रखता है, जिसमें बुजुर्गों का भरपूर सहयोग और आशीर्वाद भी शामिल है। अतः निश्चित ही, इनके प्रयास दूरगामी परिणाम लेकर आएंगे।

8. यात्रा के अंत में एक अद्भुत और अविश्वसनीय वाकया हुआ; जिसके बारे में सभी साथियों को बताना बेहद जरूरी समझते हैं –

जैसे ही टीम विदा होकर गाँव से बाहर निकली, तो गाँव के ही एक युवा ने हमारी गाड़ी को गाँव के मुहाने पर बने रेस्टोरेन्ट पर रोका। बेहद सुन्दर और शानदार रेस्टोरेन्ट के ठीक बगल में एक शराब का ठेका भी चिपका हुआ था। यह सारी धरोहर इस युवा की थी। जो व्यसनों से मुक्त बेहद गंभीर और प्रभावशाली व्यक्ति था। टीम के विचारों से इस युवा का ऐसा हृदय परिवर्तन हुआ, कि उसने टीम से बडे ही पश्चात्ताप और विनम्र भाव से पूरे होश–ओ–हवास में आश्वासन देकर कहा, कि मैं सालों से चल रहे इस ठेके को बंद करके यहाँ स्कूल खोलना चाहता हूँ। हालांकि हम अभी भी इस बात से पूर्णतः आश्वस्त नहीं है, फिर भी यह देखना ज़रूरी है, कि उस युवा ने स्वेच्छा से टीम को जो वचन दिया है, उसे वह कब तक पूरा करता है। वैसे ये पल बेहद आश्चर्यजनक और हर्षित करने वाले थे। अगर उस नौजवान ने अपने कहे अनुसार बात रख दी, तो यह टीम के लिए विशेष उपलब्धि साबित होगी।

9. SBGBT इस तरह की सोच रखने वाले हर उस व्यक्ति का सम्मान और प्रशंसा करती है, जो आगे आकर मानव हित में कार्य करना चाहता है। साथियों, सकारात्मकता और रचनात्मकता की इस वैचारिक मुहिम को, जन–जन तक पहुंचाना हमारा मूल उद्देश्य और कर्तव्य है। अतः आज जिस तरह लोग SBGBT को आशा और विश्वास की निगाहों से देख रहे हैं, तो हमारी भी ये नैतिक जिम्मेदारी बनती है, कि हम पूरी निष्ठा और समर्पण के साथ उनकी उम्मीदों पर खरा उतरने का हर संभव प्रयास करें। निश्चित ही, आप सभी के अपार सहयोग और समर्पण से समाज परिष्करण और मानवहित में बहने वाली यह क्रांतिकारी पावन धारा इसी तरह प्रवाहित होती रहेगी। इसी आशा और विश्वास के साथ आप सभी सज्जनों का हृदय से अनंत आभार।

■■■

ज़िंदगी जीने के दो तरीके हैं - • जो हो रहा है, होने दो

•• उसे बदलने की कोशिशें करने की जिम्मेदारी उठाओ

गांव का जीवन

मेरे गाँव की ठंडी छाँव में,
मिट्टी की खुशबू आती है।
लहलहाते खेतों में फसलें देख,
सारी थकान उतर जाती है।।

अपनापन है, यहाँ जमीं में,
जो दूर तक नजर आता है।
मेरे गाँव की ठंडी छाँव में,
हर इंसान खुश नज़र जाता है।।

है नीम खड़ा, बरगद भी है,
चौपालें वहाँ लगा करतीं हैं।
मेरे गाँव की ठंडी छाँव में,
अपनेपन की महक आती है।।

पकती है लहलाकर फसलें,
तो त्यौहार बन जाते है।
खुशहाल पर्वों पर,
मेले यहाँ लग जाते हैं।।

सब रहतें हैं मिलजुलकर, समभाव से,
न वैमनस्यता, न बैरभाव है।
है धरा, मेरे गांव की,
जिसमें सिर्फ मित्रता का भाव है।।

कैद हो गए हैं, शहर की बंद गलियों में,
वो खुशबू नहीं मिलती।
वहाँ, न अपनापन है, न ही मानवता,
जो चौपालों में मिला करती थी।।

भीड़ तो बहुत है सड़कों पर,
पर आपस में अनजान हैं।
वहाँ कहाँ से आएगा,
वो ठंडी छाँव का अपनापन।।

लोगों के पास हैं पैसे कम,
फिर भी उनकी बातों में दम होती है।
शहरों की बड़ी–बड़ी बातें,
हमेशा खोखली ही मिलती हैं।।

पाँव चाँद पर भले ही ना पहुँचें,
दुःख–दर्द में दोस्त के घर,
चौबीस घंटे चक्कर लगातें हैं।
सुना है, शहरों में पानी भी बिकता है,
मेरे गाँव में बुजुर्गों से,
दुआएं मुफ्त में मिलतीं हैं।।

लम्बी चौड़ी सड़कों पर जहर उड़ता है,
मेरे गाँव में उडती रेत से भी,
सौंधी सी खुशबू आती है।
पेड़ कटवाकर महल अपना तुमने सजाया है,
आकर देखो, गाँव हमारा,
आंगन हरे–भरे पेड़ों से सजाया है।।

पेड़ों को काटकर गाँव को शहर हमने बना दिया,
प्रकृति का ये अनमोल तोहफा हमने गवाँ दिया।
सौम्य सुरीला जीवन, रिश्तों का अपनापन है,
धरा है जो पावन मेरी,
यही मेरे गांव का जीवन है।।

– **नेमीचन्द मीना**, निरीक्षक
SBGBT सदस्य

6. मीना दाँत का पुरा गाँव, करौली

गाँवों में सकारात्मक और रचनात्मक बदलाव की मुहिम "सोच बदलो गांव बदलो यात्रा" अपने 28वें पड़ाव के रूप में दिनांक 04/11/2018 को गाँव मीना दांत का पुरा (करौली) पहुंची। इस जागरूकता सभा का आयोजन गांव के युवाओं और कर्मचारियों के आग्रह पर किया गयाद्य जिसमें समस्त ग्रामीणों एवं पड़ोसी गाँव के लोगों ने बढ–चढ़कर भाग लिया। टीम के सदस्य भी बडी तादाद में जनजाग्रति फैलाने हेतु इस कार्यक्रम में उपस्थित हुए।

SBGBT टीम के नेतृत्व में आयोजित यह मीटिंग जनजागरुकता, जनकल्याण और जनसहभागिता की दृष्टि से विशेष महत्व रखती है। जिसका उद्देश्य समाज में व्याप्त सामाजिक बुराइयों, कुरीतियों और व्यसन आदि को ख़त्म कर एक स्वस्थ और सुखी समाज का निर्माण करना है। कार्यक्रम के दौरान SBGBT के प्रखर वक्ताओं ने अपने ओजस्वी एवं सकारात्मक वक्तव्यों से युवाओं और ग्रामीणों में जनजाग्रति पैदा करने के सार्थक प्रयास किये गये।

मीटिंग में मीना दांत का पुरा गाँव के अलावा कोटरी, पालनपुर, मोठिया पुरा के ग्रामीणों एवं युवाओं ने भी भाग लिया। जिसमें स्थानीय गाँव की महिलाओं ने भी बड़ी संख्या में भाग लेकर मीटिंग को यादगार बना दिया। मीटिंग के अंत में SBGBT की विचारधारा से प्रेरित और प्रभावित होकर 'मीना दाँत का पुरा' के ग्रामीणों ने एकराय से ये संकल्प लिया कि समाज में व्याप्त सामाजिक बुराइयों को खत्म किया जायेगा। जिसके चलते उसी समय ग्रामवासियों वासियो ने 'मृत्युभोज' को पूर्ण रूप से बंद करने का निर्णय लिया। ग्रामीणों के द्वारा जनहित में लिए गए अन्य महत्वपूर्ण निर्णय इस प्रकार हैं–

i. शिक्षा के महत्व को ध्यान में रखते हुए गाँव में यथाशीघ्र पुस्तकालय की स्थापना करना।

ii. गाँव में संचालित उच्च प्राथमिक विद्यालय को क्रमोन्नत करवाने हेतु यथासंभव प्रयास करना।

iii. गरीब असहाय और जरूरतमंद बच्चों को गाँव के कर्मचारी वर्ग के द्वारा शिक्षा के बेहतर अवसर और सहयोग प्रदान करना।

iv. गाँव के बच्चे और युवाओं का उचित मार्गदर्शन करते हुए उन्हें जागरूक और जिम्मेदार नागरिक बनाना।

v. गाँव को हमेशा स्वच्छ और साफ बनाए रखना।

5. इससे पूर्व ग्राम विकास समिति द्वारा प्रकृति और पर्यवारण संरक्षण को ध्यान में रखते हुए, गांव में 'पेड़ काटने पर पूर्णतः प्रतिबंध' लगा दिया गया है। इसके पश्चाच भी, अगर किसी व्यक्ति द्वारा नियम की अवहेलना कर 5 पेड़ काटे जाते हैं, तो उस पर 5100 रुपये के दंड का प्रावधान है।

6. गाँव के युवाओं द्वारा 'ग्रीन विलेज क्लीन विलेज अभियान' के तहत गाँव में इस बार '2100 पेड़' लगाए गए, जिनकी सुरक्षा और संरक्षण हेतु 'ट्री गर्ड' का भी प्रबंध भी किया गया है।

7. अशिक्षा और जानकारी के अभाव के चलते ग्रामीण सरकारी योजनाओं के लाभ से वंचित ना रहें, इसके लिए गाँव में ही युवाओं द्वारा 'ई–मित्र सेवा केन्द्र' की स्थापना की गई है।

8. मीटिंग के अंत में समस्त गाँव वासियों द्वारा ये 'सपथ' ली गई, कि गाँव में व्याप्त समस्त सामाजिक बुराइयों, धूम्रपान, शराब आदि व्यसनों पर प्रतिबंध लगाया जाएगा एवं आपसी प्रेम, सद्भाव, सहयोग समरसता और भाईचारा स्थापित कर गाँव को आर्थिक, समाजिक और नैतिक रूप से सक्षम और मजबूत बनाने के हरसंभव प्रयास किए जाएंगे।

सोच बदलो गांव बदलो टीम का बढ़ता कारवां

एक्सप्रेस न्यूज सर्विस

करौली 5 नवम्बर। डॉ सत्यपाल सिंह मीना ,संयुक्त आयकर आयुक्त, के निर्देशन में गत दिवस सोच बदलो गांव बदलो टीम की 29वी मीटिंग का आयोजन हिंडौन क्षेत्र के ग्राम मीना दांत का पुरा में किया गया जिसमें समाज में जन जागरुकता और जन सहभागिता को बढ़ावा देने के लिए एस बी जी बी टी के प्रखर वक्ताओं ने अपने ओजस्वी भाषणों से युवाओं और ग्रामीणों को मंत्रमुग्ध कर दिया।

मीटिंग में सोच बदलो गाँव बदलो टीम की कोर टीम के साथ साथ मीना दांत का पुरा गाँव के अलावा कोटरी, पालनपुर , मोठीपा पुरा और अन्य आस -पास के युवाओं ने भाग लिया

मीटिंग में एक विशेष बात यह रही कि इसमें गॉव की महिलाओं ने भी भाग लिया

मीटिंग के दौरान ही सोच बदलो गाँव बदलो विचारधारा से ओत प्रोत होकर मीना दाँत का पुरा के ग्रामीणों ने संकल्प लिया कि समाज मे विद्यमान सामाजिक बुराइयों का अंत किया जायेगा जिसके अन्तर्गत आज ग्राम मीना दांत के पुरा वासियो ने मृत्युभोज को पूर्ण रूप से बंद कर दिया गया। सामाजिक बुराइयों को दूर करने में शिक्षा के अहम योगदान को ध्यान में रखते हुए गाँव में लाइब्रेरी की स्थापना और विद्यालय को क्रमोन्नत करने एवं गरीब बच्चों को शिक्षा देने के लिए सभी कर्मचारियों ने अपनी सहमति प्रदान की। वर्तमान में ग्राम मीना दांत का पुरा में 66 कर्मचारियों है जिनको आने वाले कुछ सालों में 100 करने का लक्ष्य रखा गया

इससे पूर्व ग्राम विकास समिति द्वारा पर्यवारण सुरक्षा को ध्यान में रखते हुए गांव में पेड़ काटने पर पूर्ण प्रतिबंध लगा दिया है तथा नियम की अवहेलना न हो इसलिए 5 पेड़ काटने पर 5100 रुपये का दंड का प्रावधान किया गया साथ ही युवा साथीयो द्वारा गांव में 2100 पेड़ लगाए गए और उनकी सुरक्षा के लिए जाल का प्रबधंन किया गया। वर्तमान में समस्त सरकारी सुविधा ऑनलाइन है इसके लिए गांव में ई मित्र की स्थापना की गई जिससे कि समस्त ग्राम वासी सरकारी योजनाओं का फायदा उठा सके

मीटिंग के अंत मे सभी ग्राम वासियो ने शपथ ली कि ग्राम की सभी सामाजिक बुराइयों धूम्रपा शराब आदि को बंद किया जायेगा और समाज आपसी भाईचारा स्थापित किया जायेगा जिससे समाज का सम्पूर्ण सामाजिक आर्थिक विका सम्भव हो सके। सोच बदलो गाँव बदलो की इ यात्रा का दूरगामी सकारात्मक यह पड़ा कि हिंडौ क्षेत्र के समूचे एरिया में युवाओ को जनजागरूक और जनसहभागिता से गाँव गाँव में बदलाव कर की दिशा मिली है सोच बदलो गाँव बदलो टी विशेष रूप से मीना दांत के पुरा के सभी युवा और गाँव वालो का हार्दिक आभार व्यक्त करती जिन्होंने टीम की शानदार मेजबानी की और ज्या से ज्यादा गाँव वाले और युवाओ को बुलवाया ग

साथ मे टीम के सभी सदस्य जिन्होंने अप कीमती समय निकालकर इस मीटिंग में भाग लिय

9. SBGBT की इस वैचारिक क्रान्ति ने समूचे 'हिंडौन क्षेत्र' के युवाओं को जबरदस्त रूप से प्रभावित किया है, जिसके फलस्वरूप यहाँ का प्रत्येक युवा अपने गाँव के बेहतर उत्थान के लिए प्रयास करने में जुट गया है। किसी भी गाँव की उन्नति और खुशी जनजागरुकता और जनसहभागिता पर ही निर्भर है, जो धीरे–धीरे SBGBT के अथक और सार्थक प्रयासों से लोगों में प्रसारित हो रही है।

10. मीना दाँत के पुरा में अपना अमूल्य समय और योगदान देकर उपस्थित हुए सभी सदस्यों और ग्रामीणों का SBGBT हार्दिक आभार व्यक्त करती है और ये आशा करती है, कि समाज परिवर्तन की इस जनहितैषी मुहिम को आप सभी का संबल और सहयोग इसी तरह मिलता रहे। इन्हीं मंगलकामनाओं के साथ आप सभी का पुनः अनंत आभार।

7. पद्मपुरा (हरियापुरा) गाँव, धौलपुर

SBGBT "सोच बदलो गांव बदलो यात्रा" कार्यक्रम के माध्यम से ग्रामीण परिवेश में जन जागरूकता और जन जागृति के लिए निरंतर प्रयासरत है। टीम का मानना है कि ग्रामीण परिवेश में बदलाव लाने के लिए जन जागरूकता सबसे महत्वपूर्ण है। जन जागरूकता के माध्यम से ही प्रशासनिक सहयोग और सरकारी योजनाओं की सही जानकारी सुनिश्चित की जा सकती है। बदलाव की इस मुहिम को आगे बढ़ाते हुए और टीम के महत्वपूर्ण कार्यक्रम "शिक्षा पाओ–ज्ञान बढाओ प्रतियोगिता" को जन जन तक पहुंचाने के लिए टीम की 29वीं मीटिंग का आयोजन पदमपुरा (हरियापुरा) में किया गया।

जैसाकि आपको विदित है, कि 3.02.2019 को SBGBT के सौजन्य से धौलपुर जिले के विभिन्न गांवों को कुल 20 सर्कलों में विभाजित करके "शिक्षा पाओ–ज्ञान बढाओ प्रतियोगिता" का आयोजन किया गया। जिसमें कक्षा 6 से 12वीं तक के विद्यार्थियों ने भाग लिया था। परिणाम की घोषणा के पश्चात सफल रहे प्रथम तीन प्रतिभागियों को पुरस्कृत करने हेतु सम्मान समारोह का पहला आयोजन टीम की इस मीटिंग के साथ ही किया गया। जिसमें खैमरी गाँव के ग्रामीण और प्रतिभागी भी उपस्थित रहे। पदमपुरा गाँव के बुजुर्ग, महिला, युवा और बच्चों ने भी बडी संख्या में भाग लिया। इसके अलावा सोच बदलो–गाँव बदलो कोर टीम के वरिष्ठ सदस्य भी इस समारोह में उपस्थिति रहे। इस दौरान टीम के वरिष्ठ सदस्यों और ग्रामीणों के मध्य गहन विचार विमर्श हुआ तथा गांव की विकास के लिए विभिन्न मुद्दों पर सहमति भी बनी। आप सब सदस्यों की जानकारी के लिए विचार विमर्श का सार आपके समक्ष प्रेषित है –

1. पदमपुरा (हरियापुरा) गाँव सरमथुरा तहसील के पूर्व में 3–4किमी दूरी पर तालाब के किनारे बसा छोटा गाँव है। जिसकी कुल आबादी 500 के करीब है। यहाँ की आवीजिका का मुख्य साधन खेती और खनन कार्य है। सरमथुरा से गाँव को जोड़ने वाली मुख्य सड़क वर्षों से जर्जर पडी है, जिसके सुदृढ़ीकरण व डामरीकरण हेतु आवाज़ उठाने की दरकार है।

2. शिक्षा के बेहतर संसाधन उपलब्ध ना होने के कारण यहाँ की प्रतिभाओं को कठिन परिस्थितियों से गुजरना पडता है, इसके उपरांत भी गाँव के बच्चों में शिक्षा के प्रति जो लगन और लालसा देखी गई, वह प्रशंसनीय और अद्भुत है। भविष्य के सपने इन बच्चों की आंखों में स्पष्ट रूप से देखे जा सकते हैं।

3. कार्यक्रम का आयोजन गाँव के तालाब की पाल पर लगे विशाल वृक्ष के नीचे खूबसूरत स्थान पर किया गया। यह तालाब ही इस गाँव की आजीविका का मुख्य आधार है, जिसमें ग्रामीणों के अनुसार 25 प्रतिशत पानी अभी भरा है, जो इस बार के सीजन को आसानी से बिताने में पर्याप्त है।

4. गाँव के रास्ते अति सँकरे और दुर्गम हैं, जिनके बगल घूरे आदि के ढेर लगे हुए हैं। जिन्हें सुगम और विस्तृत करने के लिए गाँव की युवा टीम निरंतर प्रयासरत है। इस टीम में अपने गाँव को बदलने का जो जज्बा और समर्पण है, वह वाकई अतुलनीय और अनुकरणीय है।

5. ग्रामीण क्षेत्रों में तमाम परिस्थिति और अभावों से जूझ रही प्रतिभाओं को निखारने और उन्हें बेहतर व सक्षम नागरिक बनाने के उद्देश्य से शिक्षा पाओ ज्ञान बढाओ प्रतियोगिता ने इस गाँव के बच्चों के उज्ज्वल भविष्य के निर्माण हेतु मजबूत बुनियाद स्थापित करने का कार्य किया है। जो निश्चित रूप से इन नौनिहालों के लिए वरदान साबित होगी।

6. कार्यक्रम के दौरान टीम के प्रत्येक सदस्य ने अपने विचार रखते हुए, टीम के विजन, संकल्प, उद्देश्य और कार्य प्रणाली के बारे में ग्रामीणों को सहजता से अवगत कराया। इसके बाद प्रतियोगिता में सफल हुए कुल 18 बच्चों को प्रशंसा प्रमाण पत्र, शील्ड, स्कूल बैग, पैन आदि पुरस्कार देकर सम्मानित किया गया।

7. इस कार्यक्रम की सबसे महत्वपूर्ण बात ये रही, कि गाँव के बुजुर्ग व्यक्तियों के साथ–साथ आदरणीय बुजुर्ग माताओं ने भी अपने हाथों से पुरस्कार देकर बच्चों को सम्मानित करके उनका मनोबल बढाया। अपने जीवन के सर्वोच्च पलों में ऐसा अभूतपूर्व अवसर पाकर बूढी माताओं के चेहरे पर जो उत्साह और खुशी के भाव झलक रहे थे, वह अविस्मरणीय और मनमोहक थे। आज गाँव के बच्चे, युवा और बुजुर्गों में ऊर्जा और प्रसन्नता का जो महौल देखा गया, वह अभूतपूर्व था। ऐसा नजारा टीम के प्रत्येक कार्यकर्ता के हृदय को हर्ष और गौरव से भर देता है। शिक्षा के प्रति जो लगन, जिज्ञासा, और जागरुकता यहाँ के बच्चों में देखी गई वह प्रशंसनीय और अप्रतिम है।

दोस्तों, SBGBT का ये मानना है, कि किसी भी गाँव, समाज और राष्ट्र के पिछड़ेपन एवं उनकी समस्याओं का निवारण केवल शिक्षा के बेहतर और सुलभ माध्यम से ही किया जा सकता है। SBGBT द्वारा ग्रामीण क्षेत्रों में जनजागरुकता और जनसहभागिता के साथ ही बच्चों को उचित शैक्षिक संस्कार और संसाधन प्रदान करने के लिए भी विशेष बल दिया जा रहा है। बच्चों के सर्वांगीण विकास को सहज रूप से धरातलीय स्तर पर सफल बनाना टीम का मौलिक संकल्प है। जिसके बहुआयामी परिणाम निकट भविष्य में हम सभी को देखने के लिए मिलेंगे।

आज के कार्यक्रम को सफल और यादगार बनाने के लिए SBGBT सर्वप्रथम पदमपुरा गाँव की युवा टीम, बुजुर्ग, और माता बहनों का विशेष आभार प्रकट करती है। इस गाँव के युवा जिस जज्बे और जिम्मेदारी के साथ गाँव के प्रति अपने कर्तव्य का पालन कर रहे हैं, वह इस गाँव की दिशा और दशा को बदलने में अवश्य सफल होंगे। टीम की अनंत शुभकामनाएं आपके साथ हैं।

इसके अलावा दूर–दूर से इस भीषण गर्मी में भी पधारे समस्त आगंतुक और साथीगणों का भी आभार, जिन्होंने जनोत्थान की इस पुनीत मुहिम में अपना अमूल्य योगदान दिया। आप सभी का स्नेह और सहयोग इसी तरह हमारे संकल्पों को संबल प्रदान करता रहे। इसी के साथ आप सभी सज्जनों का पुनः हार्दिक आभार।

8. दाँतासूती गाँव, सवाई माधोपुर

गाँव दाँतासूती, तहसील बामनवास, जिला सवाई माधोपुर में आमजन के सहयोग से विगत एक दो वर्षो में काफी जन कल्याणकारी एवं स्मार्ट विलेज का सपना साकार करने के लिए काफी काम किए गए हैं और सभी ग्रामीणो का अभी और कुछ बेहतर करने के लिए प्रयास जारी है । पिछले साल एवं इस साल किए गए काम इस तरह है–

1. इस वर्ष बरसात के मौसम में करीब डेढ़ सौ पौधों का वृक्षारोपण का काम किया गया है। यह पहली पहली प्रयास था इस वजह से कम पेड़ लगाये।
2. हमारे गाँव के स्कूल में सभी छात्रों को सर्दी में जूते, मौजे एवं स्वेटर वितरित की गई एवं कुछ स्टेशनरी के सामान भी वितरित किया गया है। स्कूल में छात्रों के लिए फर्नीचर की भी व्यवस्था की। स्कूल में भी वृक्षारोपण किया गया है।
3. हमारे गाँव में जो रास्ते खराब थे उनको सुधरवाया गया है और हम सब का प्रयास जारी है।
4. आमजन के सहयोग से गाँव के प्रत्येक बिजली स्तम्भ पर एलईडी बल्ब लगाये गये।
5. जो हमारे पानी के ट्यूबवेल की मोटर खराब थी उन सबको सही करवाया ताकि ग्रमीणों को पानी की किल्लत का सामना न करना पड़े।
6. जहाँ पर हमारे गाँव में नल (ट्यूबवेल) पर नहाने के लिए चबूतरा बनवाया जा रहा है।
7. साफ सफाई के लिए स्कूली बच्चो के साथ एक रैली का आयोजन किया गया जिसके तहत लोगों को जागरूक किया गया है तथा प्रमुख स्थानों पर कचरा पात्र लगवाए गए।
8. गांव के सौंदर्यकरण को मद्देनज़र रखते हुए प्रमुख स्थानों पर बेंच लगवाई गई जिससे आम लोग और ग्रामवासी आराम से बैठ सकें।

अभी तक यह सब काम किये गए है और आगे के लिए भी टीम का सतत प्रयास जारी है।

महत्वपूर्ण यह नहीं
कि आप
कहाँ हैं ?

महत्वपूर्ण यह है
कि आप जहाँ हैं
वहाँ क्या कर रहे हैं ?

9. हुलासपुरा गाँव, धौलपुर

"होली के त्योहार पर सोच बदलकर ग्रामीण हुए बदलाव के लिए एकजुट"

ग्रामीण भारत को एक नया रूप देने, मानवीय मूल्यों के संवर्द्धन, सामाजिक, पर्यावरणीय एवं शैक्षिक सरोकारों से संबंधित विचारधारा वाली टीम 'सोच बदलो गाँव बदलो' के कारनामों की आवाज़ दूर–दूर तक फैल चुकी है। टीम द्वारा बदलाव की दिशा में किए जा रहे निरंतर प्रयासों की बयार गाँव धनौरा से प्रारंभ होकर न केवल धौलपुर जिले तक सीमित है बल्कि जिले की सीमा को पार कर अंतरराज्यीय सीमा को भी पार कर चुकी है। टीम के निःस्वार्थ भाव से परिपूर्ण ग्रामीण क्षेत्रों में बदलाव सम्बंधी ध्येय, जनहितैषी, पर्यावरण हितैषी एवं जनसहभागिता वाले कार्यों से सर्वसमाज प्रेरित होकर इस मुहिम में जुड़ना चाहता है। होली के अवसर पर बदलाव की एक चिंगारी के साथ हवा का झोंका बरौली ग्राम पंचायत के गाँव हुलासपुरा में भी जा पहुंचा। जहां गाँव के युवाओं ने गाँव में स्वच्छता कार्यक्रम आयोजित कर स्वच्छता, धूम्रपान एवं बेटी बचाओ–बेटी पढ़ाओ सम्बंधी मुद्दों की ओर ग्रामीणों का ध्यान आकर्षित करने के लिए चौपालों एवं दीवारों पर नारे लिखकर जनजागृति की अलख जगाई। गांव के युवाओं ने महाकालेश्वर मंदिर से सफाई कार्य शुरू कर गाँव के रास्तों, सड़कों एवं चौपालों की सफाई करने के साथ–साथ रास्तों से अतिक्रमण हटाए और सड़क के किनारे खड़े कंटीले पेड़ों की छंटाई करके रास्तों को साफ किया। निश्चित रूप से टीम की विचारधारा के तात्कालिक सकारात्मक परिणाम देखने को मिले। ग्रामीणों ने खुद ब खुद रास्तों से अतिक्रमण हटा लिए। टीम की प्रेरणा ग्रामीणों में मौजूद वैमनस्यता एवं द्वेष को कम करने में सार्थक साबित हुई। गाँव के बुजुर्गों एवं युवाओं ने गाँव के विकास के लिए हमेशा तत्पर रहने की प्रतिबद्धता जताई।

होली के त्यौहार को गांववासियों स्वच्छता कार्यक्रम का आयोजन

नगर संवाददाता

सरमथुरा 20 मार्च। सोच बदलो गांव बदलो टीम की विचारधारा से प्रेरित होकर सरमथुरा क्षेत्र के गांव हुलासपुरा के युवाओं ने होली के अवसर पर गांव में स्वच्छता कार्यक्रम आयोजित कर और चौपालों एवं दीवारों पर स्वच्छता एवं धूम्रपान के प्रति जागरूकता संबंधी नारे लिखकर जनजागृति की अलख जगाई। गांव के युवाओं ने महाकालेश्वर मंदिर से सफाई कार्य शुरू कर गांव के रास्तों, सड़कों एवं चौपालों की सफाई करने के साथ-साथ रास्तों से अतिक्रमण हटाए और सड़क के किनारे खड़े कंटीले पेड़ों की छंटाई करके रास्तों को साफ किया। गांव के बुजुर्गों एवं युवाओं ने गांव के विकास के लिए हमेशा तत्पर रहने की प्रतिबद्धता जताई। सोच बदलो गांव बदलो टीम डा. सत्यपाल मीना ज्वाइंट कमिश्नर आयकर वि के दिशा-निर्देशन में ग्रामीण क्षेत्रों में सकारात्मक बद की दिशा में निरंतर प्रयासरत है। इस कार्यक्रम में मुख रामनरेश, दिनेश, मुन्ना, उमेश, माखन, विद्या कुमरसिंह,दौजी एवं अन्य कार्यकर्ता शामिल हुए।

धौलपुर...होली के पर्व पर स्वच्छता कार्यक्रम के तहत साफ सफाई करते

SBGBT / 73

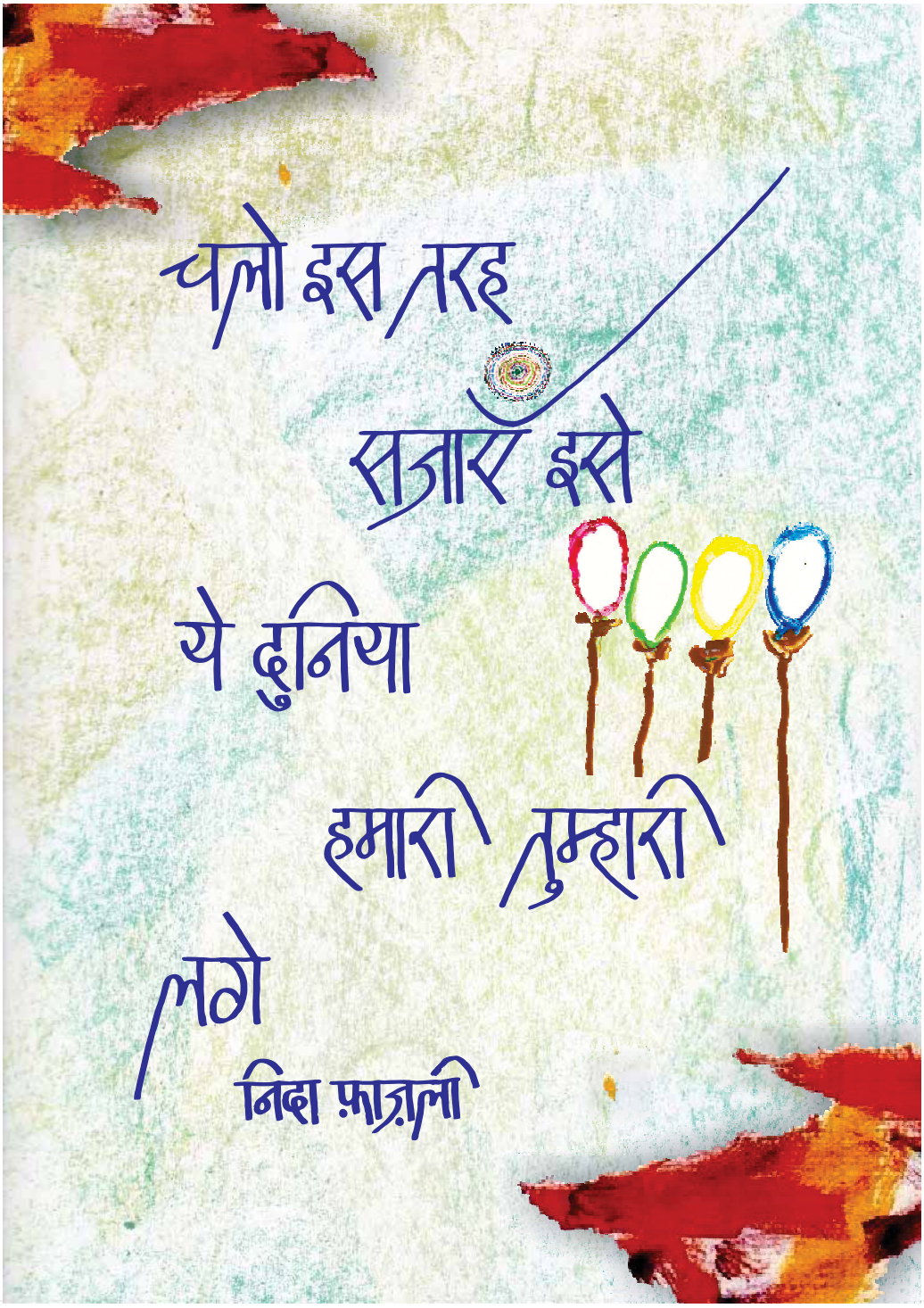

10. टोड़ा जयसिंहपुरा गाँव, अलवर

ग्रामीण विकास की धारा में जगाई शिक्षा की अलख

पूर्वी राजस्थान के आदित्य भौगोलिक स्वरूपों का केंद्र, अरावली पहाड़ियों एवं सरिस्का राष्ट्रीय उद्यान के सीमांत क्षेत्र के मध्य स्थित पांच गाँवों से मिलकर ग्राम पंचायत केंद्र टोडा जयसिंह पुरा, राजगढ़, अलवर दौसा–अलवर सीमांत को वर्गीकृत करता है। पुरातन समय से ग्रामीण विकास के क्षेत्र में यहां के निवासी कृषि एवं पशुपालन आजीविका पर निर्भर रहे हैं। विविधता में एकता के साधन और संसाधनों अपनी सामरिक पहचान यहां सन 1992 से बंद टोडा गांव की सीमा पर अरावली पहाड़ी की तलहटी के मध्य हिंदुस्तान कॉपर लिमिटेड एचसीएल का जरीना कॉपर प्रोजेक्ट मुख्य तांबा का खनन क्षेत्र रहा है। पहाड़ में लगभग 3 किलोमीटर लंबी सुरंग से कच्चे माल के परिवहन तत्कालीन समय मंक व्यय की अधिकता से कंपनी द्वारा अनुबंध समाप्त कर दिया गया था। यहां वर्तमान समय में पुनः खनन कार्य हेतु क्षेत्र का कई बार सरकार और कंपनियों द्वारा सर्वे किया जा चुका है। इस प्रोजेक्ट में तत्कालीन व्यवसाय पर आधारित संपन्न एवं शिक्षित वर्ग खेतड़ी कॉपर कांपलेक्स में पलायन कर चुके हैं तांबा खनन क्षेत्र में तत्कालीन समय में यह क्षेत्र उत्खनन में अव्वल रहा है ।

ग्रामीण विकास के परिप्रेक्ष्य में आज, विभिन्न क्षेत्रों में सेवारत युवा साथी, विकास व बदलाव की मुहिम "सोच बदलो गांव बदलो अभियान" से प्रेरित होकर मनोबल से पुनः गांव में विकास की गाथा को एक नई दिशा में स्थापित कर चुके हैं। ग्राम पंचायत टोड़ा जयसिंह पुरा का एक मात्र राजकीय उच्च प्राथमिक आदर्श विद्यालय टोड़ा जयसिंह पुरा रहा है। शैक्षिक परिणाम के स्तर पर लगातार पांच बार 2007 तक ब्लॉक स्तरीय विद्यालय पुरस्कृत रहा है। इसका संपूर्ण श्रेय प्रधानाचार्य श्री चिरंजीलाल जी महावर, निवासी गेवर को जाता है।

बोर्ड परीक्षा तैयारी के लिए सेमिनार का आयोजन

टहला| ग्राम विकास सेवा समिति टोडाजयसिंहपुरा एवं ग्राम पंचायत यूथ एंप्लाइज टीम के सामूहिक सहयोग से माध्यमिक एवं उच्च माध्यमिक विद्यार्थियों को बोर्ड परीक्षा 2019 के लिए निशुल्क कक्षाएं संचालित करके बोर्ड तैयारी करवाई जा रही है। निशुल्क संचालित कक्षाओं में ग्राम पंचायत टोडाजयसिंहपुरा क्षेत्र के अलावा अन्य क्षेत्र के विद्यार्थी यहां चल रही कक्षाओं में अध्ययन कर सकते हैं। विद्यालय की छुट्टी के बाद गांव जयसिंहपुरा में अतिरिक्त कालांश लगाए गए। जिसमें कक्षा 10वीं के 36 विद्यार्थी एवं 12वीं के 16 विद्यार्थी आ रहे हैं। इस अवसर पर मातादीन, रामफुल, रामजीलाल, कमलेश, सीताराम, शिवदयाल आदि लोग मौजूद थे।

गाँव में सकारात्मक विचारों से ग्रामीण विकास के पथ पर युवा सोच में बदलाव की भावना जागृत की गई एवं इस दिशा में हमारा प्रथम प्रयास सफल हुआ। सर्वप्रथम हमने ग्राम पंचायत स्तरीय संपूर्ण युवा वर्ग समाज के तहसील एवं सभी युवा कर्मचारियों को जोड़कर एक "ग्राम विकास सेवा समिति, टोडा जयसिंह पुरा" के नाम से सोशल मीडिया व्हाट्सएप ग्रुप का आरंभ किया। समय का सदुपयोग, वर्तमान व्यस्त जीवन का कार्यभार सोशल

मीडिया के द्वारा संपन्न हुआ। SBGBT की अभिप्रेरणा से ग्राम विकास सेवा समिति के मुख्य कार्य संपन्न हुए, वह निम्न प्रकार हैं –

ग्राम विकास सेवा समिति टोडा जयसिंह पुरा के गठन के साथ ही कार्य परिषद कोषाध्यक्ष का कार्यभार श्री अशोक जी सेवारत बैंक कर्मचारी द्वारा समिति के नाम जनवरी 2019 में चालू खाता खोला गया। बदलाव की नई सोच व भावना के साथ समिति का प्रथम कार्य गांव में शिक्षा को प्राथमिकता देना रहा। इसी क्रम में राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय टोडा जयसिंह पुरा में निम्न आय वाले परिवारों के विद्यार्थियों को परीक्षा पाठ्य सामग्री व पुस्तकों का निशुल्क वितरण किया गया। इसके अतिरिक्त विद्यार्थियों के लिए ग्राम पंचायत स्तर पर बोर्ड कक्षाओं के लिए समय–समय पर सेमिनार एवं निशुल्क दो माह की गणित एवं अंग्रेजी विषयों की ट्यूशन क्लास संचालित की गईं।

"शिक्षा पाओ ज्ञान बढ़ाओ प्रतियोगिता" के माध्यम से निशुल्क अध्यनरत विद्यार्थियों का मासिक मूल्यांकन किया गया एवं प्रथम तीन स्थान प्राप्त विद्यार्थियों को पुरस्कृत किया गया। ग्राम विकास सेवा समिति द्वारा प्रथम बार ग्राम पंचायत स्तरीय गणतंत्र दिवस पर आयोजित समारोह में सीनियर स्कूल टोड़ा जयसिंह पुरा के सत्र 2018 में प्रथम श्रेणी से उत्तीर्ण हुये प्रतिभाशाली विद्यार्थियों को संस्था प्रधान श्री सुरेश यादव, विशिष्ट अतिथि श्री मूलचंद जी मीणा एवं समारोह अध्यक्ष श्री रामजी लाल जी मीणा के कर कमलों द्वारा समिति के योगदान से पुरस्कृत एवं शैक्षिक मनोबल की प्रेरणा दी गई।

ग्राम विकास समिति, जन सहयोग एवं स्थानीय जनप्रतिनिधि व प्रशासन के सहयोग से ग्राम विकास के कार्यों में गतिशीलता आई। जागृत युवा समिति के विशेष सहयोग से 2 वर्ष पूर्व ग्राम पंचायत बजट स्वीकृत करवाकर, विद्यालय की चारदीवारी निर्माण कार्य संपन्न हुआ। आम जनता के लिए संपर्क सड़क निर्माण, स्वच्छता अभियान, लोकतंत्र का जनाधार मतदाता जागरूकता कार्यक्रम सफलतापूर्वक आयोजित किए गए। इसके अतिरिक्त, "सोच बदलो गांव बदलो अभियान" के तहत विशेष रूप से बाल विवाह एवं दहेज प्रथा पर प्रतिबंध और सामाजिक कुरीति मृत्यु भोज जैसे बिंदुओं पर विचारात्मक बहाव होने से प्रथम बार शैक्षिक वर्ग में एक नई किरण का आरंभ नज़र आया है। ग्राम विकास समिति के कई साथियों की विशेष मेहनत, सकारात्मक सोच व स्व प्रेरणा से गांव के विकास में अभिरुचि ने गाँव विकास की उम्मीदों को नया परवान चढ़ाया है।

11. मासलपुर क्षेत्र, करौली

मासलपुर क्षेत्र के गांव–गांव में युवाओं द्वारा दिवाली पर सोच बदलो गाँव बदलो मिशन के तहत गाँव–गाँव में स्वच्छता और अतिक्रमण हटाओ अभियान चलाये गए।

युवा विकास समिति, रुंधपुरा

दिनांक 08/11/2018 को युवा विकास समिति, रुंधपुरा के तत्वावधान में युवा विकास समिति के लगभग 60–70 सदस्यों ने ग्रामीणों के सहयोग से पूरे गाँव में एक सफाई अभियान चलाया गया जिसमें लगभग 4 से 5 किलो. मुख्य रास्तो की सफाई की गई।

साथ ही गाँव की पंच अथाई की पुताई और रंग रोगन भी किया गया। इसके अलावा गाँव के सभी सरकारी कर्मचारियों ने अपनी मासिक शुद्ध आय का 1 फीसदी आय गाँव विकास के फण्ड में लगाना का निर्णय लिया।

गाँव कसारा

गाँव कसारा में कसारा विकास समिति के सौजन्य में सभी युवाओं और गाँववालो के सहयोग से गाँव के सभी मुख्य रास्तों पर से अतिक्रमण हटाकर साफ सफाई के कार्य को अंजाम दिया है इसके अलावा गाँव के सभी सरकारी कर्मचारियों ने अपनी मासिक शुद्ध आय का 1 फीसदी आय गाँव विकास के फण्ड में लगाना का निश्चय किया है।

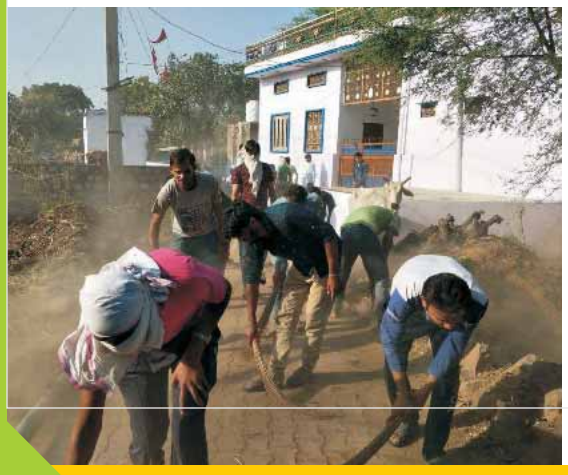

ग्राम मेगरा खुर्द

ग्राम मेगरा खुर्द में मैंगरा विकास समिति के सौजन्य में सभी युवाओं और वरिष्ठ नागरिकों के सहयोग से गाँव के सरकारी विद्यालय में जेसीबी चलाकर साफ–सफाई का कार्य अंजाम दिया और स्कूल के खेल मैदान में भी साफ सफाई का कार्य किया गया।

दीपावली पर्व पर रास्तों से अतिक्रमणों को ध्वस्त कर सफाई में किया श्रमदान

मासलपुर | गांव बदलो सोच बदलो की विचारधारा से प्रेरित होकर मासलपुर सहित आसपास के गांवों में दीपावली पर्व पर एक अनूठी पहल शुरू की है। इसके तहत जनसहभागिता से गांव रूंधपुरा,बड़ा पुरा,कसारा,रतियापुरा,मैंगरा, रौहर व धौरियानुपुरा में युवाओं ने रास्तों को चौड़ा करने के लिए अतिक्रमणों को ध्वस्त किया तथा रास्तों से गंदगी और कीचड़ को साफ करने के लिए दो दिन लगातार श्रमदान किया और पर्यावरण की सुरक्षा के लिए पौधारोपण कर संरक्षण का संकल्प लिया है। इससे गांवों का नजारा ही बदल गया है।

युवा विकास समिति के सदस्यों ने गांवों में संकरे रास्तों और गंदगी को साफ करने का निर्णय किया है। इसके लिए दर्जनों युवाओं की टीम ने जनसहभागिता से गांव के रास्तों में हो रहे अतिक्रमणों को जेसीबी से ध्वस्त किया। इसके बाद रास्तों की गंदगी और कीचड़ को साफ करने के लिए श्रमदान किया। इस कार्य में गांव की महिलाओं ने भी भाग लिया। इस दौरान युवाओं ने पर्यावरण की सुरक्षा के लिए पौधारोपण किया। इस अवसर पर पौधों के संरक्षण का

मासलपुर | श्रमदान करते युवा विकास समिति के सदस्य।

संकल्प लिया। क्षेत्र के गांवों में दीपावली पर्व पर स्वच्छता अभियान की शुरूआत करने से गांवों की दशा ही बदल गई है। अब इन गांवों में गंदगी नहीं दिख रही है। जबकि रास्तों के चौड़ा होने से आवागमन में हो रही परेशानी से निजात मिली है। युवा विकास समिति के सदस्यों ने बताया कि इस अभियान के तहत गांव की हथाइयों की मरम्मत व सफाई कराई गई है। युवाओं ने बताया कि गांव के रास्तों में रोशनी के लिए सार्वजनिक स्थानों पर बल्ब लगाए गए हैं

चोरों ने लक्ष्मी पूजन के लिए रखी नकदी चुराई

बौली | कस्बे में छोटा बाजार के समीप स्थित एक मकान से अज्ञात चोरों ने लक्ष्मी पूजन के दौरान चौकी पर रखी नकदी पार कर ली। जानकारी के अनुसार कस्बे का एक व्यवसायी परिवार बुधवार की रात को लक्ष्मी पूजन किया। लक्ष्मी पूजन के दौरान उन्होंने चौकी पर नकदी एवं आभूषण रखे थे लक्ष्मी पूजन करने के बाद परिवारजन सो गए। करीब बारह-एक बजे अज्ञात चोर ने लक्ष्मी पूजन के दौरान चौकी पर रखी करीब दो लाख रुपए की नकदी चुरा ली एवं जाने लगा। पीड़ित परिवार को घटना की जानकारी मिलते ही उन्होंने शोर मचाया लेकिन चोर भागने में सफल हो गया।

बड़ापुरा

संकल्प ग्राम विकास संस्थान बड़ापुरा के सौजन्य में माई विलेज ग्रुप के सभी सदस्यों ने गाँव के चारों तरफ के रास्तो की साफ सफाई की गई और इसके साथ गाँव के सभी मुख्य मुख्य बिजली के खंबों पर LED लाइट लगाकर गाँव को जगमग कर दिया।

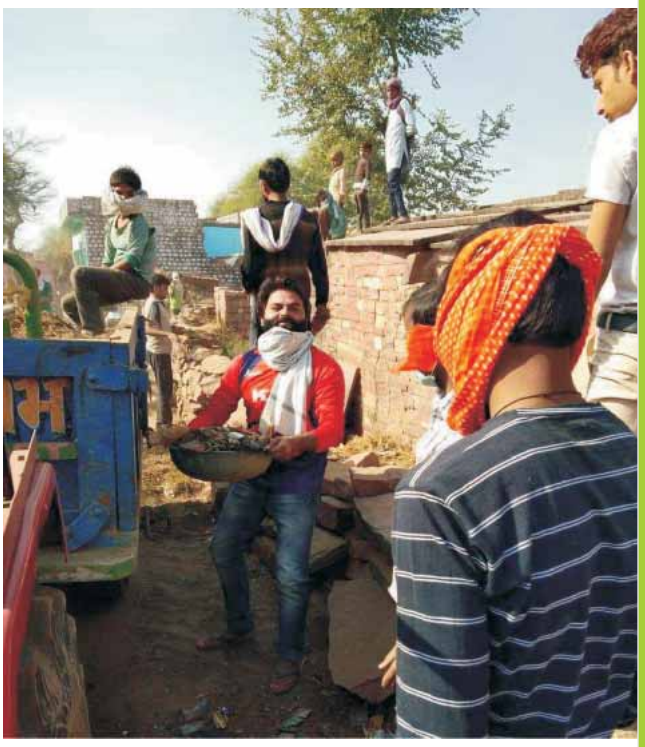

धौरीयन का पुरा

इसी प्रकार धौरीयन का पुरा युवा विकास समिति के सौजन्य में सभी युवाओं और गाँव वालो के सहयोग से सार्वजनिक बोर में मोटर लगाई और पेयजल पाइपलाइन डालकर पेयजल समस्या का निराकरण किया गया और गाँव में मंदिर परिसर की साफ सफाई और खरंजा किया गया

इसी प्रकार युवा विकास समिति गाधौली के द्वारा स्थानीय विद्यालय के मुख्य रास्ते की सफाई और नालीयो से कीचड़ को दूर फेंक कर विधालय के परिसर को अति सुंदर किया गया है।

छोटा सा गाँव मेरा पूरा बिग बाजार था...

छोटा सा गाँव मेरा पूरा बिग बाजार था...
एक नाई, एक मोची, एक लुहार था...
छोटे-छोटे घर थे, हर आदमी बड़ा दिलदार था...
कहीं भी रोटी खा लेते, हर घर में भोजन तैयार था...
दो मिनट की मैगी नहीं, झटपट दलिया तैयार था...
नीम की निम्बोली और शहतुत सदाबहार था...
छोटा सा गाँव मेरा पूरा बिग बाजार था...
अपना घड़ा कस के बजा लेते, समारु पूरा संगीतकार था...
मुल्तानी माटी से तालाब में नहा लेते, साबुन और स्विमिंग पूल बेकार था...
और फिर कबड्डी खेल लेते, हमें कहाँ क्रिकेट का खुमार था...
दादी की कहानी सुन लेते, कहाँ टेलीविजन और अखबार था...
भाई-भाई को देख के खुश था, सभी लोगों में बहुत प्यार था...
छोटा सा गाँव मेरा पूरा बिग बाजार था !!!

12. भुढा गाँव, करौली

सोच बदलो गाँव बदलो अभियान से प्रभावित होकर सर्व समाज सेवा संस्था, भुड़ा (टोडाभीम) करौली के युवाओं के द्वारा के द्वारा विगत एक वर्ष मे किए गये मुख्य कार्य निम्न प्रकार है–

कार्य–1

गांव के मुख्य मार्ग पर अतिक्रमण होने और काफी मात्रा में कीचड़ होने से आम रास्ता खराब हो रहा थे कई सालों से ग्रामीण नागरिकों को समस्या का सामना करना पड़ रहा था।

संस्था के सदस्यों ने इस समस्या को जड़ से खत्म करने का संकल्प लिया और इसके लिए उक्त मुख्य मार्ग के आसपास रहने वाले लोगों से व्यक्तिगत सम्पर्क कर और मान मनोब्बल कर अतिक्रमण हटाने के लिए राजी किया। इसके बाद सभी ग्राम वासियों को साथ मे लेकर और ग्राम पंचायत के सहयोग से उन रास्ते में जेसीबी चलाकर अतिक्रमण मुक्त करवाया इसके बाद उन सभी रास्तों की युवाओं द्वारा साफ सफ़ाई की ।

कार्य –2

26 अगस्त 2018 को गांव भुड़ा मे संस्था के नियम अनुसार "प्रतिभा सम्मान समारोह" का आयोजन किया गया जिसमे मुख्य अतिथि के रूप मे पास के गांव के भारतीय प्रशासनिक सेवा में कार्यरत–विजय कुमार मीना जी को आमंत्रित किया गया जिसमें 10 वीं–और 12 वी इस कक्षा में सभी समाजो से सर्वोत्तम अंक लाने वाले टॉप 3 छात्र एवं छात्राओ को सम्मानित किया गया तथा विगत एक वर्ष मे गांव से सरकारी सेवा मे चयनित होने वाले विधार्थियों को सम्मानित किया गया।

यह गांव भुड़ा मे पहला अवसर था जब गांव के प्रतिभा शाली विधार्थियों का सम्मान किया गया जो इस संस्था के प्रयासों से सफल हो सका। इस समारोह के बाद गांव के नागरिकों एवं विधार्थियों मे अनेक परिवर्तन देखने को मिल रहे हैं। गांव के लोग एक नई सोच के साथ भूमिका निभा रहे है।

कार्य–3

दीपावली पर गांव के मुख्य मार्गों पर रोड़ लाईट लगाई गईं, जिससे गांव के रास्ते रात भर रोशनी से नहाये रहते हैं।

कार्य–4

अगस्त के महीने में गांव के सार्वजनिक एवं धार्मिक स्थानों तथा गांव के विधालय और मुख्य मार्ग पर पौधारोपण का कार्य किया गया

कार्य–5

मार्च के महीने में गांव के नागरिक उमेद बैरवा का आकस्मिक दुर्घटना होने के कारण गंभीर रूप से घायल हो गया। इस सबके अतिरिक्त गाँव की संस्था ने उम्मेद बैरवा को गांव का नागरिक होने के नाते एवं उसकी आर्थिक स्थिति को देखते हुए मदद स्वरूप 2100 रूपये की सहायता राशि प्रदान कर गांव मे भाईचारा बनाने में सहयोग किया।

कार्य–6

मई–जून के महीने में गांव के सार्वजनिक एवं धार्मिक स्थानों पर पक्षियों के पेयजल की व्यवस्था के लिए परिन्डे लगाये तथा गांव में बिराई माता के मेले मे भग्तगणो के जल सेवा स्वरूप पयाऊ लगाई गयी। इन सभी कार्यों में संस्था के सभी सदस्यों का भरपूर योगदान रहा ।

शुभ संकल्पों का फल, शुभ होता है ...

13. चांदेरा गाँव, दौसा

सोच बदलो गाँव बदलो अभियान की विचारधारा से प्रभावित होकर पिछले दो वर्षों में गाँव चांदेरा (सिकराय, दौसा) के युवाओं ने "ग्राम विकास समिति" गठित कर गाँव के सीनियर स्कूल का कायापलट किया और निशुल्क सार्वजनिक पुस्तकालय की शुरुआत की।

गाँव के युवाओं, स्कूल स्टाफ और गाँव वालों ने मिलकर निम्न अनेकों अनुकरणीय पहल को अंजाम दिया है–

1. समस्त ग्रामवासियों के सहयोग से आदर्श सीनियर सेकंडरी स्कूल चान्देरा को लगभग 80,000/– रुपये का फर्नीचर भेंट किया गया है।
2. 1100 पौधों का ग्राम विकास समिति चान्देरा द्वारा और 2100 पौधों का स्कूल स्टाफ ने मिलकर पौधरोपण व देखभाल का कार्य बखूबी किया।
3. त्रिवेदी परिवार की तरफ से विद्यालय को वाटर कूलर भेंट किया गया।
4. ग्राम विकास समिति द्वारा दोनों सरकारी स्कूल से आठवीं दसवीं और बारहवीं कक्षा में –
   - i. प्रथम स्थान प्राप्त करने वाले विद्यार्थियों को 2100/– की नगद प्रोत्साहन राशि के साथ शील्ड व प्रशस्ति पत्र प्रदान किए गए।
   - ii. दूसरी रैंक हासिल करने वाले विद्यार्थियों को 1100/– की नगद प्रोत्साहन राशि के साथ शील्ड व प्रशस्ति पत्र प्रदान किए गए।
   - iii. तीसरी रैंक हासिल करने वाले विद्यार्थियों को 500/– की नगद प्रोत्साहन राशि के साथ शील्ड व प्रशस्ति पत्र प्रदान किए गए।
   - iv. IIT/MBBS/Special Result हासिल करने वाले विद्यार्थियों को 1100/– की नगद प्रोत्साहन राशि के साथ शील्ड व प्रशस्ति पत्र प्रदान किए गए।

5. उत्तम रिजल्ट देने वाले सम्मानीय अध्यापक गण को प्रशस्ती पत्र, मोमेंटो व पेन देकर सम्मानित किया गयाए
6. कक्षा पाँचवीं की नवोदय स्कूल की तैयारी का खर्चा ग्राम विकास समिति चांदेरा उठायेगी।
7. 90% से ऊपर बोर्ड एक्जाम मे मार्क्स लाने वाले विद्यार्थियों को 3100/– रुपये की नगद प्रोत्साहन राशि के साथ शील्ड व प्रशस्ति पत्र प्रदान किए गए।
8. ग्राम विकास समिति चान्देरा द्वारा निशुल्क सार्वजानिक पुस्तकालय चालू किया गया है।
9. स्कूल प्रशासन के अमूल्य सहयोग से सरकारी स्कूल में बेहतरीन कंप्यूटर लैब, साईंस लैब और स्कूल लाइब्रेरी की व्यवस्था करना इत्यादि।

14. रतियापुरा गाँव, करौली

युवा शिक्षा समिति, रतियापुरा (EYC)

युवा शिक्षा समिति, रतियापुरा (ई बाई सी) जो कि अपने अभियान "बेहतर शिक्षा और गाँव का विकास" के तहत अपनी ग्रामपंचायत रतियापुरा का विकास करने में लगी हुई है । जिसने अभी कुछ दिनों पहले गाँव की सड़कों को अतिक्रमण मुक्त कर पूरे गाँव में स्ट्रीट लाइट्स लगाई थी। ईबाईसी इस गाँव के युवा और कर्मचारियों द्वारा संचालित एक संस्था है जो कि आपस में राशि एकत्रित करके योजनाबद्ध तरीके से गाँव के विकास कार्य में जुटी हुई है।

रतियापुरा और आसपास के गांवों में स्कूलों की स्थिति ठीक नहीं है और यहां के विद्यार्थियों को एक अच्छी शिक्षा प्राप्त करना एक सपने के बराबर है क्योंकि न तो यहां कोई ट्यूशन की व्यवस्था है न ही पढाई का माहौल ऐसे में ईबाईसी टीम ग्रामपंचायत के सभी गांवों में जाकर छात्रों की स्थिति से रूबरू हुई और जाना कि इस ग्रामपंचायत के छात्रो की स्थिति बहुत ही कमजोर है।

ऐसे में ईबाईसी (एजुकेशन यूथ कमेटी) टीम ने गांव रतियापुरा में एक मीटिंग का आयोजन किया जिसमें स्कूलों के विद्यार्थियों के साथ–साथ अभिभावकों को इसमें बुलाया गया। अभिभावकों की समस्याओं को सुनने के बाद ई बाई सी ने गांव रतियापुरा में "ईबाईसी फ्री कोचिंग कक्षायें" शुरू की। जिसके लिए छात्रों को बेहतर शिक्षा देने के लिए अनुभवी अध्यापकों को बुलाया गया है एवं इन निशुल्क कक्षायों के संचालन का ख़र्च ई बाई सी द्वारा उठाया जा रहा है।

इन कक्षाओं के शुरू होने से अब ग़रीब और कमजोर बच्चों को बेहतर शिक्षा मिल रही है। इन कक्षायों का संचालन गाँव के दो भवनों मैं शाम 4 बजे से 8:30 बजे तक किया जा रहा है।

इतना ही नहीं छात्रों में आपस में प्रतिस्पर्धा बढ़ाने, बोर्ड की परीक्षाओं की तैयारी के लिए ई बाई सी द्वारा 21 जनवरी को एक "ईबाईसी प्री बोर्ड परीक्षा" का आयोजन किया गया। जिसमें

उत्थान

अच्छे अंक अर्जित करने वाले छात्र छात्रायों को 26 जनवरी के मौके युवा शिक्षा समिति, द्वारा प्रोत्साहित किया गया। इस परीक्षा की वजह से छात्रो में प्रतिस्पर्धा का माहौल बना हुआ है और सभी विद्यार्थी अव्वल आने के लिए अच्छी मेहनत कर रहे हैं।

इन कक्षाओं का संचालन ईवाईसी टीम, जयसिंह, दिलीप, महेश, गजराज, ओमप्रकाश, गंगाचरण, रामफल, सचिन, राजपाल, मिंशिव, शिवराज सहित सम्पूर्ण ग्रामवासियों के सहयोग से किया जा रहा है।

EYC द्वारा 400 मीटर लंबे ट्रैक का निर्माण

युवा शिक्षा समिति, रतियापुरा द्वारा गांव के लोगों की मांग एवं विभिन्न परीक्षायों में शारीरिक दक्षता की तैयारी कर रहे गांव के युवायों की मांग के चलते रनिंग ट्रैक का निर्माण करवाया गया है। गाँव के काफी परीक्षार्थी जो सड़कों पर फिजिकल या रनिंग करते थे जिससे उन्हें हाइवे पर एक्सीडेंट का खतरा बना रहता था। जिसके चलते ई.वाई.सी. द्वारा इस समस्या का समाधान करने के लिए इस 400 मीटर लंबा और 10 फुट छोड़ा ट्रैक का निर्माण किया गया।

इस ट्रैक को बिल्कुल गोलाई मैं रखा गया है। कहा जाए तो अब यहां पर फिजिकल टेस्ट से संबंधित सभी जरूरतों के हिसाब से इसे बनाया गया है। यहां पर ऊँची कूद, लंबी कूद जैसी अन्य जरूरतों के लिए भी इसी ट्रैक के पास विशेष ग्राउंड बनाया गया है। देखा जाए तो EYC द्वारा यहां एक ऐसा ग्राउंड बनाया है जिसको फिटनेस सेन्टर की तरह तैयार किया है।

जिससे अब सभी गाँव के वे युवा जो विभिन्न परीक्षायों जैसे आर.पी.एफ, पुलिस,आर्मी, दिल्ली पुलिस, सीपीओ एस.आई, ग्रुप डी, कांस्टेबल जी.डी. इत्यादि के लिए फिजिकल टेस्ट की तैयारी कर रहे थे उनको इससे विशेष फायदा मिलेगा।

इस ट्रैक के बनने से अब रतियापुरा गांव में युवायों को तो फायदा हुआ ही है साथ ही साथ अन्य ग्रामवासी भी इसमें सुबह सुबह टहलने या जॉगिंग के लिए आते है। साथ ही साथ इसके साथ गांव की सभी पानी की टंकियों के पास जमा कचरे को भी ई.वाई.सी. टीम ने साफ करवाया। जिससे एक अलग ही माहौल देखने को मिल रहा है।

15. हरसाना गाँव, अलवर

सोच बदलो–गाँव बदलो की प्रेरणा से डॉ राम स्वरूप मीना, प्रोफेसर, बनारस यूनिवर्सिटी के सानिध्य में गाँव हरसाना (तहसील लक्ष्मण गढ़, अलवर) में गाँव के सभी वाले सरकारी कर्मचारियों ने दिनांक 08.11.2018 को एक मीटिंग आयोजित की जिसमें निम्न एजेंडे पर चर्चा हुई –

1. दसवीं का परीक्षा परिणाम के सुधार हेतु अतिरक्त कक्षाऐं लगवाना व जरूरतनुसार अतिरिक्त शिक्षक उपलब्ध करवाना।
2. राजकीय आदर्श उच्च माध्यमिक स्कूल में कंप्यूटर शिक्षक उपलब्ध करवाना।
3. हरसाना ग्रामवासियों के स्टूडेंट्स के लिए पुस्तकालय खुलवाना।

उपरोक्त सेवा निस्वार्थ व बिना शुल्क के होंगी।

सभी युवाओं की सर्वसम्मति से मीटिंग के बाद लिए गये निर्णय इस प्रकार है–

1. दिनांक 20.11.2018 तक सीनियर स्कूल में कंप्यूटर शिक्षक लगाना है व स्थिति अनुसार इन्वेटर लगाकर बिजली व्यवस्था ठीक करना।
2. 10 वी और 12 वी कक्षाओं के छात्राओं के लिए कोचिंग शुरू करनी है।
3. कक्षा 10 वी मे गणित , अंग्रेजी का अतरिक्त कक्षा शिक्षण।
4. प्रातः गणित 1 घंटे सायं: 1 घंटे अंग्रेजी कोचिंग।
5. 10वी – गणित की जितेंद्र कुमार सैनी प्रातः दिनांक 15.11.2018 से शुरू करना है।
6. 10वी – अंग्रेजी की श्री रामहेत नागर सायं: दिनाक 15.11.2018 से शुरू करना है।
7. 12वी – अंग्रेजी की कोचिंग शिक्षण कार्य विचारणीय व प्रस्तावित है। जीव विज्ञानं, रसायन विज्ञानं के शिक्षक की तलाश करनी है दिनांक 15.11.2018 तक।
8. सभी हरसाना ग्रामवासियों के लिए पुस्तकालय का स्थानः जैन धर्मशाला, जैन मंदिर के पास सुनिस्चित किया गया है।
9. पुस्तकालय मे पुस्तक संग्रह करना ओर लिस्ट बनाने का कार्य अगली मीटिंग तक करना।

इस प्रकार गाँव हरसाना में एक शानदार बदलाव का आगाज हुआ है। इस बदलाव में युगदान देने वाले सभी साथीयों को SBGBT की तरफ से कोटि कोटि आभार।

16. कीलपुर खेड़ा गाँव, अलवर

सोच बदलो गाँव बदलो अभियान की विचारधारा से प्रभावित होकर अखिल जनकल्याण एवम् युवा विकास समिति, कीलपुरखेड़ा, रैनी, अलवर के युवा विकास समिति के सभी सदस्यों ने गाँव वालो के सहयोग से जनसहभागिता के फलस्वरूप निम्न कार्यो को अंजाम देकर गाँव में शानदार बदलाव की अलख जगाई है

i. स्कूल के बच्चों के लिए पीने के पानी की व्यवस्था की, जिसमे समिति खर्च पर पाइप लाइन लगा कर तीन टंकी की सफाई कर पानी की व्यवस्था की हैं।

ii. स्कूल के बच्चों के खेल मैदान के लिए काम चालू किया जा रहा हैं, जिसके लिए 5 लाख का बजट सांसद कोटे से आ चूका हैं ये काम भी कमिटी के लोगो के कहने से ही संभव हो पाया हैं।मैदान की नपाई का काम चालू हो चूका हैं जल्दी ही काम चालू करा दिया जायेगा।

iii. गांव में बच्चों के लिए निःशुल्क पुस्तकालय की व्यवस्था की गई हैं जिसकी ओपनिंग 08/11/2018 को की गई हैं।

iv. गांव के बच्चों के लिए निशुल्क ट्यूशन की व्यवस्था की गई हैं समिति के खर्चे पर 5वीं, 8वीं, 10वीं और 12वीं के लिए गणित, विज्ञान और अग्रेजी के ट्यूशन की व्यवस्था की गई हैं।

रैणी में पुस्तकालय का बालिका से कराया उद्घाट

रैणी। समीपवर्ती गांव कीलपुर खेड़ा में अखिल जन कल्याण युवा विकास समिति की ओर से गांव में अध्ययन कर रहे बच्चों को किताबें व समाचार पत्र उपलब्ध करवाने के लिए कीलपुर खेड़ा के अटल सेवा केन्द्र पर पुस्तकालय का शुभारंभ किया गया। समिति की ओर से नई पहल करते हुए गांवों मे रह रहे बच्चों को ज्ञानवर्धन पुस्तकें व समाचार पढ़ने को मिल सकेंगे। पुस्तकालय का उद्घाटन गत वर्ष दसवीं बोर्ड परीक्षा में उत्तीर्ण हुई छात्रा खुशबू मीना से फीता कटवाकर करवाया गया।

रैणी. पुस्तकालय का फीता काटकर उद्घाटन करती बालिका।

v. गांव में स्ट्रीट लाइट लगाने का काम चालू हो रहा हैं, जल्दी ही गांव की गलियों में रोशनी चमकेगी।

vi. स्वच्छता के लिए समय समय पर गांव में समिति दुवारा अभियान चला कर सफाई कार्य किया जाता हैं।

vii. गांव कीलपुरखेड़ा में पर्सनल मामलो को छोड़ कर, गांव में चारो तरफ रास्ते पर अतिक्रमण का मामला बिलकुल भी नहीं हैं ये गांव के लिए गर्व की बात हैं।

17. मुरलीपुरा गाँव, करौली

मैं लाखन सिंह, राजकीय प्राथमिक विद्यालय मुरलीपुरा में 3 महीने से प्रधानाध्यापक के पद पर कार्यरत हूं। जब मैं यहाँ पहली बार आया तो देखा कि मुरलीपुरा गांव के मैन रस्ते पर दोनों तरफ से गाँव वासियों ने अतिक्रमण कर रखा था और वहां पर जाने के लिए दो पहिया वाहनों का ही प्रवेश हो पाता था चार पहिया वाहन गांव तक नहीं जा पा रहे थे। बचा हुआ रास्ता भी बरसातों में कट गया था, मैंने वहां के युवा साथियों से इस बारे में बात की और हम सभी ने मिलकर एक मीटिंग का आयोजन किया, जिसमें गांव के लोगों को इस बारे में बताया और पंच पटेलों के द्वारा भी लोगों को समझाया गया। काफी प्रयास के बाद रास्ते पर से अतिक्रमण हटाने की बात पर सहमति बनी। गांव मुरलीपुरा में जेसीबी ट्रैक्टरों के द्वारा गांव के रोड पर से अतिक्रमण हटाया गया और रोड पर ट्रॉलीयो के द्वारा मिट्टी डालकर 25 फीट चौड़ा रास्ता गांव के स्कूल तक पहुंचाया गया। रोड पर साइड से पानी के निकास के लिए एक नाली का भी निर्माण किया गया ।आगे कुछ ही दिनों में गांव के प्रत्येक खम्बे पर बल्ब लगाना और गांव में पेयजल की समस्या को देखते हुए, एक बोर प्रधान के कोटे से स्वीकृत करवाया और गांव के युवाओं व गांव के सभी लोगों ने सोच बदलो गांव बदलो कार्यक्रम से प्रभावित होकर इन सभी कामों को अंजाम दिया। मैं, मुरलीपुरा गांव के सभी युवा साथियों को तहे दिल से धन्यवाद देना चाहता हूं कि जिन्होंने इस कार्यक्रम में मेरा साथ दिया और अहम भूमिका निभाई।

नोट – मुरलीपुरा गांव में एक भी व्यक्ति सरकारी कर्मचारी नहीं है, इसके बावजूद गांव के लोगों ने इस तरह के कामों को आपसी सहयोग से सफलतापूर्वक अंजाम दिया।

18. सिकरौदा गाँव, करौली

श्री प्रमोद कुमार (PNB), शिवओमजी (प्रोफेसर MNIT) द्वारा आदर्णीय सतपाल जी भाईसाहब (जॉइंट कमिश्नर इनकम टैक्स), मानसिंहजी (सीनियर IAS अधिकारी), अवतार जी (डिप्टी रजिस्टार) की प्रेरणा से गाँव सिकरौदा मीना, हिंडौन में टीम सिकरौदा के युवा तथा सीनियर साथियों बलवीर जी, विजय, प्रेमराज हेमराज, रिंकू व आकाश के साथ सोच बदलो गाव बदलो कार्यक्रम की शुरुआत स्वच्छता कार्यक्रम के रूप में की गई। इसमे सभी को कचरा पात्र वितरण तथा सफाई के साथ कई सुधारों पर काम किया गया। सभी के सहयोग से एक मीटिंग का आयोजन किया और इसमें कई अहम निर्णय लिए गए–

1. विद्यालयों के आधुनिक विकास पर ध्यान दिया जाए ।
2. बालिका शिक्षा जो कि 90% है 100% तक लेकर जाना।
3. वरिष्ठ तथा समझदार लोगों द्वारा ग्राम विकास समिति का निर्माण।
4. कमजोर स्वास्थ्य सेवाओं को मजबूत बनाना।
5. नशा मुक्त सिकरौदा बनाना।
6. तालाब तथा तलाई के जल का संरक्षण।
7. लोक संस्कृति को बढ़ावा हेतु हेला ख्याल दंगलों का आयोजन।
8. अनुपयोगी व्यर्थ प्रथाओं का त्याग।

सिकरौदा मीना के विकास में आगे आए युवा एवं सरकारी कर्मचारी

कासं| हिंडौन सिटी (ग्रामीण)

गांव सिकरोदा मीना के युवा एवं सरकारी कर्मचारियों ने गांव के विकास का जिम्मा उठाया है। सोच बदलो, गांव बदलो कार्यक्रम के तहत शनिवार को ग्रामीणों को स्वच्छता के लिए जागरुक करते हुए कचरा पात्रों का वितरण किया गया।

कार्यक्रम से जुड़े प्रमोद कुमार, शिवओम, सतपाल, मानसिंह, गोपाल, अवतार, बलवीर,विजय, प्रेमराज, हेमराज, रिंकू, आकाश आदि ने बताया कि सोच बदलो, गांव बदलो कार्यक्रम के तहत स्वच्छता की शुरुआत की गई। इसके तहत कचरा पात्रों का वितरण किया गया। इसके अलावा सरकारी स्कूलों का आधुनिक रुप से विकास कराने, बालिका शिक्षा शत-प्रतिशत करने,

कमजोर स्वास्थ्य सेवाओं को मजबूत बनाना,.नशा मुक्त सिकरौदा बनाना, तालाब तथा तलाई के जल का संरक्षण का कार्य करना, लोक संस्कृति को बढ़ावा हेतु हेला ख्याल दंगलों का आयोजन करना,अनुपयोगी व्यर्थ प्रथाओं का त्याग करना, सड़को से अतिक्रमण हटाना आदि कार्य कराए जाएंगे। कचरा पात्र वितरण के दौरान सरपंच धारा सिंह भी मौजूद थे।

हिंडौन ग्रामीण| सिकरौदा मीना में स्वच्छता मिशन के अंतर्गत कचरा पात्र का वितरण किया गया।

क्यारदा में 20 बीघा खेत की कड़बी आग से हुई राख

भास्कर न्यूज| रेवई/ क्यारदा

गांव क्यारदाकला में शुक्रवार की रात को अचानक अज्ञात कारणों की वजह से गोविंदम कॉलेज के पास रखी 20 बीघा कड़वी में आग लग गई। आग लगते ही चिंगारियां उ लगी चिंगारियां को जलती देख के लोग वहां पहुंचे और वह जब पहुंचे तब तक 20 बीघा कड़वी आग की लपटें बहुत तेज पड़ चु थी जिसकी जानकारी दमकल दी गई उसने आकर के आग काबू पाया।

आग से पीड़ित मोहनला लखन, रामेश्वर तीनों को नुकस का सामना करना पड़ा है। कां नेता भूपेन्द्र सोलंकी व प्रमोद तिव ने आर्थिक सहायता की मांग लेकर कलेक्टर को पत्र भेजा है।

19. भाड़ोती गाँव, सवाई माधोपुर

"सोच बदलो गांव बदलो टीम" और डॉ सत्यपाल सिंह मीणा जी की प्रेरणा से प्रेरित होकर युवा जागृति एवं विकास समिति भाडौती, सवाई माधोपुर ने 17 जून 2017 को रक्तदान महादान करके दो मिशन चलाए थे।

मिशन–1 ग्राम पंचायत स्तर पर माध्यमिक विद्यालय को उच्च माध्यमिक विद्यालय में क्रमोन्नत करवाना ।राज्य सरकार ने राज्य की समस्त ग्राम पंचायतों में एक आदर्श उच्च माध्यमिक विद्यालय की स्थापना की थी लेकिन किसी कारणवश भाडौती ग्राम पंचायत इससे वंचित रह गई इससे ग्राम पंचायत भाडौती की बालिकाओं को दूसरे ग्राम पंचायत में पढ़ने जाना पड़ता था जिस कारण बहुत सी बालिका आगे की पढ़ाई से वंचित होने लगी तो युवा जागृति एवं विकास समिति ने इस समस्या का समाधान करवाने की सोची और एक दिन सभी सदस्य विद्यालय में पहुंचे और प्रधानाध्यापक जी से विद्यालय क्रमोन्नत नहीं होने का कारण जाना तो उन्होंने बताया कि गत वर्ष का नामांकन कक्षा 9 व 10 का 40 व 45 से कम था इसलिए विद्यालय क्रमोन्नत नहीं हो सका तो सभी युवा साथियों ने ठानी कि अब हम नामांकन बढ़ाकर हमारे विद्यालय को क्रमोन्नत करवाएंगे और नामांकन बढ़ाने में सभी साथी तन मन धन से लग गए ग्राम वासियों को सरकारी विद्यालय में मिलने वाली सुविधा और शिक्षकों की योग्यताओं के बारे में बताया और बच्चों के लिए निशुल्क पाठ्य सामग्री ,निःशुल्क विद्यालय गणवेश, निःशुल्क कोचिंग की सुविधा दी तो

छात्रों का रुझान बढ़ा और निजी विद्यालय से टीसी लेकर सरकारी विद्यालय में प्रवेश लिया। नामांकन बढ़ाकर स्थानीय विधायक को भी इस बारे में अवगत करवाया तो उन्होंने भी हमारा साथ दिया और विद्यालय कला संकाय के रूप में क्रमोन्नत हो गया अब विज्ञान संकाय की भी मांग चल रही है।

शराबबंदी के लिए तीन गांवों के लोग एक

भास्कर न्यूज | भाड़ौती

कस्बे के रेस्ट हाउस परिसर में रविवार को शराबबंदी को लेकर भाड़ौती, गंभीरा व बड़ागांव कहार के पंच पटेलों तथा ग्रामीणों की सामूहिक मीटिंग आयोजित की गई। प्रथम स्तर पर बुधवार को मल्हारना डूंगर उप जिला कलेक्टर को मुख्यमंत्री, मुख्य सचिव आबकारी आयुक्त तथा जिला कलेक्टर के नाम ज्ञापन सौंपने का निर्णय लिया। शराबबंदी को लेकर तीनों को गांव के लोग लामबंद नजर आए और सभी ने शराबबंदी का समर्थन किया। इसी दौरान ग्रामीणों ने भाड़ौती चौकी प्रभारी रामस्वरूप सहजवार को ज्ञापन सौंपकर सुबह 10 बजे से पहले तथा रात को 8 बजे बाद खुल रहे शराब के ठेके व गांवों में चल रहे अवैध शराब के ठेकों को बंद करवाने की मांग की। ग्रामीणों ने आबकारी प्रथम नियम अनुसार निर्वाचन नियमावली के प्रपत्र पर हस्ताक्षर प्रक्रिया पूर्ण कर दी तथा आगामी सत्र में भाड़ौती का गंभीरा पंचायत में शराब की दुकान आवंटन ना हो, इसे लेकर आबकारी नियम अनुसार कार्रवाई का निर्णय लिया। अगर फिर भी आबकारी विभाग द्वारा शराबबंदी को लेकर कोई कार्रवाई नहीं की गई तो आगामी सत्र में शराब की दुकानों के लिए भूमि व दुकान नहीं देने का सर्वसम्मति से निर्णय लिया। मीटिंग में भाड़ौती सरपंच रजनी देवी, गंभीरा पूर्व सरपंच देवपाल मीना, कस्टम अधिकारी धन सिंह मीणा, धनपाल मीणा सहित तीनों गांव के पंच पटेल आदि थे।

भाड़ौती. कस्बे के रेस्ट हाउस परिसर में शराबबंदी को लेकर आयोजित मीटिंग में मौजूद तीन गांवों के पंच पटेल व ग्रामीण।

मिशन–2 ग्राम पंचायत भाडौती व ग्राम पंचायत गम्भीरा में शराब के ठेके होने के कारण आए दिन झगड़े और हाईवे पर दुर्घटना एवं गुंडागर्दी होती रहती थी जिससे ग्रामीण बहुत परेशान थे और इस समस्या से निजात पाने के लिए युवा जागृति एवं विकास समिति भाडौती ने शराब ठेका बंद करवाने का बीड़ा उठाया । युवा जागृति एवं विकास समिति ने गांव के पंच पटेलों को अपने पक्ष में लेकर गाँवो में मीटिंगे की ।शराब से सबसे ज्यादा परेशान महिलाएं होती है तो उन्होंने कंधे से कंधा मिलाकर साथ दिया। युवा जागृति एवं विकास समिति भाडौती ने आबकारी प्रथम नियम अनुसार निर्वाचन नामावली के पत्र पर हस्ताक्षर कर प्रक्रिया पूर्ण की । ग्रामीणों ने शराब की दुकान के लिए जगह नहीं देने के लिए शपथ पत्र भरकर शपथ ली। आबकारी विभाग को ग्रामीणों की एकता के सामने झुकना पड़ा और दोनों ग्राम पंचायत से शराब की दुकाने बंद कर दी।

युवा जागृति एवं विकास समिति भाड़ौती आगे भी ऐसे सामाजिक सरोकार के कार्य करते रहने के लिये कटिबद्ध हैं।

20 खुर्द गाँव, अलवर

बीसवीं शताब्दी में महात्मा गांधी ने कहा था कि "the soul of Indian lives in its villages" अर्थात भारत की आत्मा इसके गांवों में रहती हैं। आज भी 21 वी सदी में भी 74% देश की जनता देश के 649481 गांव में निवास करती है लेकिन दुर्भाग्य की बात है गांव की स्थिति शहरों की तुलना में बहुत ही पिछड़ी हुई है इसका प्रमुख कारण शहरों में सरकार द्वारा किए गए कार्यों का विभिन्न सहायक एवं संगठनों द्वारा देख रहे करना है अर्थात जन सहभागिता है इसी प्रकार हमें चाहिए कि गांव में भी सोसाइटी में संगठन बनाए जाएं ताकि गांव में सरकार द्वारा किए गए कार्यों की पूर्णतया देखरेख की जा सके तथा गांव का विकास हो सके जब तक जनता सरकार का साथ नहीं देगी तब तक गांव का विकास पूर्णता संभव नहीं है

Mahathma Gandhi's concept of rural development revolves around creating model villages for transforming "Suraj" his vision of an Ideal villages in his own words% an ideal Indian village will be so constructed as lend itself to perfect sanitation.

जो कि आज 21वीं सदी में पूरा होता दिखाई दे रहा है आज राजस्थान के कुछ गांव में युवा वर्ग द्वारा payback back to society पर आधारित कुछ सोसायटी /संगठन कार्य कर रहे हैं जिसमें गांव के युवा एवं कर्मचारी बढ़–चढ़कर भाग ले रहे हैं।

सोच बदलो गांव बदलो ऐसा एक सामाजिक संगठन है, जिसकी शुरुआत डॉ. सतपाल सिंह मीणा (संयुक्त आयुक्त, आयकर विभाग) एवं उनकी टीम द्वारा की गई है जिसका परिणाम धनौरा, धौलपुर जैसे गांव को देश का प्रथम स्मार्ट विलेज बनाने में कामयाबी पाई है। सोच बदलो गांव बदलो संगठन से प्रेरित होकर देश के अन्य बहुत से संगठन गांव के विकास के लिए बहुत से गांव में काम कर रहे हैं ।

ऐसा ही रैणी तहसील के गांवों के विकास के लिए हमारी टीम द्वारा सर्वांगीण विकास समिति गठित की गई है जिसका उद्देश्य सर्वांगीण विकास करना है जिसमें शिक्षा ,स्वास्थ्य ,वृक्षारोपण स्वच्छता तथा अन्य आधारभूत सुविधा उपलब्ध कराना है ताकि सभी गांव को एक आदर्श गांव एवं स्मार्ट गांव के रूप में परिवर्तन किया जा सके। समिति द्वारा भी पिछले कुछ वर्षों से सभी कार्यों को किया

जा रहा है जिसमें पिछले वर्ष भी रैणी में विभिन्न गांव के बच्चों के लिए स्टेशनरी वितरण, जस्सी वितरण कार्यक्रम, वृक्षारोपण तथा विभिन्न धार्मिक स्थानों पर स्वच्छता साफ सफाई की गई जिसमें श्री रमेश मीना रैणी रक्षा विभाग भारत सरकार, सुखराम मीणा खुर्द–जूनियर टेलीकॉम ऑफिसर, नंदलाल मीना भुलेरी–वायुसेना तथा टीम के सदस्यों द्वारा सभी कार्यक्रम कियान्वयन किये गए। हमारा उद्देश्य गरीब बच्चों के सर्वांगीण विकास तथा सहायता प्रदान करना तथा बच्चों का सर्वांगीण विकास करना है।

मेरा मानना है कि गांव के विकास में सभी सरकारी तथा गैर सरकारी संगठन द्वारा सरकारी कार्यों को क्रियान्वित करने में जन सहभागिता जरूरी है जब तक हम युवा आगे गांव की जिम्मेदारी नहीं लेंगे तब तक गांव का विकास संभव नहीं है।

अतः देश के सभी गांव में युवा शिक्षक, सरकारी सेवा में कार्यरत कर्मचारी वर्ग तथा अन्य सभी ग्राम वासियों को सभी कार्यक्रमों में भाग लेना चाहिए ताकि हम सभी मिल कर गांव को एक आदर्श तथा स्मार्ट काम के रूप में परिवर्तन कर सके तथा सभी सरकारी स्कीमों के बारे में सभी जनता को जागरूक करना जरूरी है यह सब तभी संभव होगा जब हम सच्चा से तन मन धन से कार्य करेंगे सभी मिलकर कार्य करेंगे तो आने वाले समय में सभी गांव धनोरा की तरह एक आदर्श एवं स्मार्ट गांव के रूप में परिवर्तित किए जा सकते हैं।

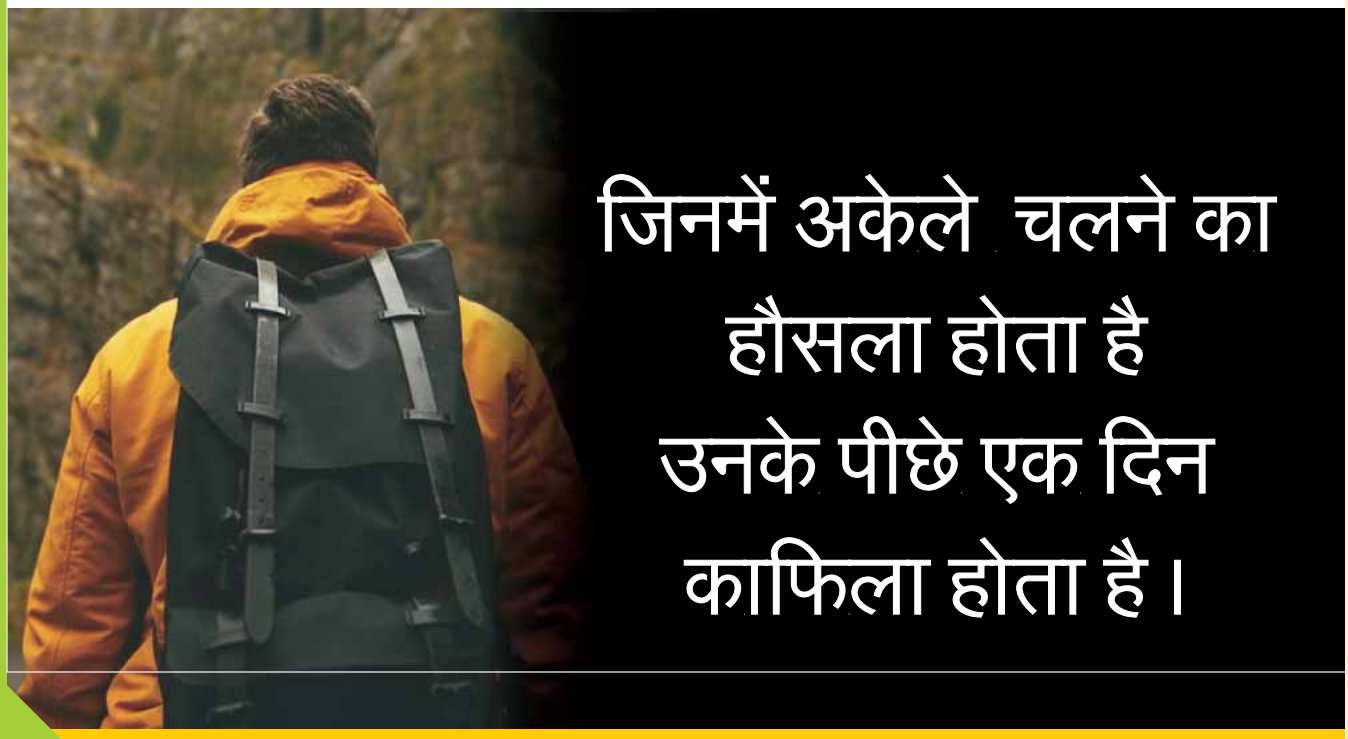

21. पवैनी गाँव, धौलपुर

अक्सर ये कहा जाता है कि युवा पीढ़ी के लिए कुछ भी असंभव नहीं होता और यदि युवाओं में कुछ कर गुजरने का जुनून हो तो उन्हें कौन रोक सकता है ? इसी का एक ताजा उदाहरण आज हम आपके सामने रख रहे हैं–

सोच बदलो गांव बदलो अभियान से प्रेरित धौलपुर जिले के सरमथुरा उपखंड के पवैनी गांव के युवाओं ने अपने गांव में व्यापक पैमाने पर स्वच्छता अभियान चलाया और प्रधानमंत्री मोदी जी के स्वच्छ भारत मिशन के सपने को भी साकार रूप देने की पहल की । पवैनी गांव के युवाओं ने मिलकर गांव के आम रास्तों और गांव के सार्वजनिक स्थलों से हर तरह का कचरा हटाया और सभी गांव वालों को स्वच्छता से रहने का संदेश दिया । युवाओं ने इधर उधर कूड़ा करकट फेंकने और गंदगी व दुर्गन्ध भरे रास्तों से चलने के आदी हो चुके अपने गांव वासियों से भविष्य में गांव को स्वच्छ और साफ सुथरा बनाए रखने की अपील भी की । युवाओं ने गांव वासियों को समझाया कि गांव को स्वच्छ और साफ सुथरा रखने के साथ–साथ कूड़ा प्रबंधन व निस्तारण पर मिलकर विचार–विमर्श करेंगे ताकि गांव में मच्छरों व गंदगी से फैलने वाली बीमारियों से बचा जा सके । इसके अतिरिक्त युवाओं ने अपने गांव के होनहार नौनिहालों के लिए कोचिंग व्यवस्था करने के बारे में भी आम सहमति बनाई । युवाओं ने प्रधानमंत्री के "बेटी बचाओ – बेटी पढ़ाओ" अभियान से प्रेरणा लेकर गांव में बालिका शिक्षा पर जोर देने की भी बात कही ।

इस तरह युवाओं का बदलाव के प्रति उत्साह व उमंग गांव के निराशाजनक माहौल को एक नई दिशा देने का काम कर रहा है और धीरे धीरे गांवों के लोग भी इस सकारात्मक मुहिम में शामिल होते जा रहे हैं । युवाओं में जागृति आने से गांव के लोगों में भी एक उम्मीद ने जन्म लिया है और गांव के लोग भी मिलकर ग्राम विकास पर चर्चा करने के लिए आगे आने लगे हैं और यही हमारे सोच बदलो गांव बदलो अभियान की सफलता है ।

सोच बदलो गांव वालो टीम बदलाव के लिए उठ खड़े हुए इन युवा प्रयासों की खुलकर सराहना करती है । जय हिन्द ।

22. मई गाँव, धौलपुर

गाँव में बही स्वच्छता और अतिक्रमण मुक्ति की हवा

जन सहभागिता और पारस्परिक सामंजस्य, जमीनी स्तर पर बदलाव लाने के लिए अत्यंत आवश्यक हैं। डॉ सत्यपाल सिंह मीणा, संयुक्त आयकर आयुक्त और उनकी टीम के "सोच बदलो गांव बदलो अभियान" से प्रेरित होकर गाँव मई (बसेडी) में स्वच्छता और अतिक्रमण मुक्ति के लिए सर्वसम्मति से प्रयास शुरू किए गए। इसके लिए सर्वप्रथम गाँव के सभी युवा एवं ग्रामवासियों की सर्वसम्मति से गाँव विकास समिति– मई का गठन किया गया। विकास समिति के गठन के पश्चात एक मीटिंग बुलाई गई और गांव के हित में कई निर्णय लिए गए। गांव में शुरुआत के लिए सभी ने मिलकर तय किया कि सबसे पहले गांव को स्वच्छ बनाना है और गांव के सभी रास्तों को अतिक्रमण से मुक्त करना है। इसके बाद गांव में स्वच्छता एवं अतिक्रमण मुक्ति अभियान चलाया गया, जिसके अंतर्गत युवाओं ने झाड़ू, तसला, फावड़े और ट्रैक्टर लेकर गाँव के सभी मुख्य रास्तों और गलियों की साफ–सफाई कर गांव को साफ–स्वच्छ बना दिया ।

गांव में स्वच्छता के महत्व के विषय में सभी लोगों को विस्तृत रूप से बताया गया और यह भी बताया गया कि किस प्रकार से स्वच्छता, स्वास्थ्य को सीधे रूप से प्रभावित करती है। विकास समिति ने एक और तात्कालिक निर्णय लिया जिसके अंतर्गत गाँव के सभी मुख्य रास्तों पर स्ट्रीट लाइट लगाई गई ताकि रात्रि में न केवल लोगों को आने–जाने में सुविधा हो सके बल्कि, चोर इत्यादि से भी सुरक्षा प्राप्त हो सके। सोच बदलो गांव बदलो टीम द्वारा गांव–गांव में चलाए जा रहे विभिन्न अभियानों का सीधा प्रभाव लोगों के जीवन स्तर पर दिखाई दे रहा है । जहां एक और लोग स्वच्छता और अतिक्रमण मुक्ति अभियान का हिस्सा बन रहे हैं, वहीं दूसरी ओर युवाओं की ऊर्जा का भी सकारात्मक उपयोग किया जा रहा है। हमें पूर्ण उम्मीद है कि गांव के युवा, बुजुर्गों और महिलाओं ने एकजुट होकर पूरे गांव में सकारात्मक बदलाव लाने का जो निर्णय किया है वह जरूर सफल होगा और दूसरे गांवों को भी यह जरूर प्रेरणा देगा।